तरुण छत्तीसगढ़

e-Paper- tarunchhattisgarhkorba.com
कोरबा एवं रायपुर से एक साथ प्रकाशित डाक पंजीयन क्रमांक- जी2-112/सी.जी/बीएलपी/003/2024-2026

सुनालिया ज्वेलर्स
हीरा, स्वर्ण, हॉलमार्क ज्वेलरी, रजत, राशि नग के विक्रेता
मो. 94255-32524,94241-43922
पावर हाउस रोड, कोरबा

वर्ष 36 अंक 167 | कोरबा, शुक्रवार, दिनांक 21 मार्च 2025 डाक 22 मार्च 2025 | पृष्ठ : 8 मूल्य 2.00 रुपए

विविधा
ट्रम्प प्रशासन द्वारा टैरिफ सम्बंधी लिए जा रहे निर्णयों का भारत पर प्रभाव

देश-विदेश
राजौरी में एसओजी जवानों पर ग्रेनेड हमला, सेना को निशाना बनाने की साजिश पुलवामा में प्रेशर कुकर आईईडी बरामद

फीचर पेज
कन्याकुमारी जा रहे हैं तो इन जगहों को जरूर करें एक्सप्लोर यादगार होगा एक्सपीरियंस

राष्ट्रगान के दौरान हंसते नजर आए सीएम नीतीश

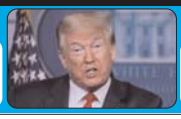

तेजस्वी यादव ने की केस दर्ज करने की मांग, डिप्टी सीएम को भी लपेटा

पटना, 21 मार्च [एजेंसी]।

बिहार विधानसभा में शुक्रवार को राष्ट्रगान के अपमान के मुद्दे पर विपक्ष ने सरकार के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया। विधानसभा परिसर के साथ ही सदन के अंदर भी इसे लेकर प्रदर्शन हुआ और इस दौरान विपक्ष ने सरकार विरोधी नारे लगाए। विपक्ष के सदस्यों की मांग थी कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राष्ट्रगान का अपमान किया है, उन्हें 140 करोड़ जनता से माफी मांगनी चाहिए। नेताओं ने भाजपा के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज करने की मांग की।

दरअसल, गुरुवार को पटना के एक कार्यक्रम में राष्ट्रगान के दौरान मुख्यमंत्री लोगों का अभिवादन करते नजर आए थे। इस मसले पर संपूर्ण विपक्ष एकजुट हो गया है। शुक्रवार को बिहार विधानसभा में सरकारी कामकाज प्रारंभ हो इसके पूर्व संपूर्ण विपक्ष में हाथों में राष्ट्रीय ध्वज लेकर विधानसभा पोर्टिको में जोरदार प्रदर्शन किया। विपक्ष ने मुख्यमंत्री में राष्ट्रगान का अपमान करने का आरोप लगाया। विपक्ष के सदस्यों के इसी प्रदर्शन के बीच नेता प्रतिपक्ष और पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने प्रेस से बात की और कहा कि मुख्यमंत्री ने राष्ट्रगान का अपमान किया है उन्हें देश की 140 करोड़ की जनता से माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है हमें उनके स्वास्थ्य की चिंता है, मगर राष्ट्रगान का अपमान बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है।आज देश की 140 करोड़ जनता का सिर शर्म से झुक गया है। उन्होंने कहा कि इस घटना के खिलाफ उन्होंने विधानसभा में कार्य स्थगन प्रस्ताव भी दिया है और मांग की है कि सभी कार्य रोक कर इस पर बहस होनी चाहिए।

नेता प्रतिपक्ष ने इस दौरान प्रधानमंत्री को भी घेरा और कहां की मुख्यमंत्री उनके लाडले हैं मगर राष्ट्रगान के अपमान के मुद्दे पर उन्होंने एक ट्वीट भी नहीं किया। तेजस्वी ने भाजपा को बड़का नौटंकी पार्टी बताते हुए कहा इनके दो-दो उप मुख्यमंत्री हैं, मगर वह भी घटना पर कुछ नहीं बोल रहे हैं।राष्ट्रगान के अपमान के पर तीन साल की सजा का प्रावधान है। उन्होंने मांग की की दोनों उपमुख्यमंत्री पर भी मुकदमा होना चाहिए और मुख्यमंत्री राष्ट्र से माफी मांगें। दूसरी ओर विधान परिषद पोर्टिको में भी विपक्ष के नेताओं ने राबड़ी देवी के नेतृत्व में इस मामले को लेकर प्रदर्शन किया। सदन में इस मसले पर जमकर हंगामा भी हुआ, जिसके बीच मंत्री विजय चौधरी ने कहा कि कार्यस्थगन का समय होता है। देश जानता है कि मुख्यमंत्री राष्ट्र और राष्ट्रगान का कितना सम्मान करते हैं।

ओडिशा के शराब कारोबारी बिक्रम साहू पर दूसरे दिन भी आयकर विभाग का छापा, 7 करोड़ रुपये नकद जब्त

भुवनेश्वर, 21 मार्च [एजेंसी]।

आयकर विभाग ने शुक्रवार को लगातार दूसरे दिन ओडिशा के अनुगुल में शराब कारोबारी बिक्रम किशोर साहू की संपत्तियों पर अपना अभियान तेज कर दिया। साहू से जुड़े 15 अलग-अलग परिसरों में कर चोरी गतिविधियों की जांच के प्रयास में व्यापक जांच की जा रही है। इस बीच, बिक्रम साहू को करदगड़िया इलाके में उनके आवास से हिरासत में लिया गया है। शुरुआती रिपोर्ट के अनुसार, अधिकारियों को साहू की एक संपत्ति से भारी मात्रा में नकदी, लगभग 7 करोड़ रुपये मिले हैं। रिपोर्ट्स बताती हैं कि अन्य स्थानों पर भी बड़ी रकम बरामद हुई है। बिक्रम साहू, अपने शराब उद्योग से परे व्यावसायिक हितों के लिए जाने जाते हैं।

उनके हालिया अधिग्रहणों में से एक पुरी में एक प्रमुख होटल भी शामिल है, जिसे सिर्फ छह महीने पहले उन्होंने 35 करोड़ रुपये में खरीदा गया था। वह शराब डिपो और पेट्रोल स्टेशन के संचालन के साथ-साथ अनुगुल में एक अन्य होटल के भी मालिक हैं। साहू के खिलाफ कर चोरी के आरोपों के बीच तालचेर, कामाख्यानगर, पारलाखेमुंडी, पुरी और भुवनेश्वर सहित कई स्थानों पर छापेमारी की गई। अभी तक, आयकर विभाग ने कार्यवाही पर आधिकारिक बयान जारी नहीं किया है।

सरकारी ठेकों में अल्पसंख्यक कोटा देने पर कर्नाटक विधानसभा में बवाल

बीजेपी विधायकों ने बिल की कॉपी फाड़कर स्पीकर पर फेंकी

कर्नाटक। कर्नाटक विधानसभा में विपक्ष के हंगामे के बीच अल्पसंख्यकों के लिए सरकारी ठेकों में 4 फीसदी का आरक्षण देने वाला बिल पास हो गया है। इसके साथ ही मंत्रियों और विधायकों के वेतन से जुड़ा बिल भी पारित हो गया है। सदन के अंदर भारी हंगामा होने के बाद विधानसभा की कार्यवाही को स्थगित कर दिया गया है। बताया गया है कि मुख्यमंत्री की सैलरी को 75,000 से बढ़कर 1.5 लाख रुपये करने का प्रस्ताव है। वहीं मंत्रियों की सैलरी 60,000 से बढ़कर 1.25 लाख रुपये कर दिया जाएगा। बताया जा रहा है कि विधायकों की सैलरी 40,000 से बढ़ाकर 80,000 रुपये करने का प्रस्ताव है। इसके साथ ही पूर्व विधायकों का मेडिकल भत्ता 5,000 से बढ़कर 20,000 रुपये किया जाएगा। क्षेत्रीय यात्रा भत्ता 60,000 से बढ़कर 80,000 कर दिया जाएगा। इसके लिए ट्रेन और हवाई टिकट का सालाना भत्ता 2.5 लाख से बढ़कर 3.5 लाख रुपये करने का प्रस्ताव है।

शंभू बॉर्डर खुला: कारोबारी गदगद, किसानों को हिरासत में लेने पर राजनीति गरमाई

चंडीगढ़। शंभू और खनौरी बॉर्डर से किसानों को हटाकर पुलिस ने 13 महीने बाद अमृतसर-अंबाला-दिल्ली नेशनल हाईवे को खुलवा तो दिया लेकिन इसके बाद पूरे पंजाब में किसानों का गुस्सा फूट पड़ा। पंजाब पुलिस ने किसान नेता सरवण सिंह पंधेर समेत 100 किसानों पर केस दर्ज कर उन्हें पटियाला जेल भेज दिया है। प्रदेश भर में लगभग एक हजार से ज्यादा किसान अभी भी पुलिस हिरासत में हैं। मोगा, बठिंडा, मुक्तसर, फरीदकोट और होशियारपुर में सरकार की कार्रवाई से नाराज किसान जत्थेबंदियों और पुलिस के बीच टकराव भी देखने को मिला। किसान संगठनों ने 26 मार्च को चंडीगढ़ कूच की घोषणा की है।

शंभू और खनौरी बॉर्डर से किसानों का धरना खत्म करने के बाद पंजाब सरकार ने भारतीय किसान यूनियन (उगराहां) और संयुक्त किसान मोर्चा (गैर राजनीतिक) के नेताओं को बैठक के लिए बुलाया है। यह बैठक चंडीगढ़ के सेक्टर-3 स्थित पंजाब भवन में होगी। बैठक का नेतृत्व पंजाब के कृषि मंत्री गुरमीत सिंह खुड्डियां करेंगे। अभी किसानों की तरफ से इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल को जालंधर के आर्मी एरिया में पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस में मेडिकल टीम की निगरानी में रखा गया है। इससे पहले उन्हें जालंधर के पीआईएमएस अस्पताल में डॉक्टरों की निगरानी में रखा गया था।

महंगा पड़ा किसान आंदोलन, 13 महीने में लगी 1.25 लाख करोड़ की चपत

इन 13 माह में पंजाब और हरियाणा ने सवा लाख करोड़ रुपये का नुकसान सीधे झेला है।अकेले हरियाणा के तीनों बॉर्डर(शंभू, खनौरी व कुंडली) से सटे इलाकों ने ही 1,600 करोड़ रुपये से ज्यादा का नुकसान उठाया है। पंजाब के कारोबार ने सबसे ज्यादा एक लाख करोड़ का नुकसान झेला है।

उत्तराखंड में अवैध मदरसों को लेकर सीएम धामी सख्त

अब तक 110 को किया गया सील

देहरादून, 21 मार्च [एजेंसी]।

उत्तराखंड में अवैध मदरसों के खिलाफ पुष्कर सिंह धामी सरकार का एक्शन लगातार जारी है। ऊधम सिंह नगर में 16 और हरिद्वार में दो अवैध मदरसों को सील कर दिया गया। अब तक राज्य में 110 मदरसों को सील किया जा चुका है। पिछले एक माह से उत्तराखंड में प्रशासन द्वारा अवैध मदरसों पर ताबड़तोड़ कार्रवाई की जा रही है।

ये मदरसे बिना सरकार की अनुमति के संचालित किए जा रहे थे। इस पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कड़ा रुख अपनाया हुआ है, जिसका व्यापक असर भी देखने को मिल रहा है। पूरे राज्य में अवैध मदरसों के खिलाफ व्यापक स्तर पर अभियान चलाया जा रहा है। प्रशासन ने इस

बात की भी जांच शुरू कर दी है कि इतने बड़े पैमाने पर संचालित हो रहे इन अवैध मदरसों के पीछे किसका हाथ है और यहां पर छात्रों को किस प्रकार की तालीम दी जा रही थी।

ईडी की छापेमारी, एक पदाधिकारी गिरफ्तार

कोयंबटूर। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने तमिलनाडु के कोयंबटूर जिले के मेट्टुपालयम में सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया (एसडीपीआई) के तीन पदाधिकारियों के घरों पर छापेमारी की। इस कार्रवाई में एक व्यक्ति को गैरकानूनी धन शोधन के आरोप में गिरफ्तार किया गया। छापेमारी गुरुवार सुबह 9 बजे शुरू हुई और रात 9 बजे तक चली। ईडी अधिकारियों ने सीआरपीएफ की सुरक्षा में यह ऑपरेशन चलाया। मेट्टुपालयम के अन्नाजीराव रोड पर रहने वाले एसडीपीआई के पदाधिकारियों राजिक, रीला और वाहिद रहमान के घरों पर यह कार्रवाई हुई।

वेतन में कटौती...कंपनी के कर्मियों से नाराजगी

बदला लेने के लिए चालक ने खुद बस में लगाई आग, चार की मौत

मुंबई, 21 मार्च [एजेंसी]।

महाराष्ट्र के पुणे के हिंजवाड़ी इलाके में गुरुवार को मिनीबस में लगी आग में चार लोगों की मौत हो गई थी और छह अन्य घायल हो गए थे। पुलिस के मुताबिक यह कोई दुर्घटना नहीं बल्कि बस चालक जनार्दन हंबार्डिकर की सुनियोजित साजिश थी। पुलिस जांच में यह चौंकाने वाला खुलासा हुआ है।

वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक कन्हैया थोराट ने बताया कि बस चालक ने जानबूझकर वाहन में आग लगाई और इसे दुर्घटना का रूप देने की कोशिश की। पुलिस जांच में सामने आया है कि चालक अपने सहकर्मियों से नाराज था और बदला लेने के लिए इस घटना को अंजाम दिया।

टक्कर के बाद कई गाड़ियों में लगी भीषण आग, चालक की जलकर मौत

भीलवाड़ा। राजस्थान के भीलवाड़ा में शुक्रवार सुबह बड़ा हादसा हो गया। जिले के मांडलगढ़ के लाडपुरा चौराहे पर तेज गति से आ रहे सीमेंट के टैंकर ने आगे चल रहे टैंकरों को टक्कर मार दी। टक्कर के कारण तीन गाड़ियों में भीषण आग लग गई, जिससे मौके पर अफरा-तफरी मच गई। टैंकर चालक आग की चपेट में आ गया और जिंदा जलकर उसकी दर्दनाक मौत हो गई। हादसे के बाद हाइवे पर लंबा जाम लग गया, जिससे ट्रैफिक जाम हो गया। हादसे की सूचना मिलने ही मांडलगढ़ थाना पुलिस और दमकलकर्मी मौके पर पहुंचे। दमकलकर्मियों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया, लेकिन तब तक टैंकर जलकर खाक हो चुके थे। पुलिस ने मृतक चालक का शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और हादसे के कारणों की जांच शुरू की।

शुरुआती जांच में सामने आया है कि तेज रफ्तार और ओवरटेकिंग के प्रयास में टैंकर आपस में टकरा गए, जिससे यह भीषण हादसा हुआ। यह हादसा सुबह करीब 6.15 बजे हुआ। राजस्थान में बीकानेर के देशनोक इलाके में स्थित ओवर ब्रिज पर बुधवार आधी रात को एक ट्रोला ओवरटेक करने के प्रयास के दौरान पास से गुजर रही कार पर पलट गया था। इस हादसे में कार में सवार सभी छह लोगों की मौत हो गई थी। सभी मृतक शादी समारोह में शामिल होकर वापस अपने घर लौट रहे थे। हादसे के बाद हाईवे पर लंबा जाम लग गया था।

बिहार पुलिस की बड़ी सफलता, टॉप 10 अपराधियों में शामिल सोनू एनकाउंटर में गिरफ्तार

पटना, 21 मार्च [एजेंसी]।

पटना जिले के टॉप 10 अपराधियों की सूची में शामिल अपराधी सोनू कुमार के मनेर थानाक्षेत्र में होने की सूचना प्राप्त हुई थी, जिसके बाद पुलिस ने छापामारी की। मनेर में अपराधी एवं पुलिस के बीच हुई मुठभेड़ में एक अपराधी को गोली लगी। उसे घायल अवस्था में ईएसआईसी अस्पताल से पटना पीएमसीएच रेफर किया गया है। पुलिस अधीक्षक (पश्चिम) शरत आर एस ने बताया कि दानापुर एएसपी के नेतृत्व में अपराधियों को पकड़ने में टीम लगी थी। अपराधी सोनू कुमार के मनेर थानाक्षेत्र में होने की सूचना प्राप्त हुई थी। इसके बाद पटना पुलिस और STF की संयुक्त टीम द्वारा छापेमारी की गई।

पुलिस को देख अपराधियों द्वारा पुलिस पर फायरिंग की गई, जिसपर की गई जवाबी कार्रवाई में वांछित सोनू कुमार के पैर में गोली लगी है, उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, अपराधी 3-4 की संख्या में थे। मुठभेड़ के दौरान सोनू कुमार को गोली लगने के बाद गिरफ्तार कर लिया गया। वहीं, अन्य अपराधी भागने में कामयाब रहे।21 दिसंबर 2024 को दानापुर में श्राद्ध कर्म से लौट रहे दानापुर छावनी परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष रणजीत कुमार उर्फ दही गोप की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस हत्या के बाद दानापुर में काफी बवाल हुआ था। पुलिस ने कई आरोपियों को गिरफ्तार किया, लेकिन मुख्य शूटर सोनू अभी तक फरार चल रहा था।

अब पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल करते हुए शूटर सोनू को गिरफ्तार कर लिया है। 8 दिसंबर को मनेर के महिनवा निवासी सुरेश साहू के पुत्र कुंदन आर्य की मनेर श्रीनगर समीप हत्या और बाइक , लैपटॉप लूट में भी सोनू शामिल था। सोनू मृतक कुंदन आर्य, उपेंद्र कुशवाहा के रालोसपा के आईटी सेल के कर्मी था।

आरएसएस की तीन दिवसीय अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक शुरू

संघ प्रमुख ने किया उदघाटन

बंगलूरू, 21 मार्च [एजेंसी]।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की तीन दिवसीय अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक बंगलूरू में आज से शुरू हो गई है। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने इस बैठक का उदघाटन किया। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा, संघ की निर्णय लेने की सर्वोच्च संस्था है। संघ के मुख्य प्रवक्ता सुनील आंबेकर ने बताया कि बैठक के दौरान बांग्लादेश और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी समारोह को लेकर प्रस्ताव पारित किया जाएगा। आंबेकर ने बताया कि तीन दिवसीय बैठक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े 32 संगठनों के महासचिव भी शामिल होंगे, जिनमें भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और महासचिव बीएल संतोष भी शामिल होंगे। संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक चार साल बाद बंगलूरू में हो रही है।

लंदन में पावर सबस्टेशन में लगी आग 24 घंटे के लिए हीथ्रो एयरपोर्ट बंद

नई दिल्ली 21 मार्च। लंदन के हीथ्रो एयरपोर्ट को एक बड़े बिजली संकट के कारण आज पूरे दिन के लिए बंद कर दिया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है क्योंकि पास के एक इलेक्ट्रिकल सबस्टेशन में आग लगने के कारण बिजली आपूर्ति बाधित हो गई है। जिस वजह से एयरपोर्ट पर आने-जाने वाली सभी फ्लाइट्स रद कर दी गई हैं। एयरपोर्ट ने ऐलान करते हुए कहा, एयरपोर्ट को बिजली आपूर्ति करने वाले एक इलेक्ट्रिकल सबस्टेशन में आग लगने के कारण, हीथ्रो में बिजली की भारी कमी हो रही है। लंदन फायर ब्रिगेड भी हादसे के बाद तुरंत एक्शन में आ गया है। फायर ब्रिगेड ने कहा, उसने 10 दमकल गाड़ियां और करीब 70 अग्निशमन कर्मी तैनात किए हैं और 200 मीटर के दायरे में घेराबंदी। स्थानीय निवासियों - सबस्टेशन लंदन के हिलिंगडन बरो के हेस में है को धुएं के कारण अंदर रहने और दरवाजे और खिड़कियां बंद रखने के लिए कहा गया है। शुक्रवार सुबह एक एक्स पोस्ट में एयरपोर्ट ने यात्रियों को यात्रा न करने और अधिक जानकारी के लिए अपनी संबंधित एयरलाइंस से संपर्क करने की सलाह दी।

स्किन केयर व कास्मेटोलाजी क्लिनिक
चर्म , गुप्त, कुष्ठ रोग विशेषज्ञ एवं सैक्स सलाहकार
डॉ.आर.के.अग्रवाल M.B.B.S.D.V.D.FDS (Lond.)F.i.a.m.s.(Ind.)
-: परामर्श का समय :- सुबह 10.30 से 1.30 (शाम को बंद)
डॉ.शशि अग्रवाल M.B.B.S.D.V.D.(U.K) Mob.9826389894
सुविधायें:- गंजापन, मस्से हटाना, दाद खाज खुजली, एक्जीमा, एलर्जी, सड़े नाखून, कुष्ठ रोग, काले दाग, मुंहासे, बाल झड़ना, सेक्स की कमी, शीघ्र पतन, धात, मानसिक रोगों का मशीनों व अत्याधुनिक दवाओं द्वारा शीघ्र ईलाज, फोटोथेरेपी, इलेक्ट्रीशिकेशन, क्रायोसर्जरी, सायकोथेरेपी का ईलाज।
मो. 9203907928,9826389894 (क्लीनिक)
विशेष : बुधवार को 20 मरीजों का फीस माफ...
पता : एचआईजी -4 नेहरू नगर , रिकाण्डो रोड घोड़ा चौक , बुधवारी बाजार के पास, कोरबा

कलेक्टर ने किया सरभोंका के बालक आश्रम का निरीक्षण

आश्रम में बच्चों से गतिविधियों की ली जानकारी सफाई व्यवस्था का किया अवलोकन

कम उपस्थिति पर बच्चों की उपस्थिति बढाने के दिए निर्देश

कोरबा । कलेक्टर श्री अजीत वसंत ने पोड़ी-उपरोड़ा ब्लॉक के ग्राम सरभोंका में स्थित बालक प्री- मैट्रिक आश्रम का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने आश्रम की सुविधाओं, स्वच्छता, और विद्यार्थियों की समस्याओं की जानकारी ली। उन्होंने आश्रम अधीक्षक को निर्देशित किया कि आश्रम में अध्ययनरत छात्रों को गुणवत्ता वाली शिक्षा और आवश्यक सुविधाएं निर्धारित मीनू अनुसार सुनिश्चित की जाएं। इसके अलावा, कलेक्टर ने छात्रों की सुरक्षा और कल्याण के लिए आवश्यक कदम उठाने की बात कही। कलेक्टर श्री वसंत ने यहाँ सिलेंडर के माध्यम से पकने वाले भोजन व्यवस्था की जानकारी ली। उन्होंने विद्यार्थियों को शिक्षा के अलावा खेलकूद गतिविधियों को भी बढ़ावा देने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री वसंत ने आश्रम में दर्ज बच्चों में से 15 के अनुपस्थित रहने पर अधीक्षक को निर्देशित किया कि आश्रम में दर्ज बच्चों की शतप्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित किया जाए। इस दौरान एसडीएम श्री तुलाराम भारद्वाज भी उपस्थित थे।

राशन दुकानो में गड़बड़ी की शिकायत पर कार्यवाही जारी

कोरबा । एक दैनिक समाचार पत्र में दिनांक 19.03.2025 को प्रकाशित खबर अंगूठा लगवा कर दो माह से नहीं दिया जा रहा राशन, गामीण परेशान की जांच खाद्य विभाग के सहायक खाद्य अधिकारी पाली द्वारा दिनांक 19.03.2025 को ग्राम पंचायत बनबांध के सरपंच सतकुंवर मरकाम, उपसरपंच अजय कुमार, पंच तथा ग्रामवासियों की उपस्थिति में की गई। सहायक खाद्य अधिकारी से प्राप्त प्रतिवेदन अनुसार विकासखंड पाली अंतर्गत ग्राम पंचायत बनबांध के शासकीय उचित मूल्य दुकान आईडी 552004081 का संचालन सरस्वती महिला स्व सहायता समूह बनबांध के द्वारा किया जा रहा है। जांच समय मौके पर उपस्थित 59 राशनकार्ड हितग्राहियों द्वारा अपने स्वैच्छिक कथन बताया कि उचित मूल्य दुकान संचालक संस्था द्वारा माह फरवरी 2025 व मार्च 2025 में अंगूठा लगवा लिया गया है परन्तु खाद्यान्न सामग्री नहीं दिया गया है । जांच समय उचित मूल्य दुकान बनबांध आईडी क्रमांक 552004081 का भौतिक जांच में चावल 32.84 क्विंटल सत्यापन सहायक खाद्य अधिकारी पाली द्वारा किए जाने पर दुकान में कमी पाई गई तथा शक्कर - 0.88 क्विंटल व चना- 1.80 क्विंटल अधिक पाई गई। जिससे यह स्पष्ट होता है कि ग्राम पंचायत बनबांध के उचित मूल्य दुकान संचालक संस्था सरस्वती महिला स्व सहायता समूह बनबांध के सदस्यों द्वारा खाद्यान्न वितरण में अनियमितता किया गया है। उचित मूल्य दुकान संचालक संस्था द्वारा फरवरी 2025 / मार्च 2025 में ई-पॉस मशीन में हितग्राहियों से अंगूठा लगवा कर खाद्यान्न वितरण नहीं किया गया है। उचित मूल्य दुकान संचालक संस्था का उपरोक्त कृत्य छत्तीसगढ़ सार्वजनिक वितरण प्रणाली (नियंत्रण) आदेश 2016 के प्रावधानों का स्पष्ट उल्लंघन पाया गया तथा आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 की धारा 3/7 के तहत शास्ति योग्य पाए जाने के कारण प्रकरण निर्मित करते हुए जांच प्रतिवेदन सहपत्रों सहित आवश्यक कार्यवाही हेतु अनुविभागीय अधिकारी राजस्व पाली के समक्ष नियमानुसार कार्यवाही हेतु प्रस्तुत की गई है। प्रकरण न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी राजस्व पाली में प्रचलित है

शॉट -सर्किट से दुकान में लगी भीषण आग

कोरबा । कोरबा जिलान्तर्गत नगर पंचायत पाली के ह्रदय स्थल में स्थित गोलू इलेक्ट्रॉनिक दुकान में आग लग गई। शार्ट-सर्किट से आग लग जाने का अंदेशा जताया जा रहा हैं, जिस पर लगभग तीन घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद काबू पाया गया। आग से हुए नुकसान का आंकलन किया जा रहा है। जानकारी के अनुसार नगर पंचायत पाली के वार्ड क्रमांक 5 बाजार पारा मे गोलू इलेक्ट्रॉनिक्स एवं इलेक्ट्रिकल्स नामक संस्थान संचालित हैं, जिसमे कूलर, फ्रिज, अलमारी, एलईडी, एसी आदि सहित अन्य इलेक्ट्रॉनिक बिजली उपकरण के सामान का विक्रय किया जाता हैं। उक्त संस्थान में 20 मार्च को लगभग शाम 6 बजे एकाएक आग लग गई। आग ने देखते ही देखते विकराल रूप धारण कर कई सामानों को अपनी चपेट में ले लिया। इस दौरान आग बुझाने के प्रयासों में बड़ी संख्या में उपस्थित नगरजनों ने सहयोग किया। घटना स्थल पर बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ इकट्ठा रही। व्यवस्था बनाने के लिए पाली थाना स्टाफ भी यहां पूरे समय उपस्थित रहा।

एसईसीएल मुख्यालय में टीबी एवं एचआईवी पर जागरूकता कार्यक्रम हुआ आयोजित

कोरबा । स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के 100 दिवसीय क्षय रोग (टीबी) उन्मूलन अभियान 7 दिसंबर 2024 से 17 मार्च 2025 के तहत, साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एसईसीएल) द्वारा टीबी और एचआईवी रोकथाम एवं जागरूकता पर 1 दिवसीय एडवांस्ड ओरिएंटेशन कार्यक्रम का सफल आयोजन एमडीओई, एसईसीएल, बिलासपुर में किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विरेंची दास, निदेशक (कार्मिक), एसईसीएल ने टीबी और एचआईवी के खिलाफ सामूहिक प्रयासों के महत्व पर प्रकाश डाला और स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए। एक्ट कार्यक्रम में डॉ. गायत्री बांधी, जिला टीबी अधिकारी, बिलासपुर द्वारा टीबी प्रबंधन कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया गया वहीं डॉ. ऋतु कश्यप द्वारा टीबी के इलाज दिशा-निर्देश, प्रोटोकॉल एवं सह-रुग्णता की जानकारी प्रतिभागियों को दी गयी। इसके साथ ही टीबी एवं एचआईवी के सामाजिक प्रभाव से जुड़े पहलुओं पर आशीष सिंह जिला कार्यक्रम समन्वयक द्वारा जानकारी दी गयी। इस कार्यशाला में टीबी एवं एचआईवी प्रबंधन में सर्वोत्तम प्रथाओं (बेस्ट प्रैक्टिस) को साझा करने, जागरूकता बढ़ाने, और रोकथाम के उपायों पर चर्चा करने पर विशेष ध्यान दिया गया। इस अवसर पर स्वास्थ्य विशेषज्ञों, नीति-निर्माताओं और अन्य हितधारकों ने अपने विचार और अनुभव साझा किए।

क्रिकेट प्रतियोगिता : प्रेस क्लब का आयोजन प्रशंसनीय : सिदार

रेलवे इलेवन ने जीता अपना मैच 50 रन से

कोरबा । कोरबा प्रेस क्लब कोरबा द्वारा आयोजित स्व. केशवलाल मेहता स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता के दूसरे दिन सीएसपीडीसीएल कोरबा बनाम रेलवे कोरबा के बीच मैच खेला गया। रेलवे की टीम ने इस मैच में सीएसपीडीसीएल को 50 रन से करारी शिकस्त दी।

बतौर मुख्य अतिथि विद्युत वितरण विभाग के अधीक्षण अभियंता पी.एल. सिदार रहे। विशिष्ट अतिथियों में वितरण विभाग के डीई रोशन लाल वर्मा, वरिष्ठ पत्रकार जयप्रकाश टमकोरिया, दिलीप अग्रवाल, राजश्री गुप्ते, श्रवण साहू, हरिराम चौरसिया व कैलाश राजपूत उपस्थित रहे। बतौर मुख्य अतिथि संबोधन में श्री सिदार ने कहा कि दो दशक से प्रेस क्लब द्वारा स्व. केशव लाल मेहता की स्मृति में क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता प्रेस क्लब परिवार का प्रशंसनीय प्रयास है। उन्होंने कहा कि प्रेस के साथ ही पत्रकारिता के अपने मूल दायित्व के साथ सामाजिक सरोकारों में भी भागीदारी निभा रहे हैं।

निश्चित ही प्रेस क्लब के पदाधिकारी व सदस्य आयोजन के लिए बधाई के पात्र हैं। मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथियों ने दोनों टीमों के खिलाड़ियों से उनका परिचय प्राप्त किया। अतिथियों ने खिलाड़ियों की हौसला अफजाई की। दूसरे दिन खेले गए रेलवे कोरबा की टीम ने पहले बल्लेबाजी की। टीम ने निर्धारित 10 ओव्हर में 4 विकेट के नुकसान पर 161 रन बनाए। टीम के ओपनर अशोक पटेल और विजय ने शानदार बल्लेबाजी की। दोनों ने अर्ध शतकीय पारी खेली। अशोक ने 25 गेंद में 50 व विजय ने 20 गेंदों में 53 रन बनाए। वन डाउन आए धीरज ने 8 गेंदों में 32 रनों की ताबड़तोड़ पारी खेली। लक्ष्य का पीछा करने उतरी सीएसपीडीसीएल की टीम की शुरूआत ठीक नहीं रही। निर्धारित अंतराल में विकेट का पतन होता रहा। 10 ओव्हर में सीएसपीडीएल की टीम 7 विकेट के नुकसान पर 111 रन ही बना पायी। इस तरह रेलवे की टीम ने 50 रन से जीत अर्जित की। प्लेयर ऑफ द मैच रेलवे के अंजनी कुमार रहे।

रंगपंचमी पर बांधाखार में मना होली मिलन

कोरबा। बांधाखार में रंग पंचमी के अवसर पर भव्य होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गणमान्य व्यक्तियों और स्थानीय लोगों ने भाग लिया। इस आयोजन में भाजपाजिला अध्यक्ष मनोज शर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष पवन सिंह, जिला पंचायत उपाध्यक्ष निकिता मुकेश जायसवाल, नगर पालिका अध्यक्ष दीपिका राजेंद्र राजपूत, पूर्णिमा शोभा जगत, जनपद सदस्य मनोज कुमार और रूपेश कुमार सहित भाजपा के कई पदाधिकारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान सभी ने एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दीं। रंगों के इस उल्लासमय माहौल में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी हुईं, जिसमें स्थानीय कलाकारों ने शानदार नृत्य और संगीत प्रस्तुत कर समा बांध दिया। भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज शर्मा ने इस अवसर पर कहा कि होली प्रेम, भाईचारे और सद्भाव का त्योहार है। यह समाज में आपसी सौहार्द और एकता को मजबूत करता है। इसी तरह, जिला पंचायत अध्यक्ष पवन सिंह ने भी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सभी को होली की शुभकामनाएं दीं और कहा कि यह आयोजन समाज को जोड़ने का एक बेहतरीय जरिया है। नगर पालिका अध्यक्ष दीपिका ने कहा कि रंग पंचमी पर इस तरह के कार्यक्रमों से सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिलता है। सभी जनप्रतिनिधियों और उपस्थित लोगों ने इस आयोजन को सफल बनाने में सहयोग दिया। कार्यक्रम के अंत में सभी ने पारंपरिक व्यंजनों का आनंद लिया और एक-दूसरे को शुभकामनाएं देते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

श्री हित सहचरी सेवा समिति ने रंग-पंचमी पर होली मिलन समारोह का किया भव्य आयोजन

रंगों और उल्लास से सराबोर हुआ कार्यक्रम

कोरबा । रवि शंकर शुक्ला नगर में श्री हित सहचरी सेवा समिति द्वारा रंग-पंचमी के शुभ अवसर पर भव्य होली मिलन समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में महिलाओं ने पूरे जोश और उमंग के साथ भाग लिया, जिससे माहौल रंगीन और संगीतमय हो गया।

इस अवसर पर महिलाओं ने पारंपरिक और आधुनिक गीतों पर जमकर नृत्य और संगीत का आनंद लिया। ढोलक की थाप और गानों की धुन पर सभी ने उल्लास के साथ झूमते हुए एक-दूसरे को गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दीं। इसके साथ ही कार्यक्रम में पारंपरिक व्यंजनों का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें गुजिया, ठंडाई, दही-बड़े और अन्य स्वादिष्ट पकवानों का हर किसी ने आनंद लिया। यह आयोजन सिर्फ रंगों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सौहार्द, प्रेम और मित्रता का भी प्रतीक बना। महिलाओं ने एक-दूसरे के साथ हंसी-ठिठोली की, समूह में विभिन्न खेल खेले और मनोरंजन कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। समारोह के सफल आयोजन के लिए श्री हित सहचरी सेवा समिति की महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समिति की सदस्याओं ने एकजुट होकर इस आयोजन को यादगार बनाया। इसमें प्रमुख रूप से नीरू राय, आशा पांडेय, मीना ठाकुर, अंजना सिंह, निन्या विनायक, कविता बरई, श्वेता दुबे, मेघा उपाध्याय, प्रियंका सिन्हा, भावना स्वर्णकार, सलिका गोयल, मीनू शर्मा, प्रियंका वर्मा, मीरा पांडे, राजश्री पांडे, श्वेता राय, श्वेता चेट्टी, नेहा सिन्हा, किरण सिंह, अनीता राव, अंशु सिंह, अर्चना सिंह, आशा देवांगन, मीरा, विदिशा बरनवाल, दिव्यांशी सिंह, दमयंती सिंह, गीता, गुड़िया सिंह, कुसुम, प्रभा नायक, रजनी श्रीवास्तव, आभा प्रसाद, राम उपाध्याय, रीना जायसवाल, रीना, भावना, श्रद्धा तिवारी, श्रद्धा कुर्मी, सरिता राय, सपना मिश्रा, सुचित्रा तिवारी, तान्या सिंह, तुलसी मौर्य, विनीता सिंह, योगिता, शोभना अंसारी, कविता शाह, शशिकला बघेल, मंजू गुप्ता, रूपा, राजेश्वरी, मीनाक्षी, आकांक्षा, किरण सिंह, विनीता सिंह, जागृति और सोनू आदि सम्मिलित हुए। समारोह की समाप्ति पर सभी ने भविष्य में भी इसी तरह के आयोजन करते रहने की कामना की और समिति की एकता व संगठन की सराहना की। इस होली मिलन ने सभी के दिलों में एक खूबसूरत याद छोड़ दी, जिसे हर कोई आने वाले वर्षों तक संजो कर रखेगा।

संस्कार भारती का होली मिलन कार्यक्रम संपन्न

कोरबा। कटघोरा प्रतिवर्ष इस वर्ष भी संस्कार भारती इकाई द्वारा होली मिलन कार्यक्रम राधा सागर हनुमान मंदिर में साम 6: 00 बजे संपन्न किया गया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में महामंडलेश्वर हरि हरा नंद महराज जी की उपस्थिति में संपन्न हुआ। महराज जी द्वारा माता की प्रतिमा पर फूल माला अर्पित कर कर पूजा अर्चना किया गया।उसके बाद इकाई के प्रमुख सदस्य मांसर गुरुजी,शिवशंकर जायसवाल लक्ष्मी गर्ग द्वारा फूल माला से स्वागत किया गया।चुकी होली मिलन समारोह कार्यक्रम में होली फाग गीत संतोष साहू, सी आर सिंह,अशोक राठौर, पवन दास, उपाध्याय महराज द्वारा प्रस्तुत किया गया ।सदस्यों ने एक दूसरे को रंग भी लगाए। कार्यक्रम में लक्ष्मी गर्ग ,विनय सिंह ,भारत भूषण , जे. एस. मानसर गुरुजी ,शिवशंकर जायसवाल ,संतोष साह, देव वैष्णव ,आशीष शर्मा ,संजय दुबे, राज यादव कन्हैया लाल ,शिव साहू ,प्रतिमा सारथी , अनीता चौबे , हेमलता ,दविंदर कौर, कंचन अलवानी, पुष्पा यादव ,पंकज उमेश्वरी राज , देवव्रत ,अशोक कुमार साहू पद्म प्रकाश साहू,अर्चना जाधव,श्रीकांत साहू विष्णु शर्मा,शिव दुबे, अशोक राठौर ,देवेंद्र जी, विनोद जायसवाल,गंगा कौशिक, रामकुमार साहू विनोद , पवन दास महंत एवं काफी संख्या में लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विनय सिंह एवं आभार व्यक्त लक्ष्मी गर्ग ने किया।

बनेगा किसानों का कार्ड

कोरबा। कार्यालय तहसीलदार एवं कार्यपालिक दण्डाधिकारी, भैंसमा से इस संबंध में आदेश जारी किए गए हैं। इसके अनुसार यह बताया गया है कि भैंसमा तहसील अंतर्गत फार्मर रजिस्ट्री के तहत विभिन्न गांवों में किसानों के पंजीयन के लिए आयोजित शिविर आयोजित किए जाएंगे। शिविर के सफलता पूर्वक आयोजन के लिए विभिन्न अधिकारी/कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। इस दौरान शिविर में राजस्व निरीक्षक, हल्का पटवारी, संचालक, ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, कोटवार उपस्थिति दर्ज करते हुए किसानों को मदद प्रदान करेंगे। इसी कड़ी में शुक्रवार 21 मार्च को बगवुडा, 23 मार्च को कुकरीचोली और उसके बाद मसान समेत सतत विभिन्न स्थानों पर फॉर्मर रजिस्ट्री के लिए शिविर आयोजित होंगे। तिलकेजा, बगवुडा, कुकरीचोली और मसान में ड्यूटी पर संलग्न किए गए हल्का पटवारी अक्टूबर सिंह सेवाएं प्रदान करेंगे।

ग्रामीणों की अजीविका को बढ़ावा देने वेदांता एल्युमीनियम व नाबार्ड ने मिलाया हाथ

कोरबा। भारत की सबसे बड़ी एल्युमीनियम उत्पादक कंपनी, वेदांता एल्युमीनियम ने ओडिशा के कालाहांडी जिले में कार्यबल कौशल, जल संसाधन प्रबंधन और कृषि विविधीकरण हेतु 1 करोड़ रुपए की ग्रामीण विकास पहल को लागू करने के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के साथ सहभागिता की है। इस संबंध में एक स्वीकृति पत्र के आदान-प्रदान के माध्यम से इस सहयोग को औपचारिक रूप दिया गया है। ओडिशा के संसाधन संपन्न लेकिन आर्थिक रूप से वंचित इलाकों में कुशल कार्यबल के निर्माण और कृषि लचीलेपन को मजबूत करने की दिशा में यह एक अहम् निवेश है।

इस भागीदारी के तहत, दोनों संगठन रोजगार के अवसरों को बढ़ाने और दीर्घकालिक कृषि स्थिरता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कई कदम उठाएंगे। इस पहल के अंतर्गत लांजीगढ़ में वेदांता के कौशल प्रशिक्षण केंद्र में 'फूड एंड बेवरेज स्टीवर्ड कोर्स' के तहत 60 ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण मुहैया कराया जाएगा, ताकि उन्हें उद्योग-संबंधित कौशल से लैस किया जा सके। यह कदम इलाके में बढ़ते रोजगार के हालात के मुताबिक होगा। इस प्रोजेक्ट के पहले चरण में 210 युवाओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है। इसके साथ ही कृषि अवसंरचना को मजबूत करने की दिशा में प्रयास किए जाएंगे, जिसमें सामुदायिक तालाबों, खेत पोखरों, चैक डैम सहित 275 जल संरचनाओं का निर्माण शामिल है, ताकि किसानों के लिए जल सुरक्षा बढ़ाई जा सके और खेती की 2380 एकड़ भूमि पर हल्दी, अदरक और गेंदा जैसी उच्च मूल्य वाली फसलें लगाई जा सकें, जिससे स्थानीय सूक्ष्म उद्यमों के विकास को बढ़ावा मिले।वेदांता लिमिटेड के एल्युमिना बिजनेस के सीईओ प्रणव कुमार भट्टाचार्य और नाबार्ड क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर के मुख्य महाप्रबंधक डॉ. सुधांशु के. के. मिश्रा के बीच समझौते को औपचारिक रूप दिया गया, जिसमें सतत ग्रामीण विकास के लिए साझा प्रतिबद्धता को रेखांकित किया गया। ग्रामीण आत्मनिर्भरता और आर्थिक विविधीकरण के भारत के राष्ट्रीय उद्देश्यों के साथ तालमेल बिठाते हुए, यह सहयोग क्षेत्रीय आर्थिक परिवर्तन के लिए औद्योगिक विशेषज्ञता का लाभ उठाने के लिए वेदांता एल्युमीनियम की प्रतिबद्धता को मजबूत करता है।

इस अवसर वेदांता एल्युमिनियम के मुख्य प्रचालन अधिकारी सुनील गुप्ता ने इस पहल के व्यापक प्रभाव पर बल दिया और कहा, ''वेदांता एल्युमीनियम में, हम मानते हैं कि सतत विकास समुदायों को सशक्त बनाने से शुरू होता है। नाबार्ड के साथ हमारी साझेदारी युवाओं को उद्योग हेतु तैयार कौशल से लैस करके और नवीन कृषि पद्धतियों को पेश करके एक आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में एक कदम है।''

सर्व समाज ने सभापति नूतन को दिया समर्थन

कोरबा। पंचवटी विश्राम गृह कोरबा में 19/3/2025 को संध्या विभिन्न सामाजिक संगठन प्रमुखो और पदाधिकारियों की विशाल बैठक आयोजित किया गया। सर्व छत्तीसगढ़िया समाज के बैनर तले आयोजित बैठक में विशेष रूप से उपस्थित नगर पालिक निगम कोरबा के सभापति नूतन सिंह को सभी समाज के प्रमुखों ने तिलक लगाकर सम्मानित किया।

सर्व आदिवासी समाज, सतनामी समाज, ब्राह्मण समाज, यादव समाज, श्रीवास समाज, कन्नौजिया राठौर समाज, महंत समाज, देवांगन समाज, पटेल समाज, सूर्यवंशी समाज, चन्दनाहू समाज, साहू समाज, मरार माली समाज, बरेठ समाज सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों ने नूतन सिंह को सभापति निर्वाचित होने पर बधाई दिया तथा उनके साथ खड़े होने का संकल्प लिया।

साहू समाज के पूर्व अध्यक्ष गिरधारी लाल साहू, युवा सतनामी कल्याण समिति के प्रदेश अध्यक्ष मनीराम जांगड़े, श्रीवास समाज के अध्यक्ष मोहन लाल श्रीवास ने अपने उद्बोधन में कहा कि नूतन सिंह ने सभापति के प्रतिष्ठापूर्ण चुनाव में विजयश्री हासिल कर छत्तीसगढ़िया सर्व समाज के सम्मान को बढ़ाया है, हम सभी नूतन सिंह के साथ है। देवांगन समाज के अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण देवांगन, छत्तीसगढ़ क्रांति सेना के अध्यक्ष अतुल दास, सर्व आदिवासी समाज के उपाध्यक्ष निर्मल सिंह राज, कन्नौजिया राठौर समाज के अध्यक्ष नंद किशोर साव ने कहा कि नगर पालिक निगम में वास्तविक रूप से 15 साल बाद पार्षदो ने नूतन सिंह को जीताकर छत्तीसगढ़िया नेतृत्व को संबल प्रदान किया है। छत्तीसगढ़िया सर्व समाज की बैठक में सैकड़ों की संख्या में विभिन्न समाज के पदाधिकारी उपस्थित रहे। सभी समाज के पदाधिकारियों ने एक स्वर में सभापति नूतन सिंह के साथ खड़े रहने का संकल्प लिया।

विशाल बैठक को संबोधित करते हुए सभापति नूतन सिंह ने कहा कि वे आपार समर्थन और सहयोग के लिए छत्तीसगढ़िया सर्व समाज का ह्रदय से आभारी हैं। छत्तीसगढ़ के लोक पर्व, भाषा और त्योहार को आगे बढ़ाने के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे।

सभी समाज प्रमुखो ने एकमत से प्रस्ताव पारित किया कि छत्तीसगढ़िया सर्व समाज संगठित होकर छत्तीसगढ़ की संस्कृति को बचाने एकजुट रहेगा। छत्तीसगढ़िया समाज के लोगों के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक मजबूती के लिए एकजुट होकर सहयोग करेंगे। छत्तीसगढ़िया सर्व समाज ने उन? सभी पार्षदों को विशेष धन्यवाद और आभार व्यक्त किया जिन्होंने अंतरात्मा की आवाज सुनकर नूतन सिंह को सभापति निर्वाचित किया। सर्व समाज की विशाल बैठक में श्रीवास समाज के जिला अध्यक्ष मोहनलाल श्रीवास कोषाध्यक्ष कृष्ण कुमार श्रीवास, साहू समाज के पूर्व अध्यक्ष गिरधारी लाल साहू, प्रदेश संगठन सचिव पालूराम साहू, इकाई अध्यक्ष गणेश राम साहू, दाताराम साहू, महन समाज के जिला अध्यक्ष संतोष दास संरक्षक दिलहरण दास, ब्लॉक अध्यक्ष पूरण दास महंत, चंद्रा समाज के सचिव नोहर चंद्रा केंद्रीय संयुक्त सचिव मनमोहन चंद्रा, मरार पटेल समाज के उपाध्यक्ष राकेश पटेल, कोरबा सर्कल अध्यक्ष राजाराम पटेल, केसरिया मरार समाज के सचिव भैयराम पटेल, मरार माली समाज के जिला अध्यक्ष संतोष मरार, जिला सचिव सावन मरार, सूर्यवंशी समाज के अध्यक्ष लाभो राम सूर्यवंशी, महासचिव राम कुमार सोनवानी, कनौजिया राठौर समाज के जिला अध्यक्ष नंदकिशोर साहू, पूर्व अध्यक्ष भैया राम राठौर, झेरिया बरेठ समाज के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष गिरधारी लाल बरेठ, प्रजापति कुम्हार समाज के जिला अध्यक्ष गजाधर प्रजापति, देवांगन समाज के जिला अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण देवांगन सचिव भोज राम देवांगन, सर्व आदिवासी समाज के जिला उपाध्यक्ष निर्मल सिंह राज, आदिवासी शक्तिपीठ के संरक्षक आर एस मार्को, ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष बृजेश कुमार शुक्ला, सुशील पांडे, केवट समाज के जिला कोषाध्यक्ष संतोष कुमार केवट, मूल निवासी मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष गोपाल ऋषिकर भारती, छत्तीसगढ़िया क्रांति सेना के अध्यक्ष अतुल दास सहित विभिन्न समाज के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

जायसवाल समाज का होली मिलन समारोह संपन्न

कोरबा। कटघोरा विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 20 मार्च को कलचुरी पब्लिक स्कूल कटघोरा में जायसवाल समाज का होली मिलन कार्यक्रम साय 5 बजे संपन्न हुआ।कार्यक्रम में जायसवाल महिला समाज के जिला अध्यक्ष डॉक्टर शकुतला जायसवाल एवं किरण जायसवाल महिला समाज के अध्यक्ष आए हुए सभी महिला अभ्यागतो का एवं शिवशंकर जायसवाल जिला सचिव जायसवाल समाज कल्याण समिति कोरबा ने उपस्थित अभ्यागतो का स्वागत रंग गुलाल लगाकर किया गया। डॉ शकुतला जायसवाल ने कहा कि होली धार्मिक पर्व है जो बुराई पर अच्छाई की जीत होती हैं। कार्यक्रम में पवन जायसवाल,राजेंद्र जायसवाल,संगीता जायसवाल,सुनीता जायसवाल, अनीता डिक्सेना, मुक्ता जायसवाल,सुखिया बाई,किरण जयसवाल,रंजू डिक्सेना, भावना जायसवाल,सरिता जायसवाल,प्रतिमा जायसवाल, नंद कुमार जायसवाल, एस एस जायसवाल,जयंत जायसवाल,संजू डिक्सेना के अलावा और भी सामाजिक सदस्य उपस्थित ।

मुख्यमार्ग पर शराब दुकान ,हटाने की मांग

कोरबा। नगर पालिका परिषद दीपका के अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह राजपूत ने जिला आबकारी अधिकारी को पत्र लिखकर पाली रोड स्थित शराब दुकान को अन्यत्र स्थानांतरित करने की मांग की है।उन्होंने पत्र में उल्लेख किया है कि उक्त शराब दुकान नगर के मुख्य मार्ग और प्रमुख बाजार के पास स्थित है, जिससे यातायात पर भारी दबाव पड़ता है। यहां आम नागरिकों का आवागमन अधिक रहता है, और शराब दुकान के कारण स्थानीय लोगों को काफी असुविधा हो रही है।

इस समस्या को देखते हुए, नगर पालिका अध्यक्ष ने जिला प्रशासन से अनुरोध किया है कि इस शराब दुकान को पाली रोड मुख्य मार्ग से हटाकर किसी अन्य स्थान पर स्थानांतरित किया जाए, जिससे आम नागरिकों को राहत मिल सके।

अपने हिसाब से छात्रावास में आते हैं अधीक्षक और शिक्षक

उपस्थिति पंजी में कई-कई दिनों तक नहीं होते हस्ताक्षर

जैजैपुर। नवगठित जिला सक्ती के जैजैपुर ब्लाक अंतर्गत गुचकुलिया का बालक छात्रावास पूरी तरह से भगवान भरोसे संचालित हो रहा है। यहां प्रभारी अधिकारी और प्रधान से लेकर शिक्षक तक की उपस्थिति नियमित नहीं होती। बताया जाता है। कि उपस्थिति पंजी में भी कई कई दिनों के हस्ताक्षर नहीं होते। जैजैपुर वकासखंड के गुचकुलिया में संचालित अनुसूचित जनजाति बालक छात्रावास में अव्यवस्था की शिकायत कोई नई बात नहीं है। ग्रामीणों के मुताबिक यहां प्रभारी अधीक्षक से लेकर बाकी का स्टाफ अक्सर नदारद रहता है। गत दिवस भी इसी तरह की स्थिति नजर आई। हद तो तब हो गई जब उपस्थिति पंजी में भी स्टाफ के हस्ताक्षर कई हफ्तों तक नहीं हुए थे। भी विभाग अधिकारियों से की है। शिकायत पर मंडल निरीक्षक संदीप खाण्डे जांच में पहुंचे। बताया जाता है कि इस दौरान भी जिम्मेदार प्रभारी और स्टाफ के लोग नहीं थे।

जनपद पंचायत जैजैपुर के अंतर्गत अनुसूचित जनजाति विकास विभाग के अंतर्गत संचालित बालक छात्रावास गुचकुलिया के भृत्य को मालखरौदा ब्लाक के अड़?भार अनुसूचित बालक छात्रावास में स्थानांतरण करा दिया गया है। स्थानांतरण आदेश 3 जनवरी 2025 को जारी किया गया था। इसके बाद भी उक्त भृत्य गुचकुलिया छात्रावास में ही ड्यूटी कर रहा है। वकायदा उसे वेतन भी गुचकुलिया छात्रावास से ही मिल रहा है। संदीप खांडे मंडल निरीक्षक ने कहा उक्त कर्मी का स्थानांतरण आदेश निरस्त किया जा चुका है। छात्रावास में अपनी सेवा दे रहा है। यह यक्ष प्रश्न बना हुआ है। है। कि आखिर किन परिस्थितियों में उक्त चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी का स्थानांतरण किया गया। ऐसी कौन सी स्थिति निर्मित हो गई की आदेश को महीने भर नहीं बिता वह आदेश निरस्त भी कर दी गई। इधर सरपंच सुष्मा विक्रम चंद्रा का कहना है कि अधीक्षक प्रधान पाठक हमेशा छात्रावास से नदारद रहते हैं। यहां छात्रो की संख्या काफी नगण्य रहती है। छात्रावास में किसी भी प्रकार का नियंत्रण नहीं है।

जारी किए हैं नोटिस

शिकायत मिली है। निरीक्षण किया गया है। अव्यवस्था देखी अधीक्षक को नोटिस जारी कर जवाब मांगा गया है।

-संदीप खांडेकर,
मंडल निरीक्षक

ज्ञान भारती विद्यालय में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

जांजगीर। ज्ञान भारती हाईस्कूल जांजगीर में 20 मार्च को मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। अतिथि संचालक आरसी पाण्डेय, पूर्व प्राचार्य आरके जैन, पूर्व जिला परियोजना अधिकारी संतोष कुमार कश्यप एवं शशिकपूर उपाध्याय समाजसेवी द्वारा मां सरस्वती जी की पूजा-अर्चना कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। जिसमें 2023-24 में नर्सरी से 12 वीं तक के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को मेडल से सम्मानित किया गया एवं वर्तमान 2024-25 में विद्यालय द्वारा शैक्षणिक खेलकूद का आयोजन किया गया। जिसमें राखी, थाल सज्जा, रंगोली प्रतियोगिता, आर्ट एण्ड क्राफ्ट डिजाइन, छोटे बच्चों के लिए मिट्टी के खिलौने बनाकर लाना, विज्ञान के मॉडल, क्रिकेट, खो-खो प्रतियोगिता, कुर्सी दौड़, जलेबी दौड़, चम्मच दौड़, रस्सी कूद, बैडमिंटन प्रतियोगिता प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सीमा कश्यप प्राचार्या हिंदी माध्यम, गणेशराम जांगड़े प्राचार्य अंग्रेजी माध्यम, देवेन्द्र राठौर वरिष्ठ कार्यालय प्रभारी, गीतेश राठौर कनिष्ठ कार्यालय प्रभारी, सुमन्त पटेल सहायक, योगेश पाण्डेय कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं अन्य शिक्षक,शिक्षिकाएं उपस्थित थे।

विधायक ब्यास ने मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े को सदन में घेरा

चांपा। जांजगीर-चांपा विधायक ब्यास कश्यप ने विधान सभा में तारांकित प्रश्न के माध्यम से अनाथालयों एवं वृद्धाश्रम के बारे में महिला एवं बाल विकास विभाग मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े से जानकारी मांगी। उन्होंने कहा कि मंत्री द्वारा जो लिखित जवाब दिया गया है उसमें वृद्धाश्रम के बारे कही कोई जानकारी नहीं है। उन्होंने पूछा कि आपके द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार जांजगीर में चाइल्ड हेल्प समिति संचालित है ऐसी जानकारी दी गई है तो कृपया अवगत कराएं कि यह किस स्थान पर संचालित है। मंत्री द्वारा पहले नवागढ़ जवाब दिया गया। पुन: पूछे जाने पर कि नवागढ़ में -किस स्थान पर तो जवाब में नैला बताया गया। मंत्री के जवाब पर विधायक ब्यास कश्यप ने कहा कि मैं तो नैला का निवासी हूं, नैला में रहता हूं, मेरी पैदाइश वही की है, जहां तक मुझे जानकारी है ऐसी कोई समिति नैला में संचालित नहीं है। विधायक कश्यप ने कहा कि पूर्व में जांजगीर नगर में अनाथालय संचालित था जिसे अभी बंद कर दिया गया है। शासन का खुद का भवन है। क्या भविष्य में इसे

शासन द्वारा संचालित किया जाएगा या विभाग केवल निजी संस्थानों पर निर्भर रहेगा। जवाब में मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि मैं इसका निरीक्षण कराउंगी। विधायक ने पूछा कि एकीकृत बाल संरक्षण योजना के लिए बजट में कितनी राशि का प्रावधान किया गया है। विगत वर्ष कितनी राशि खर्च की गई। इसके जवाब में मंत्री निरुत्तर रहीं। विधानसभा अध्यक्ष ने मंत्री से कहा कि आप बाद में विधायक को जवाब उपलब्ध करा देना।

झोलाछाप पर कार्रवाई न होने से अभी भी हैं सक्रिय

रजिटर्ड डॉक्टरों की ऊंची फीस और महंगा इलाज कारण

जांजगीर। जिले में शायद ही कोई एक बड़ा गांव ऐसा हो जहां कोई बंगाली या झोला छाप डॉक्टर प्रेक्टिस ना करता हो। जिले भर के लगभग हर बड़े ग्राम शहर में दर्जनों झोला छाप कहे जाने वाले डॉक्टर अपनी प्रैक्टिस खुलेआम कर रहे हैं। सामान्य सर्दी खांसी की स्थिति झोलाछाप द्वारा दी जाने वाली दवाइयां मरीजों पर अच्छा असर करती हैं, लेकिन अन्य बीमारी के मौके पर झोलाछाप द्वारा सही इलाज नहीं किए जाने की स्थिति में मरीज की मौत होने की खबर आए दिन सुर्खियों में बनी रहती है। जब सरकार ने हर छोटे बड़े शहर गांव में सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए डॉक्टर नियुक्त किए हैं तो क्या कारण है कि बिना डिग्री वाले झोलाछाप डॉक्टर की दुकान ठीक-ठाक चलती है। डॉक्टर के पास इलाज करना गरीब वर्ग के लिए सामान्य बात नहीं होती। क्योंकि रजिस्टर्ड डॉक्टर की फीस काफी ऊंची होती है। उस पर उसके द्वारा कराए जाने वाले ब्लड टेस्ट, सोनोग्राफी या और अन्य प्रकार के टेस्ट जो भी काफी महंगे होते हैं। दूसरा यह कि रजिस्टर्ड डॉक्टर प्राय एडमिट करने या ड्रिप लगवाने का एक नया ट्रेंड और भी चल पड़ा है कि झोलाछाप डॉक्टर जब किसी मरीज की बीमारी को समझ नहीं पाते या उपचार नहीं कर पाते तब वे उसे मरीज को बड़े डॉक्टर के पास भेज देते हैं और डॉक्टर से अच्छा खासा कमीशन लेते हैं।

कक्षा 6वीं में प्रवेश चयन परीक्षा 30 मार्च को

जांजगीर-चांपा। पं0 जवाहर लाल नेहरू उत्कर्ष योजना अंतर्गत वर्ष 2025-26 में कक्षा 6वीं में प्रवेश परीक्षा हेतु चयन परीक्षा का आयोजन 30 मार्च 2025 (रविवार) को दोपहर 12 बजे से 2 बजे तक स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ठ अंग्रेजी माध्यम विद्यालय क्रमांक 01 जांजगीर में आयोजित किया गया था। सहायक आयुक्त, आदिवासी विकास ने बताया कि उक्त संस्था को परिवर्तन करते हुए उनके स्थान पर (बी0टी0आई0 चौक) प्राचार्य जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) जांजगीर को परीक्षा केन्द्र बनाया गया है। शेष शर्ते यथावत रहेगी। सहायक आयुक्त, आदिवासी विकास जांजगीर-चांपा एवं सक्ती जिले से प्राप्त आवेदन पत्रों का परीक्षण उपरांत पात्र विद्यार्थियों का प्रवेश पत्र जारी किया गया है। प्रवेश पत्र का वितरण 24 मार्च 2025 से 28 मार्च 2025 तक कार्यालयीन समय में सहायक आयुक्त, आदिवासी विकास जांजगीर-चांपा से किया जाएगा।

यदि किसी कारण वश कार्यालय में नहीं आ पाते हैं, तो उनका प्रवेश पत्र परीक्षा 30 मार्च 2025 को 9.00 बजे वितरण किया जायेगा। परीक्षा में विद्यार्थियों को फोटो युक्त पहचान पत्र के साथ परीक्षा में उपस्थिति होना अनिवार्य है।

पेट्रोल पंप कर्मचारी से लूटपाट मामले में फरार आरोपी पकड़ा गया

जांजगीर नैला। रात्रि के समय पेट्रोल पंप कर्मचारी का रास्ता रोककर रुपए से भरा बैग को लूटने वाला आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। वहीं पूर्व में एक आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। मामला सिटी कोतवाली जांजगीर का है। इस संबंध में मिली जानकारी के अनुसार 20 अक्टूबर 2024 की रात्रि करीब 10.30 बजे प्रार्थी बहोरिक राम राठौर बालाजी पेट्रोल पंप का कर्मचारी है। वह पेट्रोल पंप से रुपए से भरे थैले को लेकर जा रहा था। इसी दौरान वह रुपए लेकर नेता जी चौक अपने सेठ के घर छोडने बाइक से जा रहा था। दिपक ट्रेडर्स एवं लालू स्वीट्स के पास अनुप कुमार दाउद उर्फ छोटु द्वारा उसे रोककर थैला में रखे रूपये को लूट कर अपने साथी के साथ स्कूटी में बैठकर भाग गया। प्रार्थी की रिपोर्ट पर आरोपियों के विरुद्ध धारा 309, 3 (5) बीएनएस अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। पूर्व में 22 अक्टूबर को आरोपी अनुप कुमार दाउद उर्फ छोटू निवासी मिशन कम्पाउंड जांजगीर को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा जा चुका है। प्रकरण के आरोपी अनीश सिंह पिता यशवंत सिंह उम्र 26 साल निवासी ग्राम अरविंद थाना नवागढ़ घटना दिवस से फरार था।

जिसको अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश कुमार कश्यप के मार्गदर्शन में घेराबंदी कर पकड़ा। पूछताछ के दौरान उसने बालाजी पेट्रोल पंप कर्मचारी से लूटकर करने का प्लान बनाया और बालाजी पेट्रोल पंप से रोक कर उसके पास रखे रूपये से भरे थैले को स्कूटी में बैठ कर फरार हो गए। पुलिस ने 20 मार्च को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया।

पुरुषों पर किशोरियों ने बरसाई लाठी, क्या है ये 300 साल पुरानी परंपरा

जांजगीर चांपा। यूं तो रंग पंचमी क्षेत्र में पूरे उत्साह के साथ मनाई जाती है, लेकिन पंतोरा में मनाई जाने वाली लट्ठमार पंचमी का अपना अलग ही अंदाज है। राधा की नगरी बरसाना में आज के दिन लट्ठ मारने की परंपरा है, कुछ इसी तरह इस दिन गांव की युवतियां बांस की पतली छड़ी से लोगों की पिटाई करते हैं। लट्ठमार पंचमी में मार खाने के लिए दूर-दूर से ग्रामीण पहुंचते हैं।

इस परंपरा के बारे में गांव के बुजुर्ग ने बताया कि आज से तकरीबन डेढ़ से दो सौ वर्ष से पूर्व इस गांव को बसाने वाले मालगुजार देवान ठाकुर द्वारा इस छड़ीमार पंचमी की शुरूआत की गई। उन्होंने बताया कि उस समय गांव में महामारी, हैजा का प्रकोप होते रहता था जिससे ग्रामीणों की मौत हो जाया करती थी।

उनकी बताई किवदंती के अनुसार एक बार मालगुजार देवान ठाकुर को मां भवानी ने स्वप्न में बताया कि पंचमी के दिन कुंवारी कन्याओं द्वारा मां की पूजा कर छड़ी द्वारा युवकों को मारने से गांव में इस तरह की बीमारी से बचा जा सकता है। तब से लेकर आज तक लट्ठमार पंचमी के दिन लड़कियों से मार खाने को लोग अच्छा मानते हैं।

बुजुर्ग द्वय ने बताया कि मां भवानी पर ग्रामीणों की इतनी अटूट आस्था है कि इसके बाद आज तक गांव में किसी को इस तरह की बीमारी का सामना करना नहीं पड़ा। इस परंपरा के अनुसार रंग पंचमी की पूर्व संध्या पर गांव से 10 किमी दूर ग्राम कंठी स्थित मां मड़वारानी मंदिर में पूजा की जाती है। मंदिर के आसपास काफी संख्या में बांस के पेड़ हैं, जिसे ग्रामीण डंगाही कहते हैं।

भागवत कथा होने से पूरा गांव हो जाता हैं भक्तिमय :राजकुमार साहू

भैसमुड़ी में क्षत्रिय परिवार द्वारा आयोजित हो रहा श्रीमद्भागवत कथा

जांजगीर-चाम्पा। नवागढ़ विकास खण्ड के ग्राम पंचायत भैसमुड़ी में क्षत्रिय परिवार द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत कथा सुनने जिला पंचायत के सभापति राजकुमार साहू पहुँचे। श्री साहू ने सवर्प्रथम भगवान जगत के पालनहार बाल गोपाल श्रीकृष्ण के चरणों व ब्यासपीठ पर में मत्था ठेक क्षेत्र के खुशहाली की कामना किये।

उन्होंने उपस्थित श्रद्धालुओं को कहा कि जब भी गांव में कुछ भक्ति का आयोजन होता है तब पूरा गांव भक्तिमय हो जाता है इसी तरह क्षत्रिय परिवार द्वारा आयोजित भागवत महापुराण से पूरा गांव श्री कृष्ण के भक्ति में डूबा हुआ है। ब्यासपीठ पर बैठे पंडित शेखर प्रसाद चतुर्वेदी ने भगवान श्रीकृष्ण की समुद्र मंथन, श्रीराम कथा एवं श्री कृष्ण जन्मोत्सव की कथा सुनाते कहा कि जब भगवान बाल गोपाल का जन्म पर नंद के घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की पर सभी श्रद्धालु काफी देर तक झूमते व थिरकते रहे। कथावाचक ने कहा कि जब-जब अत्याचार, अनाचार व अन्याय बढा है, तब-तब प्रभु का अवतार होता है। अत्याचार को समाप्त कर धर्म की स्थापना को लेकर ही प्रभु का अलग-अलग रूपों में अवतार होता है। जब कंस ने सभी मर्यादाएं तोड दी, तो प्रभु श्रीकृष्ण का जन्म हुआ. कथा के दौरान बासुदेव, यशोदा व श्रीकृष्ण के बाल-रूप की झांकी देख सभी श्रद्धालु जयकारा लगाते हुए नृत्य करने लगे। भागवत कथा में सभापति राजकुमार साहू के साथ भाजपा मंडल अध्यक्ष समर्थ सिंह, सरपंच प्रतिनिधि विजय कुमार साहू, मुख्य यजमान नीरज सिंह-श्रीमती प्रतिभा सिंह क्षत्रिय, ठा. अविनाश सिंह क्षत्रीय, ठा. प्रितराज सिंह क्षत्रीय, श्रीमती सरस्वती सिंह, श्रीमती दयामंती सिंह, ठा. बालमिकी सिंह-अंगीरा सिंह सहित ग्रामवासी भागवत कथा सुनने पहुँचे थे।

डेस्टिनेशन इंग्लिश मीडियम स्कूल के छात्र रितेश पटेल ने जे. ई. ई मेन्स में अर्जित किया 96.66 परसेंटाइल

जांजगीर। डेस्टिनेशन इंग्लिश मीडियम स्कूल के 12वीं के छात्र रितेश पटेल पिता सतीश पटेल ने बिना कोचिंग एवं स्वयं की मेहनत के बल पर जे.ई.ई मेन्स की परीक्षा में प्रथम प्रयास में ही 96.66 परसेंटाइल अर्जित कर माता पिता और परिवार का नाम रोशन किया है । रितेश पटेल शुरू से ही मेधावी छात्र रहे हैं और अधिकतर समय तैयारी में ही लगाकर यह सफलता पाई है । रितेश का कहना है कि अगर मोबाइल और टीवी के स्क्रीनिंग टाइम से बचा जाए तो इससे समय का सही उपयोग होता है । संस्था के प्राचार्य रविशंकर निर्मलकर और उप प्राचार्य श्रद्धा निर्मलकर ने रितेश की उज्जवल भविष्य की कामना की है।

इलाज के दौरान युवक की मौत, रंजिश के चलते छह लोगों ने की थी मारपीट

जांजगीर-चांपा। विगत दिनों जिले के डोमाडीह (बिर्रा) में युवक चित्रांशु पटेल और अंकुर वैष्णव के साथ पड़ोसी के छह लोगों ने मिलकर होली के दिन पुरानी रंजिश को लेकर मारपीट की थी। जिसमें घायल युवक चित्रांशु पटेल की रायपुर के निजी अस्पताल में इलाज के दौरान मौत ही गई। जिसपर बिर्रा थाने में हत्या का मामला दर्ज किया गया है। साथ ही पुलिस आरोपियो की तलाश कर रही है।

जानकारी के अनुसार डभराखुर्द गाँव का निवासी चित्रांशू पटेल अपने दोस्त अंकूर वैष्णव के साथ होली के दिन दोपहर 3.00 बजे करीबन डोमाडीह (बिर्रा) से होली खेलने के बाद दोस्त के साथ घर आ रहा था तभी पड़ोस के रहने वाले राज केवट, भुनेश्वर पटेल, मोहन पटेल, कृष्ण कुमार पटेल, दरस राम पटेल, दया राम पटेल जोकि रास्ते में मिले और पुरानी रंजिश को लेकर विवाद करने लगे।

तभी युवक चित्रांशु पटेल ने गाली-गलौज देने से मना किया तो राज केवट अपने पांच साथियों के साथ मिलकर जान से मारने कि नियत से बांस के डंडे से मारपीट करने लगे। वहीं दोस्त अंकूर वैष्णव किसी तरह जान बचकर भाग निकला और चित्रांशु पटेल के घर मे सूचना दी। जिसके बाद परिजन घटनास्थल पहुंचे,गंभीर रूप से घायल चित्रांशु को इलाज के लिए बिर्रा में अस्पताल लेकर पहुंचे। हालत गंभीर होने पर जांजगीर जिला अस्पताल में एक दिन उपचार चल मगर तबियत में कोई सुधार नहीं होने पर उसे रायपुर के निजी अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती कराया गया जहां 3 से 4 दिनों तक उपचार चला मगर जिंदगी की जंग नहीं जीत सका गत मंगलवार की सुबह उसकी मौत हो गई है।

मृतक का दोस्त अंकुर वैष्णव ने कहा कि जिस तरह से चित्रांशु पटेल की हत्या की गई है डर लग रहा है कि हमें भी जान से मार सकते है। बिर्रा पुलिस से जल्द से जल्द आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की है और सुरक्षा का मांग की है। वही बिर्रा पुलिस की कार्रवाई पर सवाल खड़े होने लगे हैं, 4 दिन पहले हुए जानलेवा हमले कि घटना पर अभी तक आरोपियों कि गिरफ्तारी नहीं हुई है।

24 मार्च प्लेसमेंट कैंप का होगा आयोजन

जांजगीर-चांपा। जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र जांजगीर-चांपा द्वारा युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से 24 मार्च 2025 दिन सोमवार को प्रात: 11 बजे 3 बजे तक जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र, जांजगीर-चांपा लाईवलीहुड कॉलेज परिसर जॉजगीर में कैंप का आयोजन किया जा रहा है। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि शिविर में टैंगो सिक्युरिटी सर्विसेस प्रा.लि. रायपुर द्वारा सुरक्षा गार्ड के 60 एवं सुरक्षा सुपरवाईजर के 05 पदों पर भर्ती की कार्यवाही की जाएगी।

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) जांजगीर, जिला जांजगीर-चांपा (छ.ग.)

-: ईश्तहार :-

क्र.622/अ.वि.अ./व्यपवर्तन/2025
जांजगीर, दिनांक 20.03.25

एतद् द्वारा आम जनता जांजगीर को सूचित किया जाता है कि आवेदिका श्रीमती किरनदेवी अग्रवाल पति श्री शंकरलाल सिंघानिया, निवासी ग्राम जांजगीर के द्वारा ग्राम जांजगीर प.ह.नं. 05 तहसील जांजगीर जिला जांजगीर-चांपा स्थित भूमि ख.नं. 3742/20 रकबा 0.10 एकड़ भूमि को आवासीय प्रयोजन हेतु छ.ग.भू.रा. संहिता 1959 की धारा 59(2) के तहत पुनर्निर्धारण के लिए बी-1, खसरा एवं विक्रय पत्र की छायाप्रति सहित आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

उक्त भूमि को आवासीय प्रयोजन हेतु परिवर्तित करने में जिस किसी को आपत्ति/दावा हो तो वह अपनी आपत्ति/दावा स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से इस न्यायालय में आगामी सुनवाई दिनांक 04.04.25 तक आपत्ति/दावा प्रस्तुत कर सकते है। नियत तिथि पश्चात् प्राप्त आपत्ति/दावा पर विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 20.03.25 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा से जारी किया गया।

(सील) अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
जांजगीर

हसदेव बांगो बांध से नहर में पानी हुआ कम, जिला कलेक्ट्रेट पहुंचे सैकड़ों किसान... बोले फसल हो रही है बर्बाद

जांजगीर चांपा। 1 जनवरी से रबी की फसल के लिए जांजगीर चांपा जिले की नहरों के लिए हसदेव बांगो बांध से पानी छोड़ा गया था, जिससे किसान उत्साहित होकर रबी की फसल को कर रहे थे, लेकिन होली के कारण विभाग द्वारा 14 मार्च को नहर के पानी को कम कर दिया गया, जिसकी वजह से किसानों के खेतों तक पानी नहीं पहुंच पा रहा है. खेतों में पानी नहीं पहुंचने से फसल मुरझाने लगी है, जिससे चिंतित होकर अब सैकड़ों किसानों ने जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचकर नहर में पानी की मांग की है. वहीं इस दौरान किसानों ने कहा, कि अगर जल्द से जल्द पानी नहीं मिला, तो फसल सूखकर बर्बाद हो जाएगी और हम किसान कर्ज से दब जाएंगे.

किसानों की फसलों को हो रहा नुकसान

हसदेव बांगो नहर से पानी की सप्लाई बंद होने से जांजगीर चांपा जिले के कई गांवों में किसानों की रबी की फसल, खासकर धान की फसल, नष्ट होने की कगार पर आ गई है, जिला मुख्यालय से लगे दो दर्जन से अधिक गांवों के किसानों ने रबी सीजन के तहत धान की बुआई की थी, लेकिन होली के त्योहार के दौरान जिला प्रशासन और सिंचाई विभाग द्वारा सुरक्षा के मद्देनजर हसदेव बांगो नहर से पानी की सप्लाई बंद कर दी, ऐसे में गर्मी और पानी की कमी के कारण फसल को नुकसान हो रहा है.

सिंचाई विभाग द्वारा पहले ही वादा किया गया था

ग्राम चौराभाठा के किसान नरेंद्र कुमार कश्यप ने बताया, कि गांव में रबी सीजन में धान की बुआई की गई थी और सिंचाई विभाग द्वारा पहले ही यह वादा किया गया था, कि हसदेव बांगो से नहर में पर्याप्त पानी उपलब्ध कराया जाएगा, लेकिन नहर से पानी की आपूर्ति बंद होने के कारण हम किसानों की धान की फसल अब सूखने लगी है. आगे वे बताते हैं, कि जब तक नहर से पानी की आपूर्ति शुरू नहीं होती, तब तक फसल को बचाना मुश्किल होगा, खेतों में दरार पड़ रही है, धान की फसल मुरझा गई है और सूखने लगी है. आगे उन्होंने बताया कि नहर में पानी नहीं आने से धान की फसल बर्बाद हो जाएगी और किसान कर्ज के तले दब जाएंगे. किसान आत्महत्या करने को मजबूर हो जाएगा. इसीलिए उन्होंने सिंचाई विभाग के अधिकारी से आग्रह किया है कि नहर में पानी जल्द से जल्द देने की कृपा करें.

मेरी मौत के जिम्मेदार ये लोग हैं,नोट लिख इंजीनियर ने दी अपनी जान, रेलवे ट्रैक में दो टुकड़ों में मिली थी लाश

जांजगीर चांपा। जांजगीर के बीडीएम नगर निवासी शुभम राठौर खुदकुशी मामले में पुलिस ने तीन लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज किया है। हालांकि तीसरे का नाम संदिग्ध है। क्योंकि पुलिस तीसरे को पूछताछ के लिए लेकर आई थी, लेकिन उसे छोड़ दिया है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ धारा 108 (खुदकुशी के लिए प्रेरित करना) 3(5) बीएनएस एक्ट के तहत जुर्म दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शुभम राठौर द्वारा लिखे सुसाइड नोट पत्रिका के हाथ लगे हैं। जिसमें उसने खुदकुशी के पहले यह लिखा है कि संदीप राठौर (भाई) निवासी बस्ती जांजगीर, वासू राठौर (विकास) बीडी महंत नगर जांजगीर, इन दोनों के द्वारा मेरे से कई लाख रुपए ले लिए और मेरे अपाहिज पिता को रोज-रोज जाकर गाली गलौज, मारपीट करते हैं। इसके अलावा मेरी नौकरी कटघोरा पीएचई में था। उसमें मेरे और मेरे पूरे सोने (गोल्ड) को जबरदस्ती कुछ पैसों के लिए छीनकर ले गए। सोने में 5 अंगूठी, मेरा एक सोने के चेन, शादी के लिए खरीदे एक डायमंड रिंग, चेन और कान के लिए रिंग बनवाया था उसे छीनकर ले गए हैं।सारे सोने के बिल मेरे कटघोरा के रूम के आलमारी और कुछ बिल मेरी मां के पास है। जिसका नाम सुमित टहलानी उर्फ बब्बू बाकी मेरे आफिस से और मेरे दोस्तों के पास पता चल जाएगा। ये तीनों मेरे मौत के कारण हैं। मेरे सोने को इस आदमियों से लाकर देवें। क्योंकि मेरे घर की स्थिति बहुत खराब है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। घटना के बाद से सभी आरोपी फरार हैं। पुलिस उनकी तलाश शुरू कर दी है।

पापा माफ कर देबे

शुभम राठौर ने सुसाइड नोट में बड़े मार्मिक शब्दों में लिखा है कि पापा माफ कर देबे, अउ मम्मी जो भी हो सह के जिहा..। अब जो लिखाए रहिस होना रहिस, मोर कटघोरा के सामान ला ले आहा, किराया एडवांस मा रहिस, चेक कर लिहा।

यह है पूरा मामला- 16 मार्च की सुबह शुभम राठौर का शव नहरिया बाबा मंदिर के आसपास रेल पटरी पर मिला था। उसने खुदकुशी कर जान दे दी थी। मामले को नगर के विधायक ब्यास कश्यप ने विधानसभा में प्रमुखता से उठाया था। विधायक का आरोप था कि नगर में कानून व्यवस्था नाम की चीज नहीं रह गई है। सूदखोरी का कारोबार बढ़ रहा है। इसके बाद पुलिस की सक्रियता बढ़ गई है।

अनमोल वचन......

अपने आपमें विश्वास रखने का आदर्श ही हमारा सब से पड़ा सहायक

अपने दायित्व को समझें शिक्षा संस्थान, विकसित भारत के लक्ष्य में शिक्षा की भूमिका अहम

आज भारत तीव्र परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहा है। यह परिवर्तन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सभी दिशाओं में हो रहा है। इन क्षेत्रों में परिवर्तन हम कई बार देखते हैं, पर उन्हें समझ नहीं पाते, जबकि यह 'परिवर्तन का दौर' है। भारतीय समकालीन आधुनिक इतिहास को तीन रूपांतरकारी दौर में बांटा जा सकता है। पहला, महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम का दौर। दूसरा, आजादी के बाद देश को बनाने के लक्ष्य को पाने की चाहतों का दौर और तीसरा, विकसित भारत का आज का दौर। विकसित भारत का यह मिशन समाज के प्रत्येक वर्ग से स्वतंत्रता आंदोलन जैसी प्रतिबद्धता की मांग करने के साथ यह हम सबसे अपने को नए परिवर्तनों से जोड़ने की भी अपेक्षा करता है। विकसित भारत के इस दौर में हमें व्यक्तिगत और संस्थागत, दोनों ही स्तरों पर अपने को पुनर्नवा करने की जरूरत है, तभी प्रधानमंत्री मोदी द्वारा परिकल्पित इस लक्ष्य को पाया जा सकता है। बीते दिनों राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के नेतृत्व में भारतीय शिक्षा एवं शिक्षण संस्थानों के वर्तमान एवं भविष्य पर गहन चिंतन हुआ। उसमें देश भर के विश्वविद्यालयों के कुलपति, आईआईटी, आईआईएम एवं एनआईटी के निदेशक तथा शिक्षा मंत्रालय से जुड़े नीति निर्माता एवं अधिकारियों ने भाग लिया। उसमें शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि उम्मीद है कि हमारे शिक्षण संस्थान भारत में विकास के प्रकाश स्तंभ बनेंगे एवं प्रधानमंत्री द्वारा परिकल्पित विकसित भारत के लिए 'एंकर' का कार्य करेंगे। उनके इस वक्तव्य में भविष्योन्मुखी अपेक्षा निहित है। इसमें यह अपेक्षा है कि भारतीय शिक्षण संस्थान केवल चहारदीवारी के भीतर रहकर पढ़ाने, किताबी ज्ञान देने एवं डिग्री देने वाली संस्था के रूप में ही सीमित न रहें, बल्कि इनसे आगे निकल 'विकास एवं सामाजिक परिवर्तन' के चिंतन केंद्र के रूप में स्वयं को विकसित करें। इस प्रकार ये संस्थाएं अपने शोध, आंकड़ों, विकास समीक्षा एवं चिंतन के माध्यम से विकसित भारत के इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए दिशा एवं दृष्टि देंगी।

राष्ट्रपति की तरह प्रधानमंत्री भी विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करने में शिक्षा संस्थानों की भूमिका का उल्लेख कर चुके हैं। एक बार साइंस कांग्रेस में उन्होंने देश के शिक्षण संस्थानों से समाज को भी अपनी प्रयोगशाला बनाने का आग्रह किया था। भारतीय शिक्षा एवं शिक्षण संस्थान जब 'भारतीय समाज एवं अपने आसपास हो रहे परिवर्तनों से नाभिनाल का संबंध बना पाएंगे, तभी वे विकसित भारत के प्रकाश स्तंभ की भूमिका निभा पाएंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 इन्हीं उद्देश्यों को पूरा करने वाली है। वह भारतीय शिक्षा के पारंपरिक स्वरूप को तोड़ते हुए एक प्रगतिशील रूपांतर के लिए नीति-नियम रचती है। इस शिक्षा नीति के तहत लचीलापन, अंतर अनुशासनिकता, समाज के विविध प्रयासों के साथ अंतः संवाद तथा समरस एवं विकासोन्मुखी गतिशीलता प्रदान करने की कोशिश दिखाई पड़ती है, ताकि भारतीय शिक्षा में संस्थागत एवं व्यक्तिक स्तर पर आधारभूत परिवर्तन हो सके।

राशिफल

मेष राशि - आज आपका दिन अच्छा रहने वाला है। अधिकारियों के साथ आपको अपने व्यवहार में थोड़ी सावधानी रखनी चाहिए। आज धन लाभ के नए सोर्स मिलेंगे। इस राशि के युवाओं की विज्ञान के क्षेत्र में की रुचि बढ़ेगी। आज विदेश जाने के लिए प्रयासरत लोगों को खुशखबरी मिल सकती हैं। आज छात्रों को अपनी पढ़ाई के प्रति लापरवाही करने से बचना चाहिए।

वृष राशिः आपके दिन की शुरुआत अच्छी होने वाली है। परिवार में सुख समृद्धि का वातावरण रहेगा। आज आपके पराक्रम और धैर्य में वृद्धि होगी। आज बिजनेसमैन को लाभ होने की संभावना है। इस राशि की महिलाएं अपने व्यवसाय और नौकरी में विशेष सफलता हासिल करेंगी।

मिथुन राशिः आज आपका दिन उत्साह से भरपूर रहेगा। दैनिक जीवन की गतिविधियां अच्छी चलेंगी। आज आपका मन अध्यात्म के प्रति अधिक रहेगा। आज रुका हुआ कार्य पूरा होने वाला है, हालांकि अधिक मेहनत भी करनी पड़ेगी। आपकी सकारात्मक और संतुलित सोच आपको तरीके से कार्य पूरा करने में मदद करेगी। आज सामाजिक गतिविधियों में आपका उचित योगदान बना रहेगा।

कर्क राशिः आज का दिन आपके अनुकूल रहने वाला है। आपका काम मन- मुताबिक होगा। मित्रों के साथ किसी खास विषय पर बातचीत होगी, जिससे आपको फायदा हो सकता है। इस राशि के छात्रों को किसी विशेष सब्जेक्ट को लेकर बहुत अधिक एकाग्रता बनाए रखने की जरूरत है।

सिंह राशिः आज का दिन आपके लिए खुशियों की सौगात लेकर आया है। आप खुद को एनर्जी से भरा महसूस करेंगे। आज आप जिस काम को करेंगे, वो समय से पहले पूरा हो जायेगा। आज दांपत्य जीवन में चल रही अनबन दूर करने की कोशिश करेंगे। आज व्यावसायिक मामलों में बहुत अधिक व्यस्तता बनी रहेगी।

कन्या राशिः आज आपका दिन खुशनुमा पल लेकर आया है। व्यर्थ के कामों में अपना समय बर्बाद न करें। रूका हुआ काम अगर फिर से शुरू करेंगे, तो फायदा जरूर होगा। रुके हुए ऑफिशियल कार्यों को पूरा करने के लिए अधिक फोकस करना चाहिए, जितना जल्दी हो सके काम को पूरा करने पर ध्यान दें।

तुला राशिः आज का दिन आपके लिए बेहद खास है। ऑफिस में आपको किसी कार्य में सीनियर्स की मदद मिलेगी, जिससे आपका कार्य समय पर पूरा हो जाएगा। आज आपको अजनबी लोगों से सावधान रहने की जरूरत है। साझेदारी में बिजनेस करने वाले बिजनेसमैन को आज रोज की अपेक्षा ज्यादा लाभ मिलेगा।

वृश्चिक राशिः आज का दिन शुभ है। व्यापार में आपको लाभ मिलेगा। आज सम्मानित व्यक्तियों के साथ समय व्यतीत करने का अवसर मिलेगा और उनसे बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। आज घर की सुख-सुविधा से संबंधित मूल्यवान वस्तुओं की खरीददारी संभव है। धर्म-कर्म के कार्यों में आज आपका मन लगेगा।

धनु राशिः आज आपका दिन अच्छा रहेगा। आज आपके निर्णय लेने की क्षमता में बढ़ोतरी होगी। पारिवारिक जिम्मेदारियों को अच्छे से निभाएंगे। विद्यार्थियों को इंटरव्यू अथवा करियर में उचित सफलता मिलने की उम्मीद है। प्रॉपर्टी से संबंधित कार्यवाही चल रही है, तो आज बात बन सकती हैं।

मकर राशिः आज आपका दिन खुशियों से भरा रहेगा। दांपत्य जीवन में आपसी सामंजस्य बना रहेगा। रोजमर्रा के कामों में व्यस्तता बनी रहेगी। कारोबार में रुका हुआ पैसा वापस मिल सकता है। आज किसी भी प्रकार की नकारात्मक स्थिति बनने पर धैर्य से काम लें, सब ठीक हो जायेगा।

कुंभ राशिः आज आपका दिन नया बदलाव लाने वाला है। कोर्ट-कचहरी का फैसला आपके पक्ष में आ सकता है। पिछले कुछ समय से चल रही उलझन आज दूर होगी, जिससे खुद को रिलैक्स फील करेंगे। निवेश संबंधी कार्यों के लिए आज समय बहुत ही उत्तम है। आज घर के बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद व स्नेह आपको मिलेगा।

मीन राशिः आज आपका दिन शानदार रहेगा। अपनी समस्याओं का समाधान निकालने में आज आप सफल होंगे। इस राशि के जॉब कर रहे लोगों के लिए अच्छे ऑफर्स आने के योग बन रहे हैं। अध्यात्म के प्रति रुचि रखना आपके स्वभाव को और अधिक विनम्र बनाएगा। आज घर में खुशी का माहौल बनेगा। जीवनसाथी के साथ आज आपका तालमेल बढ़िया रहेगा। आपको व्यापार में मुनाफा हो सकता है।

ट्रम्प प्रशासन द्वारा टैरिफ सम्बंधी लिए जा रहे निर्णयों का भारत पर प्रभाव

//प्रह्लाद सबनानी //

यदि अमेरिका अपने देश में हो रहे उत्पादों के आयात पर टैरिफ में लगातार वृद्धि करता है तो यह उत्पाद अमेरिका में बहुत महंगे हो जाएंगे और इससे अमेरिकी नागरिकों पर मुद्रा स्फीति का दबाव बढ़ेगा। क्या अमेरिकी नागरिक इस व्यवस्था को लम्बे समय तक सहन कर पाएंगे।अमेरिका में दिनांक 20 जनवरी 2025 को नव निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा ली गई शपथ के उपरांत ट्रम्प प्रशासन आर्थिक एवं अन्य क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण फैसले बहुत तेज गति से ले रहा है। इससे विश्व के कई देश प्रभावित हो रहे हैं एवं कई देशों को तो यह भी समझ में नहीं आ रहा है कि अंततः आगे आने वाले समय में इन फैसलों का प्रभाव इन देशों पर किस प्रकार होगा।

ट्रम्प प्रशासन अमेरिका में विभिन्न उत्पादों के हो रहे आयात पर टैरिफ की दरों को बढ़ा रहा है क्योंकि इन देशों द्वारा अमेरिका से आयात पर ये देश अधिक मात्रा में टैरिफ लगाते हैं। चीन, कनाडा एवं मेक्सिको से अमेरिका में होने वाले विभिन्न उत्पादों के आयात पर तो टैरिफ को बढ़ा भी दिया गया है। इसी प्रकार भारत के मामले में भी ट्रम्प प्रशासन का मानना है कि भारत, अमेरिका से आयातित कुछ उत्पादों पर 100 प्रतिशत तक का टैरिफ लगाता है अतः अमेरिका भी भारत से आयात किए जा रहे कुछ उत्पादों पर 100 प्रतिशत का टैरिफ लगाएगा। इस संदर्भ में हालांकि केवल भारत का नाम नहीं लिया गया है बल्कि टिट फोर टेट एवं रेसिप्रोकल आधार पर कर लगाने की बात की जा रही है और यह समस्त देशों से अमेरिका में हो रहे आयात पर लागू किया जा सकता है एवं इसके लागू होने की दिनांक भी 2 अप्रेल 2025 तय कर दी गई है। इस प्रकार की नित नई घोषणाओं का असर अमेरिका सहित विभिन्न देशों के पूंजी (शेयर) बाजार पर स्पष्टतः दिखाई दे रहा है एवं शेयर बाजारों में डर का माहौल बन गया है।

अमेरिका में उपभोक्ता आधारित उत्पादों का आयात अधिक मात्रा में होता है और अब अमेरिका चाहता है कि इन उत्पादों का उत्पादन अमेरिका में ही प्रारम्भ हो ताकि इन उत्पादों का अमेरिका में आयात कम हो सके। दक्षिण कोरीया, जापान, कनाडा, मेक्सिको आदि जैसे देशों की अर्थव्यवस्था केवल कुछ क्षेत्रों पर ही टिकी हुई है अतः इन देशों पर अमेरिका में बदल रही नीतियों का अधिक विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। जबकि भारत एक विविध प्रकार की बहुत बड़ी अर्थव्यवस्था है, अतः भारत को कुछ क्षेत्रों में यदि नुक्सान होगा तो कुछ क्षेत्रों में लाभ भी होने की प्रबल सम्भावना है। संभवत- अमेरिका ने भी अब यह एक तरह से स्वीकार कर लिया है कि भारत के कृषि क्षेत्र को टैरिफ युद्ध से बाहर रखा जा सकता है, क्योंकि भारत के किसानों पर इसका प्रभाव विपरीत रूप से पड़ता है। और, भारत यह किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करेगा कि भारत के किसानों को नुक्सान हो। डेरी उत्पाद एवं समुद्रीय उत्पादों में भी आवश्यक खाने पीने की वस्तुएं शामिल हैं। भारत अपने देश में इन उत्पादों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए उद्देश्य से इन उत्पादों के आयात पर टैरिफ लगाता है, ताकि अन्य देश सस्ते दामों पर इन उत्पादों को भारत के बाजार में डम्प नहीं कर सकें। साथ ही, भारत में मिडल क्लास की मात्रा में वृद्धि अभी हाल के कुछ वर्षों में प्रारम्भ हुई है अतः यह वर्ग देश में उत्पादित सस्ती वस्तुओं पर अधिक निर्भर है, यदि इन्हें आयातित महंगी वस्तुएं उपलब्ध कराई जाती हैं तो वह इन्हें सहन नहीं कर सकता है। अतः यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वह अपने नागरिकों को सस्ते उत्पाद उपलब्ध करवाए। अन्यथा, यह वर्ग एक बार पुनः गरीबी रेखा के नीचे आ जाएगा। भारत ने मुद्रा स्फीति को भी कूटनीति के आधार पर नियंत्रण में रखने में सफलता प्राप्त की है। रूस, ईरान, अमेरिका, इजराईल, चीन, अरब समूह आदि देशों के साथ अच्छे सम्बंध रखकर विदेशी व्यापार करने में सफलता प्राप्त की है। जहां से भी जो वस्तु सस्ती मिलती है भारत उस देश से उस वस्तु का आयात करता है। इसी नीति पर चलते हुए, कच्चे तेल के आयात के मामले में भी भारत ने विभिन्न देशों से भारी मात्रा में छूट प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है और ईंधन के दाम भारत में पिछले लम्बे समय से स्थिर बनाए रखने में सफलता मिली है।

अमेरिका द्वारा चीन, कनाडा एवं मेक्सिको पर लगाए गए टैरिफ के बढ़ाने के पश्चात इन देशों द्वारा भी अमेरिका से आयातित कुछ उत्पादों पर टैरिफ लगा दिए जाने के उपरांत अब विभिन्न देशों के बीच व्यापार युद्ध एक सच्चाई बनता जा रहा है। परंतु, क्या इसका असर भारत के विदेशी व्यापार पर भी पड़ने जा रहा है अथवा क्या कुछ ऐसे क्षेत्र भी ढूढे जा सकते हैं जिनमें भारत लाभप्रद स्थिति में आ सकता है। जैसे, अपैरल (सिले हुए कपड़े) एवं नान अपैरल टेक्सटायल का मेक्सिको से अमेरिका को निर्यात प्रतिवर्ष लगभग 450 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहता है और मेक्सिको का अमेरिका को निर्यात के मामले में 8वां स्थान है। अमेरिका द्वारा मेक्सिको से आयात पर टैरिफ लगाए जाने के बाद टेक्सटायल से सम्बंधित उत्पाद अमेरिका में महंगे होने लगेंगे अतः इन उत्पादों का आयात अब अन्य देशों से किया जाएगा। मेक्सिको अमेरिका को 250 करोड़ अमेरिकी डॉलर के कॉटन अपैरल का निर्यात करता है एवं 150 करोड़ अमेरिकी डॉलर के नान कॉटन अपैरल का निर्यात करता है। कॉटन अपैरल के आयात के लिए अब अमेरिकी व्यापारी भारत की ओर देखने लगे हैं एवं इस संदर्भ में भारत के निर्यातकों के पास पूछताछ की मात्रा में वृद्धि देखी जा रही है। इन परिस्थितियों के बीच, टेक्स्टायल उद्योग के साथ ही, फार्मा क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र, इंजीयरिंग क्षेत्र एवं श्रम आधारित उद्योग जैसे क्षेत्रों में भी भारत को लाभ हो सकता है।

यदि अमेरिका अपने देश में हो रहे उत्पादों के आयात पर टैरिफ में लगातार वृद्धि करता है तो यह उत्पाद अमेरिका में बहुत महंगे हो जाएंगे और इससे अमेरिकी नागरिकों पर मुद्रा स्फीति का दबाव बढ़ेगा। क्या अमेरिकी नागरिक इस व्यवस्था को लम्बे समय तक सहन कर पाएंगे। उदाहरण के तौर पर फार्मा क्षेत्र में भारत से जेनेरिक्स दवाईयों का निर्यात भारी मात्रा में होता है। यदि अमेरिका भारत के उत्पादों पर टैरिफ लगाता है तो इससे अधिक नुक्सान तो अमेरिकी नागरिकों को ही होने जा रहा है। भारत से आयात की जा रही सस्ती दवाएं अमेरिका में बहुत महंगी हो जाएंगी। इससे अंततः अमेरिकी नागरिकों के बीच असंतोष फैल सकता है। अतः अमेरिका के ट्रम्प प्रशासन के लिए टैरिफ को लम्बे समय तक बढ़ाते जाने की अपनी सीमाएं हैं।

अमेरिका विश्व का सबसे पुराना लोकतंत्र एवं सबसे बड़ा विकसित देश है और इस नाते अन्य देशों के प्रति अमेरिका की जवाबदारी भी है। टैरिफ बढ़ाए जाने के सम्बंध में इक तरफा कार्यवाही अमेरिका की अन्य देशों के साथ सौदेबाजी की क्षमता तो बढ़ा सकती है परंतु यह कूटनीति लम्बे समय तक काम नहीं आ सकती है। अमेरिकी नागरिकों के साथ साथ अन्य देशों में भी असंतोष फैलेगा। कोई भी व्यापारी नहीं चाहता कि नीतियों में अस्थिरता बनी रहे। इसका सीधा सीधा असर विश्व के समस्त स्टॉक मार्केट पर विपरीत रूप से पड़ता हुआ दिखाई भी दे रहा है। यदि यह स्टॉक मार्केट के अतिरिक्त अन्य बाजारों एवं नागरिकों के बीच में भी फैला तो मंदी की सम्भावनाओं को भी नकारा नहीं जा सकता है। अमेरिका के साथ साथ अन्य कई देश भी मंदी की चपेट में आए बिना नहीं रह पाएंगे। अर्थात, इस प्रकार की नीतियों से विश्व के कई देश विपरीत रूप में प्रभावित होंगे।

अमेरिका को भी टैरिफ के संदर्भ में इस बात पर एक बार पुनः विचार करना होगा कि विकसित देशों पर तो टैरिफ लगाया जा सकता है क्योंकि अमेरिका एवं इन विकसित देशों में परिस्थितियां लगभग समान है। परंतु विकासशील देशों जैसे भारत आदि में भिन्न परिस्थितियों के बीच तुलनात्मक रूप से अधिक परेशानियों का सामना करते हुए विनिर्माण क्षेत्र में कार्य हो रहा है, अतः विकसित देशों एवं विकासशील देशों को एक ही तराजू में कैसे तौला जा सकता है। विकासशील देशों ने तो अभी हाल ही में विकास की राह पर चलना शुरू किया है और इन देशों को अपने करोड़ों नागरिकों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाना है। इनके लिए विकसित देश बनने में अभी लम्बा समय लगना है। अतः विकसित देशों को इन देशों को विशेष दर्जा देकर इनकी आर्थिक मदद करने के लिए आगे आना चाहिए। अमेरिका को विकसित देश बनने में 100 वर्ष से अधिक का समय लग गया है और फिर विकासशील देशों के साथ इनकी प्रतिस्पर्धा कैसे हो सकती है। विकासशील देशों को अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने का अधिकार है, अतः विकासशील देश तो टैरिफ लगा सकते हैं परंतु विकसित देशों को इस संदर्भ में पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

बेहतरी की ओर बढ़ रहे भारत-चीन संबंध

// उमेश चतुर्वेदी//

अमेरिकी पाडकास्टर को दिए इंटरव्यू में प्रधानमंत्री मोदी ने जो कहा, उसे देखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा है, भारत और चीन के बीच संबंध कोई नई बात नहीं है। दोनों देशों की संस्कृतियां और सभ्यताएं प्राचीन हैं। आधुनिक दुनिया में भी, वे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत और चीन की ओर से एक-दूसरे के लिए जिस तरह की हाल के दिनों में बयानबाजी हुई है, उससे लगता है कि दोनों देशों के रिश्ते बेहतरी की ओर लगातार आगे बढ़ रहे हैं।

इसका हालिया मुलाहिजा तब हुआ, जब भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिकी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस रिसर्चर एवं पाडकास्टर लेक्स फ्रिडमैन को दिए करीब तीन घंटे के इंटरव्यू में प्रधानमंत्री मोदी ने चीन की प्रशंसा की की। मोदी पिछले साल अप्रैल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अमेरिकी पत्रिका न्यूजवीक को दिए इंटरव्यू में भी चीन को लेकर सकारात्मक संदेश दिए थे। इसके बाद अमेरिकी पॉडकास्टर से की गई बातचीत ने चीन और भारत के रिश्तों को एक तरह से नया आयाम दिया है। अच्छे और बेहतर पड़ोसी होने के नाते चीन का इस पर खुश होना स्वाभाविक था। चीन की ओर से आई प्रतिक्रिया भी जबरदस्त रही। चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग का यह कहना कि चीनी ड्रैगन और भारतीय हाथी के सामंजस्यपूर्ण नृत्य की प्रतीक्षा चीन के उत्साह का ही वर्णन करता है। अमेरिकी पाडकास्टर को दिए इंटरव्यू में प्रधानमंत्री मोदी ने जो कहा, उसे देखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा है, भारत और चीन के बीच संबंध कोई नई बात नहीं है। दोनों देशों की संस्कृतियां और सभ्यताएं प्राचीन हैं। आधुनिक दुनिया में भी, वे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि आप ऐतिहासिक अभिलेखों को देखें, तो सदियों से भारत और चीन ने एक-दूसरे से सीखा है। साथ मिलकर, उन्होंने हमेशा किसी न किसी तरह से वैश्विक भलाई में योगदान दिया है। प्रधानमंत्री मोदी की यह टिप्पणी चीन और भारत के रिश्ते बेहतर बनाने की दिशा में पहला कदम नहीं है।

प्रधानमंत्री मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग की रूसी शहर कजान में पिछले साल की मुलाकात के बाद भारत और चीन के रिश्ते लगातार बेहतरी की ओर बढ़ रहे हैं। हाल ही में चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने भी भारत को लेकर अपनी बेहतर राय जाहिर की थी। जिसका भारतीय विदेश मंत्रालय ने स्वागत किया था। इस कड़ी में भारतीय प्रधानमंत्री मोदी की ताजा टिप्पणी ने एक तरह से भारत-पाकिस्तान के रिश्तों को बेहतरी की ओर तेजी से बढ़ा दिया है। मोदी ने भारत- चीन के आपसी और गहरे रिश्तों और ऐतिहासिक संबंधों की भी इस पाडकास्ट में चर्चा की। वैसे चीन और भारत के रिश्तों की एक बड़ी और ऐतिहासिक कड़ी महात्मा गौतम बुद्ध हैं। यह ऐसी कड़ी है, जिसकी बुनियाद पर दोनों देशों के रिश्तों को और बेहतर बनाया जा सकता है। भारत-चीन संबंधों को बेहतर बनाने की दिशा में नई दिल्ली यह समझाने की कोशिश करती रही है कि जब तक दोनों देशों के बीच का सीमा विवाद और उससे उपजा तनाव खत्म नहीं हो जाता, तब तक संबंध बेहतर नहीं हो सकते हैं। लेकिन चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने पिछले दिनों जब कहा कि एशिया की दोनों आर्थिक महाशक्तियों को अपने विवाद भुलाकर साथ आना चाहिए, तब से हालात बदलने लगे हैं। वैसे भी जिस तरह ट्रंप लगातार चीन को घेरने की कोशिश कर रहे हैं और आयात पर टैरिफ बढ़ाने की बात कर रहे हैं, उससे चीन ही नहीं भारत को परेशान कर दिया है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप लगातार चीन और भारत से आयातित होने वाली चीजों पर टैरिफ बढ़ाने की बात कर रहे हैं। इसका निश्चित तौर पर दोनों देशों की आर्थिकी पर असर पड़ सकता है। अगर दोनों देश कम से कम आर्थिक मोर्चे पर साथ आने को तैयार दिखें तो अमेरिका की धमकियां और उसके कदम बेअसर साबित हो सकते हैं। वैसे दोनों देशों के कारोबारी रिश्ते जिस तरह बढ़ते रहे हैं, दोनों के बीच जारी सीमाई तनाव के बावजूद आपसी व्यापारिक संबंध मजबूत बने हुए हैं, वह बेहतर होते रिश्तों की ही कहानी कह रहे हैं। भारतीय प्रधानमंत्री मोदी और चीनी विदेश मंत्रालय की प्रतिक्रिया से जाहिर है कि दोनों देशों के बीच सद्भावना की नई इबारत लिखी जा रही है। अगर यह स्थिति और बेहतर होती है ति निश्चित है कि भारत में और अधिक चीनी निवेश का रास्ता खुल सकता है । जिसका फायदा भारत को तो मिलेगा ही, चीन को भी होगा। वैसे शंघाई सहयोग संगठन के साथ ही एशियाई विकास बैंक और ब्रिक्स जैसे संगठनों में नई दिल्ली और बीजिंग साथ-साथ काम कर ही रहे हैं। भारत आतंकवाद का मुकाबला करता रहा है, वह आतंकवाद का विरोधी भी है, लेकिन उसका मुकाबला करने के लिए बहुपक्षवादी वैचारिकी को बढ़ावा देने का वह विरोधी रही है।

इस मामले में चीन की भी सोच कमोबेश वैसी ही है। इसलिए माना जा सकता है कि दोनों देश इन तथ्यों के आलोक में अपने रिश्तों को देखने लगे हैं। भारतीय प्रधानमंत्री मोदी और चीनी विदेश मंत्रालय की प्रतिक्रिया, इसी सोच का परिणाम नजर आती है। पश्चिमी दुनिया के दिग्गज भी मानते हैं कि दोनों एशियाई दिग्गज देशों चीन और भारत के बीच स्थायी शांति के परिणाम दूरगामी होंगे। इससे कुछ हद तक वाशिंगटन चिंतित हो सकता है। लेकिन हाल के दिनों में भारत ने अमेरिका को लेकर जो संतुलित नीति अख्तियार की है, उससे उम्मीद है कि वाशिंगटन इस नई पहल की राह में बड़ी बाधा नहीं बन सकता। दोनों देशों के करोड़ों लोगों की आर्थिक स्थिति सुधारनी है, गरीबी का समूल नाश करना है और शांति और स्थायीत्व की दिशा में आगे बढ़ना है तो तय है कि दोनों देश विवादित मुद्दों को परे रखते हुए अपने आर्थिक और ऐतिहासिक रिश्तों को बेहतर बनाते हुए आगे बढ़ाते रहें। इससे एशिया की दुनिया और खूबसूरत हो सकती है।

अंतरिक्ष को नए आयाम देता निजी क्षेत्र, ऐतिहासिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा भारत

सुनीता विलियम्स और उनके सहयोगी के अंतरिक्ष में लंबे प्रवास के बाद धरती पर आगमन से भारत के अंतरिक्ष अभियानों को लेकर भी लोगों की उत्सुकता बढ़ी है। इसलिए और भी, क्योंकि भारत में पिछले कुछ समय से अंतरिक्ष संबंधी गतिविधियां बढ़ी हैं। भारत की अंतरिक्ष यात्रा 1962 में इन्कोस्पार, 1969 में इसरो और 1972 में अंतरिक्ष विभाग की स्थापना के साथ शुरू हुई।

न केवल भारत में, बल्कि दुनिया भर में कई सरकारों ने अंतरिक्ष क्षेत्र को बढ़ावा दिया है। इस क्रम में नासा, ईएसए और रोस्कोमास जैसी एजेंसियां अग्रणी हैं। एरियनस्पेस ने पिछली सदी के नौवें दशक में पहला निजी उपग्रह प्रक्षेपित किया। 1984 में यूएस कामर्शियल स्पेस लांच एक्ट आया और 1988 में निजी दूरसंचार उपग्रह लांच हुआ। धीरे-धीरे निजी निवेश में, खासकर अमेरिका में अंतरिक्ष गतिविधियां बढ़ने लगीं। 2002 के बाद स्पेसएक्स ने लागत में कटौती करने वाले बहुत सारे नवाचारों द्वारा इस क्षेत्र में क्रांति की लहर को जन्म दिया। सुनीता विलियम्स की वापसी में मस्क की कंपनी स्पेसएक्स के सहयोग की अहम भूमिका रही। आज अंतरिक्ष निवेश में निजी क्षेत्र का हिस्सा 80 प्रतिशत तक पहुंच गया है। कुछ साल पहले तक इसरो द्वारा हासिल अंतरिक्ष डाटा सीमित रूप में ही साझा किया जाता था। 2009 में इस नीति में बदलाव आया। 2020 में भारत में अंतरिक्ष क्षेत्र के खुलने से इस क्षेत्र में लोकतंत्रीकरण की एक नई लहर आई है। आज इस क्षेत्र में स्टार्टअप की संख्या 260 से अधिक हो गई है। भारतीय स्टार्टअप इसरो के पीएसएलवी आर्बिटल एक्सपेरिमेंटल माड्यूल के साथ स्पेसएक्स के ट्रांसपोर्टर और फ्रांस के एरियन राकेट का उपयोग कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त भारत में 15 से अधिक निजी उपग्रह लांच किए जा चुके हैं और आने वाले वर्षों में यह संख्या और बढ़ेगी। अंतरिक्ष क्षेत्र के लोकतंत्रीकरण की दूसरी विशेषता लागत में आई कमी है।नासा के अंतरिक्ष यान की लागत लगभग 54,500 डालर प्रति किलोग्राम थी, जबकि स्पेसएक्स के फाल्कन 9 की कीमत लगभग 2,720 डालर प्रति किलोग्राम है। भारत में यह लगभग 30,000 डालर है। निजी भागीदारी उपग्रह प्रक्षेपण की लागत को लगभग 30-40 प्रतिशत कम कर सकती है। स्टार्टअप्स वाणिज्यिक सप्लाई चेन माड्यूलर डिजाइनों और राइड-शेयर विकल्पों के उपयोग का लाभ उठाकर कम लागत में सैटेलाइट बना पाते हैं। इसके अतिरिक्त स्टार्टअप छोटे सैटेलाइट बनाते हैं, जिससे लागत कम हो जाती है। पिछली सदी के अंतिम दशक में 10-20 टन के जियो उपग्रह की कार्यक्षमता अब एक छोटे 800 किलोग्राम के उपग्रह में प्राप्त की जा सकती है। इसरो का बड़े उपग्रह बनाने का इतिहास रहा है। इसके विपरीत, भारतीय स्टार्टअप छोटे उपग्रहों के विकास पर ध्यान दे रहे हैं। उदाहरण के लिए पिक्सल हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग उपग्रह का वजन लगभग 15 किलोग्राम है। अतीत के विपरीत जहां अधिकांश उन्नत तकनीकें इसरो द्वारा विकसित की गई थीं, वहीं स्टार्टअप अब नवाचार की सीमाओं को आगे बढ़ा रहे हैं। अंतरिक्ष क्षेत्र में राज्य सरकारों की भूमिका बढ़ रही है। कई राज्य अपने अधिकार क्षेत्र में निवेश और अनुप्रयोगों को आकर्षित करने और अपने स्वयं के उपग्रहों को लांच करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। कर्नाटक भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का 50 प्रतिशत हिस्सा हासिल करना चाहता है। केरल ने केस्पेस और स्पेस पार्क की स्थापना की है।आंध्र प्रदेश ने एक स्पेस इनोवेशन सेंटर बनाया है। तेलंगाना ने स्पेसटेक फ्रेमवर्क बनाया है और तमिलनाडु कुलसेकरपट्टिनम स्पेसपोर्ट के पास स्पेस बे और एक प्रोपेलेंट पार्क स्थापित करने जा रहा है। गुजरात इनस्पेस के साथ साझेदारी में एक स्पेस क्लस्टर बना रहा है। अन्य राज्य भी अंतरिक्ष गतिविधियों का बढ़ावा दे रहे हैं।

राजौरी में एसओजी जवानों पर ग्रेनेड हमला, सेना को निशाना बनाने की साजिश

पुलवामा में प्रेशर कुकर आईईडी बरामद

राजौरी, 21 मार्च [एजेंसी]।

जम्मू-कश्मीर के राजौरी के थन्ना मंडी इलाके में आतंकियों ने ग्रेनेड हमला किया है। आतंकियों ने सेना को निशाना बनाने की साजिश रची थी। लेकिन उसके मंसूबे पर पानी फिर गया। इस घटना में किसी के घायल होने की खबर नहीं है। आज (वीरवार) देर रात राजौरी जिले की थन्ना मंडी तहसील के मनैयाल क्षेत्र में गश्त कर रहे स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप के जवानों के ऊपर ग्रेनेड हमला किया गया है, लेकिन ग्रेनेड के दूर गिरने से किसी भी प्रकार का कोई नुकसान नहीं हुआ है। इस घटना के बाद पुलिस व सेना के उच्च अधिकारी मौके पर पहुंच चुके हैं और पूरे क्षेत्र को घेर कर तलाशी अभियान को शुरू कर दिया है। बताया जा रहा है कि स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप के जवान क्षेत्र में वाहनों में सवार होकर गश्त कर रहे थे। इसी दौरान जंगल के अंदर से आतंकियों ने ग्रेनेड दाग दिया, लेकिन ग्रेनेड वाहनों से दूर आकर गिरा जिससे किसी भी प्रकार का कोई नुकसान नहीं हुआ है। धमाके की सूचना मिलते ही पुलिस व सेना के उच्च अधिकारी मौके पर पहुंच चुके हैं और पूरे क्षेत्र को घेर कर सुरक्षाबलों के जवानों ने आतंकियों की तलाश में बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान शुरू कर दिया है। यह क्षेत्र हमेशा ही आतंक ग्रस्त क्षेत्र रहा है। इस घटना के बाद से क्षेत्र के लोगों में डर का माहौल बना हुआ है। जम्मू-कश्मीर पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि राजौरी जिले में गुरुवार शाम को विस्फोट जैसी आवाज सुनी गई, लेकिन किसी नुकसान की खबर नहीं है। उन्होंने बताया कि यह आवाज थन्ना मंडी इलाके में तब सुनी गई जब स्थानीय पुलिस के विशेष अभियान समूह (एसओजी) की एक टीम शाम करीब साढ़े सात बजे ड्यूटी पर थी। विस्फोट की जांच की जा रही है और इलाके की घेराबंदी कर दी गई है। पुलिस इसको आतंकी हमले के एंगल से भी जोड़कर देख रही है।

सुरक्षाबलों ने दक्षिण कश्मीर के पुलवामा में गुरुवार को काकपोरा-संगम सड़क पर आतंकियों द्वारा लगाई गई आईईडी को बरामद कर निष्क्रिय कर दिया। संबंधित अधिकारियों ने बताया कि यह एक प्रेशर कुकर आईईडी थी, जो घट्ट टोकुन गांव से कुछ ही दूरी पर सड़क किनारे लगाई गई थी। इसका पता चलते ही बम निरोधक दस्ता मौके पर पहुंचा और उसने आईईडी को सुरक्षित तरीके से खोलकर उसे निष्क्रिय कर दिया। संबंधित अधिकारियों ने बताया कि निष्क्रिय की गई आईईडी की फॉरेंसिक जांच की जा रही है।

चीन-पाकिस्तान जैसे दुश्मन हो जाएं सावधान

भारत सरकार ने 54 हजार करोड़ के सैन्य उपकरणों की खरीद को दी मंजूरी

नईदिल्ली, 21 मार्च [एजेंसी]।

भारत सरकार ने गुरुवार को 54 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा कीमत के तमाम सैन्य उपकरणों की खरीद प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की स्वीकृति दे दी।तीनों सेनाओं की ताकत को मजबूती देने के लिए इनमें समयपूर्व हवाई हमले की चेतावनी और नियंत्रण (एईडब्ल्यूएंडसी) की अत्याधुनिक विमान प्रणाली, स्वदेशी वरुणास्त्र टारपीडो और टी-90 टैंक के ज्यादा ताकतवर इंजन समेत कई साजो-सामान शामिल हैं। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता वाली रक्षा खरीद परिषद (डीएसी) ने इन खरीद प्रस्तावों को स्वीकृति दी। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, डीएसी ने पूंजी अधिग्रहण प्रक्रिया यानी खरीदारी के विभिन्न चरणों की समयसीमा को कम करने के दिशानिर्देशों को भी स्वीकृति दी है, जिससे यह प्रक्रिया ज्यादा तेज, असरदार और कुशल हो जाए।

खरीदारी प्रक्रिया को ज्यादा असरदार बनाने का निर्णय 2025 को सुधारों के वर्ष के रूप में मनाने की रक्षा मंत्रालय की पहल के अनुरूप है। मंत्रालय ने बताया कि एईडब्ल्यूएंडसी विमान प्रणाली से वायुसेना की ताकत में इजाफा होगा। इससे लड़ाई के पूरे तरीके बदल सकते हैं और विभिन्न हथियारों वाली प्रणालियों से लड़ाई में ताकत कई गुणा बढ़ जाएगी।जबकि सेना में टी-90 टैंक के लिए मौजूदा 1,000 एचपी के इंजन की जगह 1,350 एचपी इंजन का अपग्रेड, विशेष रूप से ऊंचाई वाले इलाकों में वजन की तुलना में ताकत का अनुपात बढ़ाने से युद्ध के मैदान में इन टैंकों की रफ्तार बढ़ाएगा। मंत्रालय के अनुसार, भारतीय नौसेना के लिए जहाज से छोड़ी जा सकने वाली पनडुब्बी-रोधी टारपीडो वरुणास्त्र काफी महत्वपूर्ण साबित होगी। स्वदेश में बनी इस टारपीडो की ज्यादा संख्या पनडुब्बियों के खतरे से नौसेना को मजबूत बनाएगी।

कर्नाटक में माननीयों की बल्ले-बल्ले, 100प्रतिशत बढ़ेगी सीएम, मंत्रियों और विधायकों की सैलरी

बेंगलुरू, 21 मार्च [एजेंसी]।

कर्नाटक की आर्थिक हालत खराब है। सरकार चलाने के लिए फंड जुटाने में मुश्किल आ रही है। बिजली उपभोक्ताओं पर बोझ डाला जा रहा है। वहीं कर्नाटक सरकार ने मुख्यमंत्री, मंत्रियों और विधायकों का वेतन 100 प्रतिशत बढ़ाने को मंजूरी दे दी है। सरकार ने इससे संबंधित दो संशोधन विधेयकों को मंजूरी दे दी है। बताया जा रहा है कि विधेयकों में मुख्यमंत्री का वेतन 1,50,000 रुपये प्रति माह, मंत्री का वेतन 1,25,000 रुपये प्रति माह और विधायकों और एमएलसी का वेतन हजार रुपये प्रति माह करने का प्रस्ताव है। गृह मंत्री जी. परमेश्वर ने बढ़ते खर्चों का हवाला देते हुए बढ़ोतरी को उचित ठहराया। मंत्री एमबी पाटिल ने भी प्रस्ताव का बचाव करते हुए कहा कि विधायकों के वेतन और भत्ते बढ़ाने में कुछ भी गलत नहीं है। स्वतंत्र समिति की सिफारिश पर यह निर्णय लिया गया है। वहीं राज्य की वित्तीय चुनौतियों को मद्देनजर वेतन बढ़ोतरी को लेकर सवाल भी उठाए जा रहे हैं।कर्नाटक में बिजली उपभोक्ताओं को अधिक बिजली बिल चुकाना होगा। कर्नाटक विद्युत विनियामक आयोग (केईआरसी) ने बिजली की कीमतों में बढ़ोतरी कर उपभोक्ताओं को झटका दिया है। एक अप्रैल से बिजली पर प्रति यूनिट 36 पैसे अतिरिक्त अधिभार या सरचार्ज के रूप में देना होगा। यह कदम केईआरसी द्वारा बिजली आपूर्ति कंपनियों (ईएससीओएम) को पेंशन और ग्रेच्युटी (पीएंडजी) योगदान में सरकार का हिस्सा उपभोक्ताओं से वसूलने की अनुमति देने के बाद उठाया गया है। भाजपा ने इस फैसले जनविरोधी करार देते हुए विरोध किया है।

सरचार्ज एक अप्रैल 2025 से वित्त वर्ष 2027-28 तक लागू रहेगा। राज्य भाजपा अध्यक्ष बीवाई विजयेंद्र ने कहा कि जब से कर्नाटक में जनविरोधी कांग्रेस सरकार सत्ता में आई है, उसने जो एकमात्र गारंटी लागू की है वह महंगाई है। एक तरफ सरकार गारंटी (लोकलुभावन) योजनाएं लागू करने का दावा करती है, जबकि दूसरी तरफ लोगों पर महंगाई का बोझ डाल रही है।आईएएनएस के अनुसार चिकित्सा शिक्षा मंत्री शरण प्रकाश पाटिल ने कहा है कि बिजली की कीमतों में बढ़ोतरी का असर 85 प्रतिशत आबादी पर नहीं पड़ेगा, क्योंकि उन्हें गृह ज्योति योजना के तहत 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली मिलती है।

गोहत्या मामले में बार-बार अपराध करने वालों पर लगेगा मकोका, सीएम फडणवीस ने किया एलान

मुंबई। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने गुरुवार को विधानसभा में कहा कि गोहत्या और गो तस्करी के मामले में बार-बार अपराध करने वालों के खिलाफ महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम (मकोका) के तहत कठोर कार्रवाई की जाएगी। राकांपा के संग्राम जगताप ने कही ये बातराकांपा के संग्राम जगताप ने ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के जरिये इस मुद्दे को उठाया और कई ऐसे मामलों में आरोपित अतीक कुरैशी का जिक्र करते हुए कड़ी कार्रवाई की मांग की।गृह राज्य मंत्री (ग्रामीण) पंकज भोयर ने आश्वासन दिया कि कुरैशी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उसके खिलाफ अहिल्यानगर जिले में गो तस्करी के 20 मामले दर्ज हैं। मंत्री ने कहा कि उसे 20 जनवरी को गिरफ्तार किया गया था और एक मार्च को जमानत पर छोड़ दिया गया।

434 दिन बाद अंतरिक्ष से लौटा अमेरिका का गुप्त विमान, जल्द विवरण आएंगे सामने

नईदिल्ली, 21 मार्च [एजेंसी]।

अमेरिकी का सीक्रेट अंतरिक्ष विमान एक्स-37बी 434 दिनों के मिशन के बाद पृथ्वी पर वापस लौट आया है। इसके मिशन के विवरण अभी गुप्त हैं, लेकिन अमेरिकी स्पेस फोर्स इसे एक्स-37बी कार्यक्रम में एक नए और रोमांचक अध्याय की शुरुआत के रूप में देख रही है।यूएस स्पेस फोर्स के प्रमुख जनरल चांस साल्टजमैन ने कहा है कि मिशन 7 ने एक्स-37बी की क्षमता को प्रदर्शित किया कि वह विभिन्न कक्षाओं में अपने परीक्षण और प्रयोग के लक्ष्यों को आसानी से पूरा कर सकता है। विमान को स्पेसएक्स के फाल्कन हैवी रॉकेट से लांच किया गया था। लॉन्चिंग के लिए नासा के फ्लोरिडा स्थित केनेडी स्पेस सेंटर का इस्तेमाल किया गया। पिछली बार यह विमान अंतरिक्ष में 908 दिन बिताकर कैनेडी स्पेस सेंटर पर 12 नवंबर 2022 को उतरा था।पहली बार किसी रोबोटिक विमान ने अंतरिक्ष में 908 दिन बिताए थे। यह एक रिकॉर्ड था। यूएस स्पेस फोर्स के पास वर्तमान में दो एक्स-37 बी अंतरिक्ष विमान हैं, अंतरिक्ष मिशन को अंजाम देने में सक्षम हैं।

चैटजीपीटी पर झूठी जानकारी फैलाने का इल्ज़ाम नॉर्वे के शख्स की छवि को नुकसान पहुंचाने का आरोप

वियना। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की दुनिया में ओपनएआई का चैटजीपीटी अपनी लोकप्रियता के साथ-साथ विवादों में भी घिरता जा रहा है। गोपनीयता की सुरक्षा के लिए काम करने वाले एक संगठन ने ओपनएआई के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है, जिसमें आरोप है कि चैटजीपीटी ने नॉर्वे के एक व्यक्ति के बारे में मनगढ़ंत और झूठी कहानी बना दी।वियना स्थित गोपनीयता अभियान समूह नोयब ने गुरुवार को जारी बयान में बताया कि चैटजीपीटी ने नॉर्वे के अर्वे हजलमर होल्मेन को एक अपराधी के रूप में पेश किया, जो अपने ही बच्चों की हत्या में दोषी था। इस झूठी कहानी में उनके निजी जीवन के वास्तविक तथ्यों को भी शामिल किया गया, जिससे यह और अधिक भयावह हो गया। नोयब का कहना है कि यह कोई पहला मामला नहीं है। चैटजीपीटी पर पहले भी ऐसे आरोप लगे हैं कि वह गलत जानकारी देता है, जिससे लोगों की छवि धूमिल हो सकती है। संगठन ने इस बात पर जोर दिया कि ओपनएआई के पास अपने सिस्टम से इस तरह की गलत जानकारियों को सुधारने का कोई उचित तरीका नहीं है। जब हजलमर होल्मेन ने यह जानना चाहा कि चैटजीपीटी उनके बारे में क्या जानकारी रखता है, तो उन्हें एक चौंकाने वाली बात पता चली। चैटबॉट ने उन्हें एक सजायाफ्ता अपराधी के रूप में दिखाया, जिसने अपने दो बच्चों की हत्या कर दी और तीसरे की हत्या का प्रयास किया।इस गलत जानकारी से हजलमर होल्मेन को गहरी चिंता हुई। उन्होंने कहा, कुछ लोग मानते हैं कि बिना आग के धुआं नहीं उठता। यह विचार कि कोई इस झूठ को पढ़कर इसे सच मान सकता है, यही सबसे डरावनी बात है। नोयब ने नॉर्वेजियन डेटा प्रोटेक्शन अथॉरिटी (डेटाटिल्सिनेट) के समक्ष शिकायत दर्ज कराई है, जिसमें ओपनएआई को गलत जानकारी को सुधारने और ऐसे झूठे आउटपुट को सिस्टम से पूरी तरह हटाने का आदेश देने की मांग की गई है। इसके अलावा, समूह चाहता है कि ओपनएआई पर इस लापरवाही के लिए जुर्माना भी लगाया जाए। नोयब के डेटा संरक्षण वकील जोआकिम सोएडरबर्ग का कहना है कि यूरोपीय संघ के कानूनों के तहत, किसी भी व्यक्ति की निजी जानकारी सटीक होनी चाहिए। यदि जानकारी गलत पाई जाती है, तो व्यक्ति को इसे सही करवाने का पूरा अधिकार है। उन्होंने यह भी कहा कि चैटजीपीटी पर दिखने वाला यह छोटा-सा अस्वीकरण कि चैटबॉट गलतियां कर सकता है पर्याप्त नहीं है।

कनाडा का आरोप, चीन ने चार कनाडाई नागरिकों को दी मौत की सजा

टोरंटो। कनाडा की विदेश मंत्री ने बुधवार को कहा कि चीन ने हाल के महीनों में चार कनाडाई नागरिकों को मौत की सजा दी है। विदेश मंत्री मेलानी जोली ने कहा कि उन्होंने दोहरी नागरिकता वाले लोगों से जुड़े नशीले पदार्थों से संबंधित आरोपों में क्षमादान की मांग की है।जोली ने कहा कि हम सजा की कड़ी निंदा करते हैं। मैंने व्यक्तिगत रूप से नरमी बरतने की मांग की है। उधर ओटावा में बीजिंग के दूतावास ने कहा कि चीन दोहरी नागरिकता को मान्यता नहीं देता। वैश्विक मामलों की प्रवक्ता शार्लोट मैकलियोड ने कहा कि वे परिवारों को कांसुलर सहायता प्रदान करना जारी रखते हैं और अनुरोध करते हैं कि मीडिया उनकी गोपनीयता का सम्मान करे। उन्होंने कहा कि ओटावा राबर्ट शेलेनबर्ग के लिए क्षमादान की वकालत करना जारी रखेगा, जो एक कनाडाई नागरिक है और जिसे ड्रग तस्करी के लिए मौत की सजा सुनाई गई थी।

बकाएदार को पकड़कर तहसील में लाया गया, पीछे से पहुंचे मां-बेटे ने कर दी ऐसी हरकत, दंग रह गए अधिकारी

फिरोजाबाद, 21 मार्च [एजेंसी]।

बैंक ऋण के लाखों के बकाए पर पकड़कर लाए गए बकाएदार की पत्नी और बेटे ने गुरुवार सुबह तहसील परिसर में आत्मदाह का प्रयास किया। आग लगने से पूर्व वहां खड़े अधिवक्ता ने उनके हाथ से माचिस छीन ली। घटना से तहसील प्रशासन के हाथ-पैर फूल गए। बाद में पुलिस ने दोनों के विरुद्ध शांतिभंग की कार्रवाई की है। इस घटनाक्रम के बाद तहसील प्रशासन ने बकाएदार को भी छोड़ दिया।गांव रुधऊ मुस्तकिल निवासी पोप सिंह ने सेंट्रल बैंक से आठ वर्ष पूर्व 1.15 लाख रुपये का ऋण लिया था। जमा न करने पर गुरुवार सुबह संग्रह अमीन उनके घर पहुंचे और पोप सिंह को पकड़कर तहसील ले आए। 10.30 बजे उनके पीछे-पीछे पत्नी शिव देवी और बेटा प्रताप सिंह केरोसिन आयल की कट्टी लेकर तहसील पहुंच गए। वहां उन्होंने एसडीएम न्यायालय के सामने पार्क में अपने ऊपर केरोसिन डाल लिया। वह आग लगाने के लिए माचिस जला रहे थे। इसी दौरान वहां से गुजर रहे अधिवक्ता गणेश कुमार ने देख लिया। उन्होंने हाथ मारकर कट्टी को गिरा दिया और माचिस छीन ली। उन्होंने शोर मचाया तो भीड़ जुट गई। तहसील कर्मी दोनों एक कमरे में ले गए और कमरा बंद कर लिया। वहां उनसे काफी देर पूछताछ की।

घटना की जानकारी अधिकारियों को दी गई। मौके पर पहुंची डाक्टरों की टीम ने दोनों की जांच की। कपड़े बदलवाने के बाद मां-बेटे के साथ पोप सिंह को भी थाने भेज दिया गया। इस संबंध में एसडीएम अनुराधा सिंह ने बताया कि पोप सिंह पर लगभग तीन लाख रुपये का बकाया है। नोटिस के बाद भी जमा नहीं कर रहा था। गुरुवार सुबह जब टीम घर पहुंची तो प्रताप सिंह ने अमीन के साथ अभद्रता कर दी।

बेटा कह रहा था कि पहले अंबानी और अणानी का बैंक ऋण जमा कराओ, तब हमारे पास आना। मां-बेटे ने बिना किसी से मिले अपने ऊपर केरोसिन डाल लिया। एसडीएम का ये भी कहना था कि टीम बकाएदार को पकड़कर नहीं लाई थी। वह स्वयं आया था। बाद में उसे घर भेज दिया गया। इंस्पेक्टर अंजीश कुमार का कहना है कि मां-बेटे के विरुद्ध शांतिभंग की धाराओं में कार्रवाई की गई है।

ढाई लाख की रिश्वत लेते दिल्ली पुलिस का सब-इंस्पेक्टर अरेस्ट यहां पर कर रहा था सीक्रेट डील, तभी आ धमके सीबीआई अफसर

नईदिल्ली, 21 मार्च [एजेंसी]।

केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने नवी मुंबई के एक टूर ऑपरेटर का नाम एक मामले से हटाने के लिए हवाला ऑपरेटरों के जरिए 2.5 लाख रुपये की रिश्वत लेने के आरोप में दिल्ली पुलिस के एक सब-इंस्पेक्टर को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने गुरुवार को यह जानकारी दी। जांच एजेंसी ने यहां रोहिणी के साइबर पुलिस स्टेशन में तैनात राहुल मलिक को मुंबई, तमिलनाडु के इरोड और दिल्ली स्थित कई हवाला ऑपरेटरों के माध्यम से कारोबारी से मांगे गए कुल 14 लाख रुपये में से 2.5 लाख रुपये की किस्त स्वीकार करने के आरोप में गिरफ्तार किया। कारोबारी ने मलिक के खिलाफ शिकायत लेकर सीबीआई का दरवाजा खटखटाया था।शख्स ने कहा कि उसका कैश मैनेजमेंट सिस्टम से जुड़ी एक निजी कंपनी के साथ कारोबारी संबंध है, लेकिन बाद में उसे पता चला कि उसे दिए गए वर्चुअल वॉलेट के लिए लॉगिन क्रेडेंशियल फर्जी नाम से बनाए गए थे। सीबीआई प्रवक्ता ने एक बयान में कहा, निजी कंपनी से जुड़ा मामला साइबर पुलिस स्टेशन, रोहिणी, दिल्ली में दर्ज एफआईआर में जांच के दायरे में था।

बयान में कहा गया है कि मामले की जांच कर रहे मलिक ने कथित तौर पर व्यवसायी के साले को नोटिस जारी किया था, जो जांच में शामिल हुए और जब वे जांच के लिए उनके सामने पेश हुए, तो आरोपी ने उन्हें गिरफ्तार करने की धमकी दी। बयान में कहा गया है, यह भी आरोप लगाया गया है कि 7 मार्च 2025 को मामले के आरोपी एसआई/आईओ (मलिक) नवी मुंबई में शिकायतकर्ता के घर गए और मामले से उनका और उनके साले का नाम हटाने के लिए 50 लाख रुपये की रिश्वत मांगी, नहीं तो उन्हें गिरफ्तार करने की धमकी दी।÷अगले दिन मलिक ने व्यवसायी को मुंबई के घोड़बंदर रोड स्थित एक होटल में मिलने के लिए बुलाया, जहां उसने कथित तौर पर अपने मोबाइल पर 16 लाख रुपये की राशि टाइप करके रिश्वत मांगी और भुगतान न करने पर परिणाम देखने की धमकी दी। जब कारोबारी अपने वकील के साथ रोहिणी पुलिस स्टेशन गया तो धमकियां जारी रहीं। बातचीत के बाद मलिक 14 लाख रुपये की रिश्वत लेने के लिए तैयार हो गया। उसने कथित तौर पर मुंबई में एक हवाला ऑपरेटर का नंबर और हवाला टोकन नंबर का विवरण दिया, जिस पर कथित रिश्वत का भुगतान किया जाना था। सीबीआई के बयान में कहा गया है, इसके अनुसार, 19 मार्च, 2025 को सीबीआई द्वारा एक ट्रैप डाला गया, जिसमें हवाला ऑपरेटर ने मुंबई, इरोड (तमिलनाडु) और नई दिल्ली में स्थित कई हवाला ऑपरेटरों के माध्यम से रिश्वत के भुगतान के रूप में लोक सेवकों की ओर से मुंबई में 2.5 लाख रुपये की रिश्वत स्वीकार की। मलिक को जांच का सामना करने के लिए मुंबई ले जाया जाएगा।

ट्रेन में किन्नरों ने मांगे पैसे, नहीं देने पर युवक को पीट-पीट कर मार डाला, शव को चलती ट्रेन से फेंका

विदिशा। गोंडवाना एक्सप्रेस ट्रेन के अंदर मध्य प्रदेश के विदिशा के युवक की किन्नरों ने रुपये न देने पर पीटकर हत्या कर दी और शव को गंजबासौदा में नीचे फेंक दिया। ट्रेन के अंदर युवक की पिटाई का वीडियो बहुप्रसारित हुआ तो उसके स्वजन को सच्चाई का पता चला। वीडियो में कुछ किन्नर युवक को बर्थ से नीचे गिराकर उसके ऊपर कूदते दिख रहे हैं। कपड़े उतारकर उसके ऊपर बैठ रहे हैं। 13 मार्च को अंजाम दी गई वारदात में हत्या का मुकदमा दर्ज करने की मांग स्वजन ने पुलिस अधीक्षक से की है।युवक की पहचान विदिशा की अयोध्या बस्ती के आदर्श विश्वकर्मा के रूप में हुई है। गुरुवार को उसके भाई सोहन ने स्वजन के साथ पुलिस अधीक्षक को बताया कि आदर्श भोपाल में हमीदिया रोड पर इलेक्ट्रिक दुकान में काम करता था। वह ट्रेन से भोपाल और विदिशा आता-जाता था। स्वजन ने कहा है कि 13 मार्च की रात आदर्श भोपाल से गोंडवाना एक्सप्रेस से विदिशा घर लौट रहा था, तभी भोपाल से ट्रेन में चढ़े किन्नरों ने सलामतपुर, सांची के पास उससे रुपये मांगे। आदर्श ने इनकार किया तो किन्नरों ने उसकी जेब में हाथ डाल दिया। उसने विरोध किया तो आठ से 10 किन्नरों ने उस पर हमला कर पिटाई शुरू दी।ट्रेन विदिशा में रुकी तो उसे उतरने भी नहीं दिया और गंजबासौदा के पास पवई तरफ ट्रेन से नीचे फेंक दिया। स्वजन अगले दिन गंजबासौदा पहुंचे। वहां जीआरपी से पता चला कि पवई के पास शव पड़ा है।

हेमंत सोरेन की भाभी के खिलाफ रांची कोर्ट में शिकायत, किडनैपिंग से जुड़ा है मामला

रांची। रांची मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी की अदालत में पूर्व विधायक सीता सोरेन सहित पांच लोगों के खिलाफ रीना घोष ने शिकायत दर्ज कराया है।शिकायत में सीता सोरेन के साथ उनका सुरक्षाकर्मी अर्जुन कुशवाहा, विवेक सिंह, विवेक सिंह की बहन और रिंकू शाहदेव का नाम शामिल है। अदालत ने मामले की सुनवाई के लिए 28 अप्रैल की तिथि निर्धारित की है। उस दिन शिकायतकर्ता का बयान दर्ज किया जाएगा। आरोप लगाया गया है कि उसका भाई देवाशीष घोष सीता सोरेन के साथ निजी सचिव के रूप में कई वर्षों से काम कर रहा था। पिछले विधानसभा चुनाव में सीता सोरेन भाजपा की टिकट पर जामताड़ा से प्रत्याशी थीं। वह चुनाव हार गईं। इस हार के बाद सीता सोरेन देवाशीष घोष पर दबाव बनाने लगी कि चुनाव में बहुत खर्च कर दिए हो। सब तुम्हें वापस करना पड़ेगा। इसी क्रम में एक षड्यंत्र के तहत सीता सोरेन अपने चार सहयोगियों के साथ योजना बनाकर सात मार्च 2025 को देवाशीष घोष का अपहरण कर धनबाद सराय ढेला स्थित सोनोटेल होटल में ले गई और जानलेवा हथियार सटाकर उससे गाड़ी की चाबी, जमीन का दस्तावेज और एटीएम कार्ड सब छीन लिया।यह भी आरोप है कि हथियार के बल पर उसने अपने बैंक खाते में तीन लाख भी जमा करवा लिया। इसके अलावा उसके गाड़ी में रखे एक्सिस बैंक का चेक भी ले लिया। साथ ही गाड़ी ट्रांसफर से संबंधित फार्म 29 और 30 पर जबरदस्ती हस्ताक्षर कराया गया।शिकायतवाद में यह भी आरोप है कि एक फर्जी पिस्तौल रखकर देवाशीष घोष के खिलाफ सरायढेला थाना में प्राथमिकी दर्ज करा कर उसे जेल भेजा गया।इस घटना की जानकारी मिलने पर शिकायतकर्ता रीना घोष ने रांची के डीटीओ आफिस, जमीन रजिस्ट्री ऑफिस तथा एक्सिस बैंक में आवेदन देकर गाड़ी के ट्रांसफर, जमीन के ट्रांसफर और चेक राशि के हस्तांतरण पर रोक लगाई है। वहीं, दूसरी ओर रांची के बड़गाई अंचल के 8.46 एकड़ जमीन घोटाले में आरोपितों को पुलिस पेपर सौंपा जाना है।

वरुण ग्रोवर ने सुपरबॉयज़ ऑफ मालेगांव में मंजरी पुपाला के बेहतरीन अभिनय की प्रशंसा की

मुंबई। रीमा कागती द्वारा निर्देशित सुपरबॉयज़ ऑफ मालेगांव में मंजरी पुपाला तृप्ति का किरदार निभाने को लेकर खूब तारीफें बटोर रही हैं। उनके सबसे बड़े प्रशंसकों में से एक फिल्म के लेखक वरुण ग्रोवर हैं, जिनका मानना है कि मंजरी ने किरदार को उल्लेखनीय गहराई और आकर्षण के साथ जीवंत कर दिया है। उनके अभिनय के बारे में अपने विचार साझा करते हुए ग्रोवर ने कहा, जब मैंने स्क्रिप्ट लिखी थी, तो हमें एक ऐसी शख्सियत की जरुरत थी, जो भावपूर्ण तो हो ही, लेकिन उनमें एक छिपी हुई परत भी हो। हम चाहते थे कि इस किरदार को निभाने वाला हर बार इन बारीकियों को समझे। और तृप्ति एक ऐसी ही शख्सियत हैं। मंजरी ने यह बेहतरीन ढंग से किया। मैं उनका बहुत आभारी हूँ कि हमें इस भूमिका के लिए वे मिल गईं। उन्होंने इन बारीकियों और संतुलन के साथ बेहतरीन काम किया है। पहले ही दृश्य में, वे इतनी प्यारी और मजेदार हो जाती हैं कि आप पूरे समय उनके साथ रहते हैं। तृप्ति के बेमिसाल एक्सटीरियर और उनकी गहरी भावनाओं के बीच संतुलन बनाने की मंजरी की क्षमता ने दर्शकों को बेहद प्रभावित किया है। प्रशंसक फिल्म में ताजगी भरी ऊर्जा जोड़ने और अपने किरदार की जटिलताओं को सहजता से पकड़ने के लिए उनकी खूब तारीफें कर रहे हैं। सुपरबॉयज़ ऑफ मालेगांव ने पहले ही दिल जीत लिया है। यह भी स्पष्ट है कि मंजरी पुपाला ने बॉलीवुड में एक अविस्मरणीय शुरुआत की है, एक ऐसी शुरुआत जिसकी कल्पना फिल्म के लेखक ने भी इससे बेहतर नहीं की होगी।

कन्याकुमारी जा रहे हैं तो इन जगहों को जरूर करें एक्सप्लोर, यादगार होगा एक्सपीरियंस

आप दक्षिण भारत में बसा कन्याकुमारी शहर एक्सप्लोर कर सकते हैं। कन्याकुमारी में आपको प्राकृतिक खूबसूरती, प्रकृति, संस्कृति और आध्यात्म का अनोखा संगम देखने को मिलेगा। आज इस हम आपको कन्याकुमारी की कुछ फेमस जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं।

घूमने का शौक रखने वाले लोग हमेशा नई-नई जगह पर जाना चाहते हैं। अगर आप भी घूमने की शौकीन हैं, तो आप दक्षिण भारत घूमने का प्लान बना सकते हैं। वैसे तो दक्षिण भारत में ऐसी तमाम जगह हैं, जहां पर आप घूमने के लिए पहुंच सकते हैं। आप दक्षिण भारत में बसा कन्याकुमारी शहर एक्सप्लोर कर सकते हैं। कन्याकुमारी में आपको प्राकृतिक खूबसूरती, प्रकृति, संस्कृति और आध्यात्म का अनोखा संगम देखने को मिलेगा। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कन्याकुमारी की कुछ फेमस जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर आप घूमने के दौरान अपने एक्सपीरियंस को यादगार बना सकते हैं।

विवेकानंद रॉक मेमोरियल

कन्याकुमारी आने के दौरान आपको विवेकानंद रॉक मेमोरियल जरूर आना चाहिए। यह मेमोरियल समुद्र के बीच स्थित एक विशाल चट्टान पर बना है। यह स्थान स्वामी विवेकानंद के जीवन और योगदान को समर्पित है। उन्होंने साल 1892 में इस स्थान पर ध्यान लगाया था। आप यहां पर नांव से पहुंच सकते हैं और एक अलग तरह का एक्सपीरियंस ले सकते हैं।

तिरुवल्लुवर स्टैच्यू

कन्याकुमारी में आप तिरुवल्लुवर स्टैच्यू को देखना न भूलें। यह विशाल प्रतिमा तमिल साहित्य के महान कवि और संत रहे तिरुवल्लुवर को समर्पित है। तिरुवल्लुवर ने तिरुक्कुरल नामक ग्रंथ की रचना की थी।

महाव कवि और संत रहे तिरुवल्लुवर की प्रतिमा कन्याकुमारी तट के समीप समुद्र के बीच स्थित है। यह अपनी अद्भुत और वास्तुकला के लिए जाना जाता है। यहां तक पहुंचने के लिए आपको कन्याकुमारी तट से नाव की सवारी करनी पड़ती है।

पद्मनाभपुरम पैलेस

कन्याकुमारी जाने के दौरान आपको पद्मनाभपुरम पैलेस जरूर एक्सप्लोर करना चाहिए। यह पैलेस त्रावणकोर साम्राज्य की शाही विरासत को दर्शाता है और इसकी वास्तुकला भव्य है। तिरुवनंतपुरम से करीब 60 किमी और कन्याकुमारी से 30 किमी दूरी पर स्थित है।

स्ट्रीट फूड का लें स्वाद

कन्याकुमारी न सिर्फ अपनी प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक धरोहर के लिए जाना जाता है। बल्कि यहां पर आपको स्थानीय व्यंजन का भी लुत्फ उठा सकते हैं। दक्षिण भारतीय मसाले, नारियल और समुद्री खाना अपने अनोखे स्वाद के लिए जाना जाता है।

कन्याकुमारी के बाजारों और रेस्तरां में आप पारंपरिक व्यंजनों का एक्सपीरियंस ले सकते हैं। यहां का खाना स्वाद और सादगी से भरपूर होता है।

अगर आप कुछ डिफरेंट ट्राई करना चाहते हैं, तो नारियल पानी और केले के चिप्स जरूर खाएं।

कन्याकुमारी देवी मंदिर

बता दें कि कन्याकुमारी की पहचान कन्या कुमारी देवी मंदिर भारत के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक माना जाता है। हिंदू धर्म में यह मंदिर आस्था का केंद्र है और यह मंदिर देवी कन्याकुमारी को समर्पित है।

कन्याकुमारी को शक्ति और सादगी का प्रतीक माना जाता है।

इस मंदिर का आध्यात्मिक और ऐतिहासिक महत्व के अलावा इसके खूबसूरत वास्तुकला हर भक्त औऱ पर्यटक के लिए बेहद खास है। अगर आप भी यहां जाने का प्लान बना रहे हैं, तो सुबह 04.30 से लेकर 12.30 तक और शाम को 04.00 बजे से रात 08.00 बजे तक जा सकते हैं।

हिन्दी का विरोध और कमाई के लिए डब करते हैं फिल्में तमिलनाडु भाषा विवाद में पवन कल्याण की एंट्री

भाषा विवाद में उतरते हुए आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने तमिलनाडु पर पाखंड का आरोप लगाते हुए कहा कि इसके नेता वित्तीय लाभ के लिए तमिल फिल्मों को हिंदी में डब करने की अनुमति देते हैं, लेकिन भाषा का विरोध करते हैं। अपनी पार्टी के स्थापना दिवस पर बोलते हुए जनसेना प्रमुख ने कहा कि देश की अखंडता के लिए भारत को तमिल सहित कई भाषाओं की आवश्यकता है।

जनसेना नेता ने कहा, तमिलनाडु में लोग हिंदी थोपे जाने का विरोध करते हैं। इससे मुझे आश्चर्य होता है कि अगर वे हिंदी नहीं चाहते तो वित्तीय लाभ के लिए तमिल फिल्मों को हिंदी में क्यों डब करते हैं? वे बॉलीवुड से पैसा चाहते हैं लेकिन हिंदी को स्वीकार करने से इनकार करते हैं। यह कैसा तर्क है?

कल्याण ने इस बात पर भी जोर दिया कि तमिलनाडु की ओर से उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे हिंदी भाषी राज्यों से आए मजदूरों का स्वागत करना और उनकी भाषा को अस्वीकार करना अनुचित है। तमिलनाडु में हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल से बड़ी संख्या में प्रवासी मजदूर रहते हैं, एक सर्वेक्षण के अनुसार यह संख्या 15.20 लाख के बीच है।

उन्होंने आगे कहा, वे उत्तर प्रदेश, बिहार और छत्तीसगढ़ जैसे हिंदी भाषी राज्यों से राजस्व चाहते हैं, फिर भी वे कहते हैं कि उन्हें हिंदी नहीं चाहिए। क्या यह अनुचित नहीं है? वे बिहार से आने वाले श्रमिकों का स्वागत करते हैं, लेकिन भाषा को अस्वीकार करते हैं। यह विरोधाभास क्यों है? क्या इस मानसिकता को नहीं बदलना चाहिए?

कल्याण की टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र और डीएमके शासित तमिलनाडु के बीच नई शिक्षा नीति के एक हिस्से तीन-भाषा फार्मूले को लेकर तीखी नोकझोंक चल रही है।

विवाद तब और बढ़ गया जब केंद्र ने तमिलनाडु की समग्र शिक्षा योजना के लिए 2,152 करोड़ रुपये रोक दिए, क्योंकि राज्य ने एनईपी को लागू करने से इनकार कर दिया था। तमिलनाडु लंबे समय से तीन-भाषा फॉर्मूले को राज्य पर हिंदी थोपने के प्रयास के रूप में देखता रहा है, जबकि केंद्र का कहना है कि इस नीति का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि युवाओं को सभी क्षेत्रों में रोजगार मिले।

ओपनिंग डे पर सिर्फ 4 करोड़ के आंकड़े को छू पाई द डिप्लोमैट

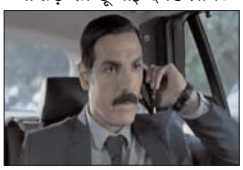

जॉन अब्राहम की हालिया रिलीज द डिप्लोमैट बॉक्स ऑफिस पर छाप तुफान के बावजूद अपनी पकड़ बनाए हुए है। होली के दिन रिलीज हुई इस फिल्म ने वास्तविक जीवन की घटनाओं पर आधारित अपने पहले दिन अच्छी कमाई की। ट्रेड वेबसाइट सैकनिल्क के अनुसार, द डिप्लोमैट ने 14 मार्च को 4 करोड़ रुपये की सम्मानजनक कमाई की।

फिल्म की शुरुआत होली के साथ हुई, जिससे इसकी शुरुआत प्रभावित हो सकती है। फिल्म को केवल 20.45 प्रतिशत दर्शक मिले। वीकेंड के करीब आने के साथ ही फिल्म की कमाई में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है। हालांकि, सिनेमाघरों में हफ्तों तक टिके रहने के बावजूद बॉक्स ऑफिस पर छावा ने बेहतर कलेक्शन दर्ज किया। लक्ष्मण उटेकर द्वारा निर्देशित विक्की कौशल अभिनीत इस फिल्म ने अपने पांचवें शुक्रवार को 7.25 करोड़ रुपये कमाए, जो इसकी निरंतर लोकप्रियता को दर्शाता है। शिवम नायर द्वारा निर्देशित, द डिप्लोमैट सच्ची घटनाओं पर आधारित है और इसमें उज़मा अहमद की कहानी है, जिसका किरदार सादिया खतीब ने निभाया है, जो शादी के धोखे में पाकिस्तान में फंसी एक भारतीय महिला है। जॉन अब्राहम ने जे पी सिंह की भूमिका निभाई है, जो भारतीय राजनयिक है और उसे बचाने में अहम भूमिका निभाता है।

एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया ने बताया, क्यों खास है फिल्म 'ओडेला 2

बॉलीवुड एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया ने अपनी अपकमिंग फिल्म 'ओडेला 2' के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि यह फिल्म सुपरनेचुरल बैकड्रॉप और आध्यात्मिक पहलू के साथ बनाई जा रही है।

एक्ट्रेस ने यह भी कहा है कि यह फिल्म आज के समाज में आने वाली समस्याओं पर केंद्रित होगी। ओडेला 2 के बारे में बात करते हुए तमन्ना ने बताया, यह एक फैंटेसी मूवी है और इसे थिएटर में देखना अनुभव शानदार है। इसमें सुपरनेचुरल बैकड्रॉप और थोड़ा सा आध्यात्मिक पहलू भी है। इन सभी चीजों ने मुझे बहुत आकर्षित किया।

अभिनेत्री ने कहा कि उन्हें ऐसी फिल्में पसंद हैं क्योंकि वे लार्जर दैन लाइफ होती हैं। उन्होंने कहा, मुझे इस तरह का सिनेमा पसंद है, क्योंकि बचपन में मुझे ऐसी फिल्में पसंद थीं, जो लार्जर दैन लाइफ होती हैं और आपको एक अलग दुनिया में ले जाती हैं। मुझे पता चला कि फिल्म का टीजर पहली बार काशी में लॉन्च किया गया था।

उन्होंने आगे बताया कि फिल्म आज के समय की समस्याओं पर केंद्रित है। एक्ट्रेस ने कहा, यह आज हमारे लिए कुछ हद तक प्रासंगिक है, यह उन मुद्दों और समस्याओं से संबंधित है, जिनका हम आज एक समाज के रूप में सामना करते हैं। यह अंत में आपको बहुत बड़ा और सशक्त संदेश देती है।

तमन्ना ने कहा, मुझे लगता है कि फिल्मों को ऐसा ही करना चाहिए। उन्हें आपको उम्मीद देनी चाहिए, क्योंकि यही कारण है कि मैंने एक्ट्रेस बनने का निर्णय लिया। मैं एक्ट्रेस इसलिए बनी, क्योंकि इसने मुझे आशावादी बनाया। यह फिल्म भी लोगों को यही एहसास दिलाएगी। बता दें कि ओडेला 2 अशोक तेजा द्वारा निर्देशित एक थ्रिलर फिल्म है। फिल्म में तमन्ना भाटिया, हेबाह पटेल, वशिष्ठ एन. सिम्हा भी मुख्य भूमिकाओं में हैं। इसके साथ ही नागा महेश, वामसी, गगन विहारी, सुरेंदर रेड्डी, भूपाल और पूजा रेड्डी भी अहम किरदारों में हैं।

समीरा रेड्डी ने की वेट ट्रेनिंग के बारे में अपनी गलतफहमी पर बात

समीरा रेड्डी ने वेट ट्रेनिंग यानी वजन उठाने को एक्सरसाइज को लेकर अपनी गलतफहमी के बारे में बताया। समीरा रेड्डी ने मैंने दिल तुझको दिया, रेस और मुसाफिर जैसी फिल्मों में काम किया है। उन्होंने फिटनेस के लिए कई बार वेट ट्रेनिंग की है।

समीरा इन दिनों भी अपनी फिटनेस पर ध्यान दे रही हैं। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर एक वीडियो साझा किया, जिसमें वह जिम में लैंडमाइन सुमो रन्ट्स करती दिख रही हैं।

उन्होंने कैप्शन में लिखा डू एक फॉलोअर ने पूछा कि क्या मैंने आज वर्कआउट किया? अब जब सवाल आया तो मुझे सबूत भी दिखाना पड़ा।

समीरा ने आगे बताया कि उन्हें हमेशा लगता था कि वजन उठाने से शरीर भारी और मोटा हो जाता है, लेकिन असल में यह सिर्फ एक भ्रम है। हकीकत में, वजन उठाने से मांसपेशियां मजबूत होती हैं, मेटाबॉलिज्म तेज होता है और शरीर की ताकत बढ़ती है, और मोटापा नहीं बढ़ता है।

शब्द सामर्थ्य -359

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं :

1. पानी, नीर, अंबु 2. आना-जाना, आवागमन 5. बहुत, बढ़िया 6. दूर रहने वाला (घटना) जो वर्तमान में न घट सके 8. अबोध, नासमझ, अनाड़ी 10. सब्जी, शाक 11. निशान, उद्देश्य, अनुमान योग्य वस्तु 12. नाखून 13. द्रव पदार्थ 15. सूनसान, जनविहीन स्थान 16. चटकीला, चमकीला, चटपटा, गरिया 18. भगवान, खुदा 19. इन दिनों, वर्तमान दिनों में 20. अग्नि, पावक 21. अन्नकण, अनाज का दुकड़ा 22. टालमटोल, बहाने बाजी 24. भैया की पत्नी 25. पांच से छोटी एक विषम संख्या 26. हत्या, कत्ल.

ऊपर से नीचे

1. दुनिया, संसार, ठोस रूप में परिवर्तित करना 2. चमक, पानी 3. बाजीगर, जादू का खेल दिखाने वाला 4. एक पंजाबी प्रेमगीत, रांझा की प्रेमिका 5. मार-काट, खून-कत्ल 7. भूमि, जमीन, भू-भाग 9. बहुत बड़ा दानी, 10. संगीत के सुरों की संख्या 14. लचीला, लोचयुक्त 17. खिसकना, अपने स्थान से हटना, विचलित होना 19. प्रवेश करना, पधारना, आना 20. धूप-दीप से पूजा 22. इसी समय 23. गुस्सा, कहर.

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 358 का हल

स्वा	द		सा	म	ना		कै	दी
च		ख	ल	ना	य	क		वा
लं	प	ट		ना	क	क	ट	ना
बी		प				ड़ी		प
	अ	ट	प	टा			शा	न
स	ह		यो			र	ति	
ह	म		द	र	ब	द	र	
म	क	र		सी	ल			
त		क्षा		द	चा	खा	ना	

टेड़गा तालाब को अमृत सरोवर बनाने में सफलता, कमाई का माध्यम मिला

कोरिया बैकुंठपुर। जल संरक्षण और ग्रामीण विकास का उत्कृष्ट उदाहरण बन चुका है टेड़गा तालाब, जिसे महात्मा गांधी नरेगा के तहत मिशन अमृत सरोवर में पुनर्जीवित किया गया। अब यह सिर्फ जल संग्रहण का स्त्रोत नहीं, बल्कि सिंचाई, मत्स्य पालन और ग्रामीण आजीविका का मजबूत आधार बन गया है।

तालाब पुनरोद्धार से बहुआयामी लाभ

कोरिया जिले के सोनहत जनपद के ग्राम पुसला में स्थित टेड़गा तालाब, देखरेख के अभाव में सिकुड़ता जा रहा था। गाद जमने के कारण इसकी जलभराव क्षमता घट गई थी, जिससे गर्मियों में पानी का संकट गहरा जाता था, लेकिन 9.71 लाख रुपये की लागत से इसे गहरीकरण कर पुनर्जीवित किया गया।

अब तालाब में 10,000 घनमीटर जलभराव क्षमता है, जिससे किसानों को सालभर पानी उपलब्ध हो रहा है। 09 हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई की सुविधा बढ़ी, जिससे 22 हेक्टेयर खरीफ और 05 हेक्टेयर रबी फसल को पानी मिल रहा है।महिला स्व-सहायता समूहों ने तालाब को लीज पर लेकर मत्स्य पालन शुरू किया, जिससे उन्हें 08 क्विंटल मछली उत्पादन और 1.60 लाख रुपये की आय हुई।

गांव में खुशहाली का नया स्त्रोत

ग्राम पंचायत पुसला के किसानों राजाराम, श्रीमती फुलेश्वरी, शंकरलाल और कृष्णा ने बताया कि पहले तालाब सूखने की कगार पर था, लेकिन अब यह गांव की आजीविका और जल स्त्रोत का आधार बन गया है। महिलाओं ने रोहू, कतला और मृगल मछली उत्पादन से आर्थिक स्वतंत्रता की ओर कदम बढ़ाए हैं। तालाब के किनारों पर पौधारोपण कर इसे और सुंदर बनाया गया है, जिससे यह एक आदर्श जल संरक्षण मॉडल बन गया है। यह सफलता दर्शाती है कि सही योजना और सामुदायिक सहभागिता से जल संसाधनों का बहुद्देशीय उपयोग किया जा सकता है।

अमृत सरोवर-गांव की तरक्की का प्रतीक

टेड़गा तालाब अब सिर्फ जलाशय नहीं, बल्कि एक सशक्त ग्रामीण अर्थव्यवस्था का उदाहरण बन गया है। यह दिखाता है कि मिशन अमृत सरोवर जैसी योजनाएं जल संरक्षण, कृषि और ग्रामीण जीवन में स्थायी बदलाव ला सकती हैं।

बैकुंठपुर में एक दिवसीय उद्यमिता विकास एवं जागरूकता शिविर संपन्न

कोरिया बैकुंठपुर। जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र, बैकुंठपुर द्वारा एक दिवसीय उद्यमिता विकास एवं जागरूकता शिविर का आयोजन बैकुंठपुर जनपद पंचायत सभाकक्ष में किया गया। इस शिविर का उद्देश्य युवाओं, उद्यमियों और स्वरोजगार अपनाने के इच्छुक व्यक्तियों को विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी देना था, जिससे वे नए उद्योग स्थापित कर आत्मनिर्भर बन सकें। शिविर में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उन्नयन योजना और नवीन औद्योगिक विकास नीति 2024-30 के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। विभागीय अधिकारियों और चार्टर्ड अकाउंटेंट अरिहंत बोथरा ने प्रतिभागियों को इन योजनाओं का लाभ उठाने और उद्योग स्थापित करने की प्रक्रियाओं को समझाया। इस शिविर में जनप्रतिनिधि, उद्यमी, आई.टी.आई. एवं पॉलिटेक्निक के छात्र-छात्राओं सहित लगभग 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को स्वरोजगार के अवसरों, सरकारी अनुदान और ऋण योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई, जिससे वे अपने स्टार्टअप और छोटे उद्योग शुरू कर सकें। इस कार्यक्रम से स्थानीय युवाओं और उद्यमियों को स्वरोजगार के प्रति जागरूक करने में सहायता मिलेगी।

खनिज न्यास प्रबंधकारिणी समिति की बैठक संपन्न

कोरिया बैकुंठपुर। कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभाकक्ष में जिला खनिज संस्थान न्यास अंतर्गत प्रबंधकारिणी समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता कलेक्टर एवं अध्यक्ष, जिला खनिज संस्थान न्यास, श्रीमती चंदन त्रिपाठी ने की। इस दौरान पूर्व में स्वीकृत कार्यों की समीक्षा की गई तथा वर्ष 2025-26 की वार्षिक कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा हुई।

कलेक्टर श्रीमती त्रिपाठी ने निर्देश दिए कि डीएमएफ से स्वीकृत सभी कार्यों की प्रगति रिपोर्ट, उपयोगिता प्रमाण पत्र और पूर्णता प्रमाण पत्र विभागों द्वारा शीघ्र उपलब्ध कराई जाए। उन्होंने कहा कि लंबे समय से लंबित कार्यों को शीघ्र पूर्ण कराया जाए, अन्यथा उन्हें निरस्त करने की कार्रवाई की जाएगी। बैठक में शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास, वृद्ध एवं दिव्यांग सहायता, पेयजल, पर्यावरण, सिंचाई, अधोसंरचना विकास जैसे उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में किए जाने वाले कार्यों पर विशेष चर्चा की गई। कलेक्टर ने संबंधित विभागों को जल्द से जल्द जनहितैषी योजनाओं के प्रस्ताव प्रस्तुत करने के भी निर्देश दिए, ताकि उनकी विस्तृत समीक्षा की जा सके। गौरतलब है कि खनिज न्यास के कार्यों का प्रबंधन प्रबंधकारिणी समिति द्वारा दैनंदिनी आधार पर किया जाता है। इस बैठक में विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की प्रगति सुनिश्चित करने के लिए अहम निर्णय लिए गए। कलेक्टर ने सभी अधिकारियों को कार्य योजनाओं को पारदर्शी तरीके से क्रियान्वित करने और जनता को अधिकतम लाभ पहुंचाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ एवं पदेन सचिव, डीएमएफ डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी, जिला वन मंडलाधिकारी श्रीमती प्रभाकर खलको, अपर कलेक्टर एवं नोडल अधिकारी डीएमएफ डी.डी. मंडावी सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

नारी शक्ति से जल शक्ति अभियान-जिले में जल संरक्षण को मिलेगी नई दिशा

कोरिया बैकुंठपुर। जल संरक्षण को लेकर कोरिया जिले में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। जिला कलेक्टर श्रीमती चंदन त्रिपाठी की अध्यक्षता में जिला पंचायत के मंथन सभा कक्ष में नारी शक्ति से जल शक्ति अभियान के तहत कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य महिलाओं की भागीदारी से जल संरक्षण और संवर्धन को प्रभावी रूप से लागू करना है। यह अभियान बैकुंठपुर जनपद पंचायत के अंतर्गत ग्राम पंचायत डोहडा और पोटेडांड में प्रारंभ किया जाएगा। कार्यशाला में जल संरक्षण दल का गठन कर विभिन्न कार्यों की जिम्मेदारी तय की गई। इसमें कृषि एवं ग्रामीण यांत्रिकी सेवा विभाग द्वारा सरपंचों एवं रोजगार सहायकों को जल संरक्षण के महत्व की जानकारी दी गई। जल संरक्षण दल 20 और 21 मार्च को गांवों में भ्रमण एवं सर्वेक्षण करेगा। इसके बाद, 28 मार्च को ग्राम पंचायतों में चौपाल का आयोजन किया जाएगा, जिसमें ग्रामीणों की भागीदारी सुनिश्चित कर जल संरक्षण पर चर्चा होगी। इस अभियान की सफलता के लिए विभिन्न विभागों को विशेष जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। जल संसाधन विभाग द्वारा दोनों पंचायतों में जल संसाधनों का सर्वेक्षण करेगा। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग बोरवेल के जल स्तर की जांच करेगा।बिहान की स्वयं सहायता समूह की महिलाएं जल स्तर सर्वेक्षण में प्रमुख भूमिका निभाएंगी। कार्यशाला में जल संरक्षण के विभिन्न उपायों पर प्रकाश डाला गया, जिनमें डाबरी, तालाब, बांध, शोकता गड्ढा, खेतों में मेढ़ और वाटर हार्वेस्टिंग जैसी तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया गया। कलेक्टर श्रीमती चंदन त्रिपाठी ने कहा कि जल संरक्षण को महाअभियान बनाना आवश्यक है। हमें अपनी मेहनत से जल को संजोना होगा और कैच द रेन कार्यक्रम के तहत प्रत्येक पारा-टोला में स्वयंसेवकों की नियुक्ति करनी होगी, जो इस अभियान को गति देंगे। जिला पंचायत सीईओ डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी ने भी जल संरक्षण को बरसात से पहले ही सुनिश्चित करने की बात कही और पंचायत प्रतिनिधियों को इसे जन-जन तक पहुंचाने के निर्देश दिए। इस कार्यशाला में जिला पंचायत सदस्य सौभाग्यवती सिंह, विभिन्न विभागों के अधिकारी, बिहान से जुड़ी महिलाएं और स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

कुड़े से मिला स्वयं सहायता समूहों को रोजगार

सूरजपुर। स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अभिसरण से बने सेग्रीगेशन शेड ने सूरजपुर जिले के जनपद पंचायत भैयाथान के ग्राम तेलगांव जहां पहले कचरे का ढेर हुआ करता था। जिसे वहा के स्वच्छता दीदियों के द्वारा कचरे का निस्तारण कर गांव की सड़कों एवं गलियों और चौंक-चौराहों को स्वच्छ रखने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। खुले में शौचमुक्त गांव बनने के वाद अब तेलगांव प्लास्टिक एवं कूड़ा-करकट मुक्त ग्राम पंचायत भी बन गया है। सड़कों एवं गलियों और चौक-चौराहों पर फेंके जाने वाले कचरे को वहां की स्वं सहायता समूह की महिलाओं ने अतिरिक्त कमाई का जरिया बनाया है। पिछले एक साल समूह के द्वारा कचरे के निस्तारण किया जा रहा है।कचरा संग्रहण तथा उसे अलग-अलग कर निस्तारित करने का काम इन महिलाओं के लिए सहज-सरल नहीं था। शुरुआत में जब वे रिक्शा लेकर कचरा संकलन के लिए घर-घर जाती थीं तो लोग उन्हें ऐसे देखते थे जैसे वह कोई खराब काम कर रही हो कचरा देने से ग्रामीण मना किया करते थे। धीरे-धीरे समूह की महिलाओं का मनोबल स्वच्छ भारत मिशन की टीम द्वारा स्वच्छता दीदी को स्वच्छता के क्षेत्र में कार्य हेतु प्रोत्साहित किया गया उनके मनोबल को कमजोर होने नहीं दिया। लोगों की हिकारत भरी नजरों के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और ग्राम पंचायत के सहयोग से इस काम को जारी रखा। इनके काम से गांव लगातार साफ-सुथरा होते गये, तब लोगों का नजरिया भी बदलने लगा। अब गांव वाले इन्हें सम्मान के साथ स्वच्छता दीदी कहकर पुकारते हैं। तेलगांव के कुबेर महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाएं सफाई मित्र के रूप में घर-घर जाकर कचरा संकलित करती हैं। सेग्रीगेशन शेड यानी ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन केन्द्र में वे संकलित कचरा में से उनकी प्रकृति के हिसाब से उन्हें अलग-अलग करती हैं। और कचरे को बेचकर आय का साधन बना रही है। कुबेर महिला स्वयं सहायता समूह- जयकुमारी, प्रियंका, चांदनी, बाबी है।

कार्य में लापरवाही व अनुशासनहीनता बरतने पर नरेशपुर पंचायत सचिव निलंबित

सूरजपुर। जनपद पंचायत सूरजपुर अंतर्गत ग्राम पंचायत नरेशपुर में 11 मार्च को प्रधामनमंत्री आवास योजना ग्रामीण योजनांतर्गत स्वीकृत आवासों का निरीक्षण मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत सूरजपुर द्वारा किया गया, किन्तु ग्राम पंचायत नरेशपुर में पदस्थ ग्राम पंचायत सचिव श्री सुरेन्द्र विश्वकर्मा द्वारा सूचना प्राप्त होने के बावजूद ग्राम पंचायत में अनुपस्थित पाये गये। ग्राम पंचायत में स्वीकृत आवासों की प्रगति भी संतोषजनक नहीं इस प्रकार ग्राम पंचायत के कार्यों में लापरवाही एवं अनुशासनहीनता बरतने के फलस्वरूप श्री सुरेन्द्र विश्वकर्मा, पंचायत सचिव, ग्राम पंचायत नरेशपुर, जनपद पंचायत सूरजपुर को उपरोक्त कृत्य के लिए, छत्तीसगढ़ पंचायत सेवा (अनुशासन तथा अपील) नियम के तहत् तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया है।

कलेक्टर ने प्रतापपुर के विभिन्न क्षेत्रों का किया दौरा

सूरजपुर। कलेक्टर एस.जयवर्धन एवं डी. एफ ओ. पंकज कमल के द्वारा प्रतापपुर विकासखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया गया। अपने दौरे में कलेक्टर ने प्रतापपुर के स्वामी आत्मानंद स्कूल का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने विद्यालय में मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी ली। उन्होंने इस दौरान रसायन, भौतिकी और जीव विज्ञान प्रयोगशाला का भी निरीक्षण किया और प्रयोगशालाओं में सामग्री की उपलब्धता और सामग्री की आपूर्ति के संबंध में जानकारी ली। अपने दौरे में उन्होंने मा. शा. कन्या आश्रम शान्ति नगर और बालक आश्रम कोड़ाकूपारा का भी निरीक्षण किया । इस दौरान उन्होंने विद्यार्थियों से बातचीत कर आश्रम की सुविधाओं एवं समस्याओं को जाना। साथ ही उन्होंने आश्रम में सुविधाओं के उन्नयन और बच्चे के किसी भी की समस्या के निराकरण को लेकर संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। अपने दौरे में कलेक्टर ने ग्राम रमगवा में सोलर संचालित नल जल कनेक्शन का भी निरीक्षण किया। इस दौरान ग्रामीणों से बातचीत कर जल आपूर्ति के बारे में जानकारी ली। इस संबंध में ग्रामीणों को समझाइश देते हुए कहा कि ग्राम सभा का आयोजन कर सभी जल आपूर्ति के लिए मोटर चालू करने का समय निर्धारित करें। किसी भी प्रकार से पेयजल को व्यर्थ बहाकर नष्ट न करें। इसके अलावा उन्होंने हाथी प्रभावित ग्राम गणेशपुर का दौरा करके वहां के लोगों से उनके समस्याओं को लेकर बातचीत की। इस दौरान प्रभावित लोगों को शासकीय मुआवजे के भुगतान की जानकारी ली। साथ ही उनके समस्याओं के निराकरण को लेकर कलेक्टर एवं डीएफओं ने संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

टीबी मुक्त बनाने के उद्देश्य से कराया गया शपथ ग्रहण

सूरजपुर। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सूरजपुर श्रीमती कमलेश नन्दनी साहू के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में जिला पंचायत संसाधन केन्द्र सूरजपुर में नवनिर्वाचित सरपंचों का उन्मुखीकरण परिचयात्मक प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है, प्रशिक्षण के दौरान नवनिर्वाचित सरपंचों का भारत को 2025 तक टी.बी मुक्त बनाने के उद्देश्य से संकाय सदस्य निरोज सिंह के द्वारा सभी सरपंचों का शपथ ग्रहण कराया गया। शपथ ग्रहण के दौरान राधेलाल पैकरा एवं जिला के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहें।

8 वर्षो से फरार बसोर गैंग के 1 कुख्यात आरोपी को मध्यप्रदेश से पकड़ा

सूरजपुर। डीआईजी व एसएसपी प्रशांत कुमार ठाकुर ने पुराने लंबित प्रकरण एवं धारा 173(8) के मामलों की समीक्षा कर फरार आरोपियों की धरपकड़ करने के कड़े निर्देश पुलिस अधिकारियों को दिए है। निर्देश के परिपालन में थाना चांदनी पुलिस के द्वारा 8 वर्षो से फरार बसोर गैंग के एक कुख्यात आरोपी को मध्यप्रदेश में दबिश देकर पकड़ा है। 13.09.2018 के रात्रि में अज्ञात चोरों के द्वारा ग्राम बिहारपुर निवासी राजेन्द्र सिंह के मकान का दरवाजा तोड़कर घर में घुसकर सोना चांदी के जेवर व नगदी रकम 60 हजार रूपये की चोरी कर लिया गया। प्रार्थी की रिपोर्ट पर अपराध क्रमांक 51/2018 धारा 457, 380, 34 भादवि के तहत मामला पंजीबद्ध किया गया था और मामले की विवेचना के दौरान पूर्व में बसोर गैंग के 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर चोरी का माल बरामद किया गया था वहीं मामले में 1 आरोपी पिंटू बसोर फरार था जिसकी पतासाजी थाना चांदनी पुलिस व साईबर सेल के द्वारा की जा रही थी। इसी बीच जानकारी मिली कि फरार आरोपी सिंगरौली मध्यप्रदेश में है जिसके बाद डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर ने फरार आरोपी को पकड़ने थाना चांदनी की पुलिस टीम गठित कर दिगर राज्य मध्यप्रदेश के लिए रवाना किया।

विश्व ग्लूकोमा सप्ताह कोरिया में निःशुल्क नेत्र जांच और जागरूकता अभियान जारी

कोरिया बैकुंठपुर। राष्ट्रीय दृष्टिहीनता नियंत्रण कार्यक्रम के तहत विश्व ग्लूकोमा सप्ताह के अवसर पर जिला प्रशासन एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा ग्लूकोमा (कांच बिंद/काला मोतियाबिंद) को लेकर जागरूकता और निःशुल्क नेत्र जांच अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत जिला अस्पताल एवं विकासखंड स्तर पर विशेषज्ञों की टीम मरीजों की स्क्रीनिंग और जांच कर रही है। 9 मार्च से 17 मार्च तक जिले में ग्लूकोमा सप्ताह के तहत 960 मरीजों की आखों की जांच किया गया, जिसमें 4 ग्लूकोमा के मरीज पाए गए वहीं 8 मरीजों को ग्लोकोमा होने की संभावना है। इसके अलावा मोतियाबिंद 52, ड्राई आई 11, रेडनेस 15, वाटरिंग आई 12 व अन्य 114 मरीज आंखों की अलग-अलग परेशानी से पीड़ित हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, ग्लूकोमा 40 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों में अधिक पाया जाता है, खासकर उन व्यक्तियों में जिनके परिवार में पहले से यह बीमारी रही हो। इस रोग के शुरुआती चरण में कोई स्पष्ट लक्षण नहीं होते, जिससे मरीज को देर से पता चलता है और

उपचार में देरी के कारण रोशनी जाने का खतरा बढ़ जाता है। ग्लूकोमा के प्रमुख लक्षण-आंखों में तेज दर्द और बल्ब के चारों ओर रंगीन गोले दिखना। दृष्टि धीरे-धीरे कम होना या धुंधलापन महसूस होना। चश्मे का नंबर बार-बार बदलना। सिरदर्द, आंखों में भारीपन, ब्लड प्रेशर और डायबिटीज के मरीजों में अधिक जोखिम होते हैं। जिले के सभी शासकीय स्वास्थ्य केंद्रों में निःशुल्क नेत्र जांच, स्क्रीनिंग और उपचार की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रशांत सिंह ने जिलेवासियों से अपील की है कि वे अपने नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र में जाकर अपनी आंखों की जांच कराएं और समय रहते ग्लूकोमा का इलाज कराएं। स्वास्थ्य विभाग की विशेषज्ञ टीमें लगातार गांवों और शहरों में नेत्र जांच शिविर आयोजित कर रही हैं, ताकि अधिक से अधिक लोग इस बीमारी की पहचान कर समय पर उपचार प्राप्त कर सकें। जागरूकता ही बचाव है और समय पर जांच कराने से आंखों की रोशनी बचाई जा सकती है।

70 वर्ष और उससे अधिक आयु के नागरिकों के लिए आयुष्मान वय वंदना कार्ड बनाने घर-घर सर्वे कर बनाए जा रहे कार्ड

कोरिया बैकुंठपुर। जिला प्रशासन द्वारा 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को निःशुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए आयुष्मान वय वंदना योजना के तहत कार्ड बनाने का कार्य तेजी से किया जा रहा है।

कलेक्टर श्रीमती चंदन त्रिपाठी के निर्देशानुसार एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रशांत सिंह के मार्गदर्शन में जिला एवं ब्लॉक स्तर की टीमें स्थानीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के साथ घर-घर जाकर सर्वे एवं पंजीयन कर रही हैं।

आधार कार्ड एवं राशन कार्ड के आधार पर मिलेगा लाभ, इस योजना के तहत 70 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के सभी नागरिक अपने आधार कार्ड और राशन कार्ड के आधार पर आयुष्मान वय वंदना कार्ड बनवा सकते हैं। इस कार्ड के माध्यम से अस्पताल में भर्ती होने पर 5 लाख रुपए तक का निःशुल्क इलाज की सुविधा मिलेगी। प्रशासन का लक्ष्य है कि जिले के हर पात्र व्यक्ति को इस योजना से जोड़ना है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रशांत सिंह ने जिलेवासियों से अपील की है कि वे अपने क्षेत्रीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं या नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र से संपर्क कर अपना आयुष्मान वय वंदना कार्ड बनवाएं और इस महत्वपूर्ण

योजना का लाभ उठाएं। जिला प्रशासन द्वारा इस योजना को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। यह योजना वरिष्ठ नागरिकों को आर्थिक एवं चिकित्सा सुरक्षा प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रहा है।

खड़ी ट्रक से लोहे का प्लेट पार

रायपुर। धनेली नाला मोड़ के पास खड़ी ट्रक से अज्ञात चोर ने हजारों रुपए का लोहे का प्लेट पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर धरसींवा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी अमरेन्द्र कुमार 25 वर्ष शारदा चौक मंदिरहसौद का रहने वाला है। प्रार्थी ने अपनी ट्रक में 29 टन 860 किलो लोहे का प्लेट लोड कर धनेली नाला मोड़ के पास खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने ट्रक में से 3 नग लोहे का प्लेट पार कर दिया।

पॉलीटेक्निक संस्थाओं में प्रवेश के लिए आवेदन प्रारंभ

सूरजपुर। जिले में पॉलीटेक्निक संस्थाओं में प्रवेश हेतु प्री पॉलिटेक्निक टेस्ट (पीपीटी-2025) हेतु छ.ग. व्यावसायिक परीक्षा मंडल में आवेदन प्रारंभ हो चुका है। शासकीय पॉलीटेक्निक सूरजपुर में माइनिंग इंजीनियरिंग, सिविल इंजीनियरिंग एंव इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा पाठ्यक्रम वर्तमान में संचालित है। पीपीटी 2025 परीक्षा के लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि 11 अप्रैल 2025 सायं 05:00 बजे तक है। परीक्षा की संभावित तिथि 01 मई दिन गुरुवार है। यह परीक्षा राज्य के 33 जिलों के जिला मुख्यालयों में आयोजित की जायेगी। परीक्षा से संबंधित विस्तृत जानकारी छ.ग. व्यावसायिक परीक्षा मंडल की अधिकारिक वेबसाइट vyapamcg.cgstate.gov.in पर उपलब्ध है। परीक्षा फार्म भरने में सहायता करने के लिए शासकीय पॉलीटेक्निक सूरजपुर, वेटनरी पॉलिटेक्निक, प्रथम तल, सरनापारा पर्री में सहायता केन्द्र बनाया गया, जिसमें आवेदक छात्र-छात्राएं कार्यालयीन समय में पहुंचकर निशुल्क सहायता प्राप्त कर सकते है।

पंजीकृत ई-श्रमिकों का नवीन राशनकार्ड जारी करने एवं सदस्यों का नाम जोड़ने के लिए अंतिम समय सीमा 5 अप्रैल तक

सूरजपुर। ई-श्रम पोर्टल में पंजीकृत 8873 असंगठित श्रमिकों का राशन कार्ड बनाए जाने हेतु शासन स्तर से सूची जिले को उपलब्ध कराया गया है। उक्त पंजीकृत श्रमिकों में से 5992 श्रमिकों का नवीन राशन कार्ड बनाया जा चुका तथा 2756 श्रमिकों का अन्यत्र निवास या पलायन रहने तथा सूची में दर्ज मोबाइल नंबर बंद होने या संपर्क नहीं होने के कारण पात्रता अनुसार राशन कार्ड बनाने एवं नाम दर्ज करने हेतु अग्रिम कार्यवाही पूर्ण हो पाई नहीं है। ऐसे सभी पंजीकृत श्रमिकों को सूचित किया जाता है कि स्वयं अपना दस्तावेज नगरीय निकाय/जनपद पंचायत तथा जिला स्तर पर श्रम विभाग एवं जिला खाद्य कार्यालय में 15 दिवस के भीतर जमा कर सकते है। उक्त समय अवधि में आवेदन प्रस्तुत नहीं करने पर ऐसे पंजीकृत श्रमिक नवीन राशन कार्ड बनाने एवं राशन कार्ड में सदस्यों का नाम दर्ज कराने से वंचित हो सकते है।

चाकू के साथ युवक गिरफ्तार

रायपुर। मंदिरहसौद पुलिस ने चाकू लहराते एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के पास से चाकू जब्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार मंदिरहसौद पुलिस को सूचना मिली कि चौक के पास एक युवक चाकू लेकर आम लोगों को डरा धमका रहा है। सूचना पर मौके में पहुंची पुलिस ने आरोपी राज सोनवानी 18 वर्ष को गिरफ्तार कर चाकू जब्त किया है।

नकली शराब बनाने वाली फैक्ट्री का भंडाफोड़

बलरामपुर। आबकारी विभाग और पुलिस की संयुक्त कार्रवाई करते हुए रामानुजगंज थाना क्षेत्र के कंचननगर से भारी मात्रा में नकली शराब और शराब बनाने की सामग्री बरामद किया है। मामले में पुलिस ने रामानुजगंज निवासी एक आरोपी को भी पकड़ा है। आरोपी नकली शराब बनाकर छत्तीसगढ़ और झारखंड में सप्लाई करता था। मिली जानकारी के अनुसार पुलिस को सूचना मिली थी कि रामानुजगंज थाना क्षेत्र के कंचननगर में नकली शराब बनाने का अवैध कारोबार चल रहा है। सूचना पर पुलिस और आबकारी विभाग की टीम ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुए मौके पर छापामार कार्यवाही की इस दौरान टीम को मौके से भारी मात्रा में नकली शराब बनाने की सामग्री मिली, जिसमें स्प्रीट, दारू की शीशियां, अलग-अलग ब्रांड के रेपर, बारकोड, हॉलमार्क स्टीकर आदि बरामद किए गए। पुलिस ने मौके से एक आरोपी को कार समेत गिरफ्तार किया है। जांच में पता चला कि आरोपी पहले शराब दुकान में काम कर चुका है, जिससे उसे शराब निर्माण और ब्रांडिंग की पूरी जानकारी थी। इसी का फ ायदा उठाकर उसने नकली शराब बनाने और उसे बाजार में खपाने का गोरखधंधा शुरू कर दिया था। प्राथमिक जांच में पता चला है कि आरोपी नकली शराब को छत्तीसगढ़ और झारखंड के कई इलाकों में सप्लाई कर रहा था। पुलिस को आशंका है कि इस रैकेट में और भी लोग शामिल हो सकते हैं। गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ कर अन्य आरोपियों का पता लगाया जा रहा है।

फरार 2 स्थाई वारंटी पकड़े

सूरजपुर। अपराधों की रोकथाम के लिए डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर ने पूर्व में थाना-चौकी प्रभारियों की बैठक में कड़े शब्दों में निर्देशित किया कि स्थाई वारंट तामीली में लापरवाही नहीं होनी चाहिए, वारंटी वर्तमान में कहां उसकी जानकारी निकाले, अब तक स्थाई वारंट की तामीली क्यों नहीं की गई उसकी अद्यतन स्थिति से बारे में विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने कहा कि तामीली में लापरवाही बरतने वाले प्रभारी के विरूद्ध दण्डात्मक कार्यवाही की जाएगी। पुलिस अधिकारी व जवानों को तामीली के लिए भेजने से पहले उन्हें ब्रीफ करें और उन्हें हिदायत दें कि अपने पूर्ण अनुभव का इस्तेमाल करते हुए वारंट को तामील करें।

पतरापाली में हाथियों को खदेड़ने की जिम्मेदारी लोगों की, आपूर्ति बंद कर देता है सीएसईबी

लोगों का आरोप-पटाखे खुद खरीदते हैं, नुकसान भी हमारा ही

कोरबा। वन मंडल कोरबा में दो दशक बचने के बाद भी हाथी उत्पात की समस्या हल नहीं हो सकी है। यह बात अलग है कि हाथियों के नाम से कई मामलों में वन विभाग को सहूलियत हो रही है। पत्रपाली गांव में लोगों के सामने दोहरी और तिहरी आफत है। लोगों का आरोप है कि उसके क्षेत्र में हाथियों के आने पर फॉरेस्ट से कोई सहायता नहीं मिलती है। उल्टे खबर होने पर सीएसईबी इस इलाके की बिजली आपूर्ति बंद कर देता है।

फॉरेस्ट डिविजन कोरबा के कोरकोमा सर्किल क्षेत्र में पतरापाली गांव स्थित है जहां पर ग्रामीणों को गजराजों को लेकर जमकर समस्या है। उन्होंने समस्या के बारे में फॉरेस्ट के साथ-साथ प्रशासन के अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों को अवगत कराया है लेकिन राहत मिलती नहीं दिख रही है।

यहां के ग्रामीण बताते कि यहां के एक इलाके में आग लगी हुई है और उसे पर नियंत्रण नहीं होने से फार्मस की अपनी जमीनों पर लगी हुई फसल और दूसरी चीज इसकी चपेट में आकर खराब हो रही है। फायर कंट्रोल को लेकर कई प्रकार के

मीडिया को अपना दुखड़ा सुनाते ग्रामीण। फोटो- प्रतिमा सरकार

दावे लगातार किए जा रहे हैं लेकिन जमीन पर इनका अता-पता नहीं है और उनका गांव इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। ग्रामीण बताते हैं कि हर वर्ष गर्मी के सीजन में इस प्रकार का नाटक यहां होता ही है और उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है। अनुसूचित जनजाति और मिश्रित आबादी वाले इस गांव के लोगों का यह भी कहना है कि हाथियों के यहां पहुंचने और नुकसान पहुंचाने का मामला लंबे समय से बना हुआ है। कृषि और गैर कृषि सामग्री को हाथियों का समूह अपने लिए उदरपूर्ति का माध्यम समझता है। इस प्रकार की घटनाक्रम से लोग परेशान है।

पतरापाली गांव के वरिष्ठ व्यक्ति ने बताया कि सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि जब कभी भी हाथियों का आवागमन इस इलाके में होता है तो फॉरेस्ट के स्थानीय कर्मचारी अपना मोबाइल स्विच ऑफ कर लेते हैं ताकि वे झनझट से बच सके। इस स्थिति में एकमात्र विकल्प यही होता है कि प्रभावित लोग अपने स्तर पर हाथियों को यहां से बाहर करने की जोखिम ले। ग्रामीणों का कहना है कि इस प्रकार की स्थिति में बम और पटाखे की व्यवस्था वे अपने स्तर पर ही करते हैं यानी अपने रुपए से सामग्री क्रय करनी पड़ती है और वह भी एडवांस में। ऐसा इसलिए करना पड़ता है क्योंकि पता नहीं कब हालात बदल जाए और फिर उन लोगों को चुनौतियों का सामना करना पड़े।

विकासखंड कोरबा के अंतर्गत आने वाले इस इलाके में समस्या तब और बढ़ जाती है जब हाथियों की आमदफ्तत होने का पता किसी भी माध्यम से होने पर छत्तीसगढ़ बिजली वितरण कंपनी की ओर से इस क्षेत्र की आपूर्ति अघोषित रूप से बंद कर दी जाती है। लोगों का कहना है कि बिजली कंपनी को हाथियों की चिंता जरूर होती है लेकिन हमारी नहीं। ऐसी स्थिति में समझा जा सकता है कि सरकार के सिस्टम के लिए महत्वपूर्ण कौन है।

कुदमुरा में लोनर की दस्तक मुनादी में जुटा वन अमला

पांच दर्जन हाथी घूम रहे कटघोरा के जंगल में

कोरबा। पड़ोसी धरमजयगढ़ वनमंडल से फिर एक लोनर हाथी कोरबा वनमंडल के कुदमुरा रेंज में पहुंच गया है। बीती रात अचानक पहुंचे लोनर को आज सुबह कुदमुरा सर्किल के जंगल में विचरण करते हुए देखा गया और इसकी सूचना वन विभाग को दी गई, जिस पर वन अमला सतर्क हो गया है तथा कुदमुरा के आसपास के गांवों में मुनादी कराने के साथ ही ग्रामीणों को जंगल न जाने की चेतावनी देने में जुट गया है। रेंजर बी.एस.पैकरा ने बताया कि लोनर हाथी ने तत्काल कोई नुकसान नहीं पहुंचाया है फिर भी इसके उत्पात की संभावना को देखते हुए वन अमला सतर्कता बरत रहा है। लोनर हाथी की निगरानी की जा रही है। उसकी हर गतिविधियों पर ड्रोन कैमरे के जरिए नजर रखी जा रही है। उधर कटघोरा वनमंडल में 62 हाथियों की मौजूदगी लगातार बनी हुई है। यहां के केंदई रेंज के कापानवापारा, कोरबी व लालपुर क्षेत्र में 30 हाथी विचरण कर रहे हैं जबकि 32 हाथी एतमानगर के मड़ई सर्किल व जटगा वन परिक्षेत्र में दो अलग-अलग झुंडों में घूम रहे हैं। कोरबी सर्किल में घूम रहे हाथियों के दल में से एक दंतैल हाथी झुंड से अलग होकर बस्ती में प्रवेश कर गया तथा एक ग्रामीण के बाड़ी में घुसकर वहां लगे सब्जी के पौधों को नुकसान पहुंचा रहा था। जिसकी जानकारी ग्रामीणों को होने पर तत्काल वहां पहुंचे और बाड़ी में उत्पात मचा रहे दंतैल को खदेड़ने की कार्यवाही की। ग्रामीणों द्वारा खदेड़े जाने पर दंतैल जंगल की ओर जाने को मजबूर हो गए और यहां बड़ा नुकसान होने से बच गया।

गेवरा वर्कशॉप में मारधाड़ : फोरमेन टोप्पो से ऑपरेटर ने की मारपीट

प्रबंधन की अनदेखी पर आजाक थाना में शिकायत

कोरबा। एसईसीएल गेवरा वर्कशॉप में पुरानी बात को लेकर एक फोरमेन अजीत कुमार टोप्पो से जातिगत गाली-गलौज व मारपीट कर जान से मारने की धमकी देने पर पहले प्रबंधन से शिकायत की गई। ठंडे बस्ते में मामला डालने पर पीड़ित ने एसटी-एससी थाना में शेख मकसूद के विरुद्ध शिकायत दर्ज कराई है। मकसूद गेवरा परियोजना में ऑपरेटर है।

बताया गया कि अजीत कुमार टोप्पो (59) एमडी 790 दीपका कॉलोनी निवासी 26 फरवरी को ड्यूटी के दौरान विभागीय कैंटीन के पास पहुंचे थे। वहां मकसूद और अभिषेक डेविड बैठे थे। टोप्पो ने अभिषेक को नमस्कार किया। तभी मकसूद ने 25 फरवरी की ड्यूटी संबंधी बात को लेकर विवाद किया, गाली दी और सबके सामने अपमानित किया। टोप्पो ने बताया कि ऑपरेटर ने कॉलर पकड़कर मारपीट की और धमकी दी कि ड्यूटी की शिकायत अधिकारियों से करने पर बुरे अंजाम होंगे। इस दौरान अभिषेक डेविड ने बीच-बचाव कर किसी तरह टोप्पो को छुड़ाया। पीड़ित ने अपने सहकर्मियों खम्हन दास और विजय बहादुर को अवगत कराने के बाद पत्नी को भी इसकी जानकारी दी। टोप्पो ने बताया कि उन्हें प्रबंधन पर भरोसा था कि वह मामले में कार्रवाई करेगा लेकिन उसकी लिखित शिकायत को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया। उन्हें डर है कि ऑपरेटर आगे और नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए पीड़ित ने पुलिस अधीक्षक से मामले की शिकायत की है।

डेविड के चक्कर में हुआ मामला

एसईसीएल कर्मी अभिषेक डेविड के चक्कर में घटना वाले दिन पूरा मामला हुआ। उससे मेरी पुरानी रंजिश है। वैसे भी अजीत टोप्पो शराब पीकर आया था और मुझसे ही गाली-गलौज कर रहा था। उसने डेविड के बहकावे में आकर झूठी शिकायत कराई है। मैंने भी पुलिस को इस बारे में शिकायत किया है।

-शेख मकसद्, ऑपरेटर गेवरा परियोजना

बसपा बूथ कमेटी को करेगा मजबूत

कोरबा। बसपा की लगातार बैठक हो रही है। प्रदेश स्तर से बैठक शुरू होने के बाद अब यह बैठक बूथ कमेटी तक जाएगी। प्रदेश स्तरीय बैठक में बूथ कमेटी को मजबूत करने कहा गया है। इसके बाद जांजगीर में जोन स्तरीय बैठक हुई। जिसमें भी कार्यकर्ताओं को सक्रिय किया गया। 29 मार्च को एक और बैठक जांजगीर में रखी गई है। इसके बाद प्रत्येक जिले में बैठक होगी। कोरबा जिलाध्यक्ष फूलचंद सोनवानी ने बताया कि सभी विधानसभा क्षेत्रों के अध्यक्षों व जिला समिति सदस्यों को बुलाकर बूथ कमेटी बनाने के लिए कहा जाएगा। कोरबा विधानसभा अध्यक्ष जितेंद्र बंजारे, सचिव राजकुमारी नारंगे, भगवती केमेंडोज भी सक्रिय हुई हैं। इसी तरह नगर अध्यक्ष त्रिवेणी भास्कर, देवसिंह पंकज के द्वारा भी बैठक ली जाएगी। कुल मिलाकर कार्यकर्ताओं को बूथ स्तर पर सक्रिय करना है।

फेडरेशन का अधिवेशन 25 को

कोरबा। फेडरेशन का अधिवेशन 25 मार्च को दिल्ली में आयोजित किया गया है। इस अधिवेशन में कोरबा जिले से भी कार्यकर्ता शामिल होंगे। जिसकी तैयारी अलग-अलग की जा रही है। गेवरा एरिया में रेशमलाल यादव, दीपका में गिरजा साहू, कोरबा में अजीत पांडेय, सुरेंद्र मिश्रा व कुसमुंडा में अशोक साहू को जिम्मेदारी दी गई है। उनके द्वारा कार्यकर्ताओं को दिल्ली ले जाने के लिए तैयार किया जा रहा है।

शताधिक पुलिस कर्मियों का होगा स्थानातंरण

कोरबा। पुलिस थाना और चौकी के स्थानांतरण के बाद अब पुलिस कर्मियों की बारी है। हेड कांस्टेबल और कांस्टेबल शामिल बताए जा रहे हैं। खबर के अनुसार सबसे ज्यादा कर्मी नई पदस्थापना में भेजे जाएंगे। बताया जा रहा है कि लंबे समय से एक ही थाना, चौकी, पुलिस लाइन और कार्यालय में ऐसे कर्मी सेवाएं दे रहे हैं। उनकी उपयोगिता सुनिश्चित करने के लिए नई व्यवस्था बनाई जा रही है। संभावना है कि शुक्रवार या शनिवार को पुलिसकर्मियों के स्थानांतरण वाली सूची जारी हो सकती है। संबंधितों को इसका इंतजार है।

प्रतिपदा से नवरात्र पर्व की होगी शुरुआत, सजने लगे देवी मंदिर

कोरबा। चैत्र प्रतिपदा से नवरात्रि पर्व प्रारंभ होगा। शक्ति की अधिष्ठात्री देवी माँ दुर्गा की उपासना पर्व में की जाएगी। नवरात्र को लेकर नगर और जिले के देवी मंदिरों में प्राथमिक रूप से तैयारी शुरू कर दी गई है।

मूल रूप से शक्ति संचय और सिद्धि प्राप्ति के लिए नवरात्र अनुष्ठान करने की परंपरा है। आदिकाल से इस प्रकार के विधान प्रचलित है जो हिंदू समाज को दिशा देने का काम करते हैं। 30 मार्च को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के साथ नवरात्र की शुरुआत हो रही है। हिंदू पंचांग के अनुसार 9 दिन तक यह पर्व मनाया जाएगा। इसमें शास्त्रोक्त विधि से देवी की पूजा अर्चना के साथ-साथ उन्हें प्रतिदिन अलग-अलग स्वरूप में पूजित किया जाएगा। श्रृंगार और नैवेद्य को लेकर भी कुछ ऐसे ही विधान सुनिश्चित है। पर्व में ऐसे विधान की पूर्ति निश्चित रूप से करनी होती है। भागवताचार्य पंडित दशरथ नंदन द्विवेदी ने बताया कि सज्जन शक्ति की रक्षा और दुर्जनों का विनाश

दृष्टि से वर्तमान में भी शक्ति संचय के नवरात्र पर्व का अपना विशेष महत्व बना हुआ है।

नवरात्र के लिए कोरबा शहर और उप नगरीय क्षेत्र के अलावा आंचल में स्थित देवी मंदिरों की रंगाई पुताई से लेकर सजावट का कार्य शुरू कर दिया गया है। इन स्थानों पर बड़ी संख्या में ज्योति कलश प्रज्वलित किये जायेंगे।

करने के लिए देवी दुर्गा का अवतार हुआ था। देवताओं ने उन्हें कई प्रकार के अस्त्र-शास्त देकर संपन्न किया था और इसके माध्यम से समाज और धर्म के हित में बेहतर काम किए जा सके थे। इस

क्रिकेट : आज खेले जाएंगे दो मैच

कोरबा। कोरबा प्रेस क्लब द्वारा आयोजित स्व.केशवलाल मेहता स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता में आज 21 मार्च को दो मैच खेले जाएंगे। डॉ भीमराव अंबेडकर ओपन आडिटोरियम घंटाघर मैदान में पहला मैच शाम 5 बजे कलेक्टर इलेवन और एडवोकेट इलेवन के मध्य खेला जाएगा। इसी मैदान में दूसरा मैच शाम 7 बजे एटीपीसी इलेवन और एसईसीएल कुसमुंडा इलेवन के मध्य खेला जायेगा।

पूर्व विधायक कंवर का स्वागत

कोरबा। कटघोरा विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक पुरुषोत्तम कंवर के दीपका पहुंचने पर उनका कांग्रेस कार्यकर्ताओं के द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। इस दौरान ब्लॉक अध्यक्ष दिलीप सिंह, विशाल शुक्ला, तनवीर अहमद, विकास शुक्ला सहित अन्य कार्यकर्ताओं ने स्वागत करते हुए उनके जन्मदिन की बधाई देते हुए केक काटे।

जिला पंचायत की बैठक 24 को

कोरबा। जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. पवन सिंह के द्वारा 24 मार्च को जिला पंचायत सदस्यों की बैठक रखी गई है। जिला पंचायत सदस्यों की यह पहली बैठक है। इस बैठक में एक-दूसरे का परिचय होगा। इसके बाद अपने-अपने क्षेत्र के समस्याओं को सामने रखा जाएगा ताकि विकास कार्य तेजी के साथ किया जा सके। इस बैठक में रेणुका राठिया, सुष्मिता अर्नत सहित सदस्य शामिल होंगे।

एसकेएमएस नए चेहरों की कर रहा तलाश

कोरबा। एसकेएमएस कोरबा एरिया की नई समिति बनने के बाद अब इकाईयों में सक्रिय लोगों को लाने की तैयारी की जा रही है। कोरबा एरिया अध्यक्ष मनीष सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष सुभाष सिंह व महामंत्री धर्माराव के द्वारा स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इकाईयों में काम करने वालों को महत्व दिया जाएगा। कई इकाई ऐसे हैं जहां पर काम क्षमता के अनुरूप नहीं हो रहे हैं। इकाईयों में कहा गया है कि सक्रिय लोगों के नामों को आगे बढ़ाया जाए।

बालको की महिला कर्मचारियों को खनन क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए मिला सम्मान

कोरबा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कोयला एवं खान मंत्रालय द्वारा खनन क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए महिलाओं को सम्मानित किया गया। हैदराबाद में आयोजित कार्यक्रम के दौरान बालको की रूचि शर्मा और हिमांशी गुप्ता सम्मानित की गई। कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी, केंद्रीय कोयला एवं खान राज्य मंत्री सतीश चंद्र दुबे और तेलंगाना की महिला एवं बाल कल्याण मंत्री डी. अनसूया सीताक्का भी मौजूद थीं।

कार्यक्रम के दौरान खनन उद्योग में असाधारण योगदान के लिए देशभर की 46 उत्कृष्ट पेशेवरों को सम्मानित किया गया। बालको के लिए गौरवान्वित पल है कि रुचि शर्मा (डिवीजनल कमर्शियल ऑफिसर) और हिमांशी गुप्ता (बिजनेस एनालिस्ट, डिप्टी सीईओ, मेटल) को उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। महिलाओं द्वारा खनन उद्योग में बाधाओं को तोड़कर आगे बढ़ने की सराहा गया। खनन क्षेत्र में महिलाओं को पहचान दिलाने और उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

रुचि शर्मा ने बताया कि यह सम्मान खनन

क्षेत्र में समर्पण और योगदान के साथ बालको के विश्वास का परिणाम है। पिछले 11 वर्षों में मुझे सहयोग तथा प्रोत्साहित करने के लिए कंपनी के वरिष्ठ प्रबंधन को दिल से धन्यवाद देना चाहूँगी। कंपनी हमेशा विविधता और समावेश का समर्थन करने के साथ विशेष रूप से महिलाओं के लिए समानता का अवसर और सशक्तिकरण की संस्कृति को बढ़ावा देते हैं, जिससे खनन उद्योग में बाधाओं को तोड़ने और रूढ़ियों को चुनौती देने में मदद मिलती है। इस क्षेत्र में योगदान देने और नवाचार को आगे बढ़ाने तथा अधिक ऊंचाइयों को छूने के लिए प्रेरित करता है।

बालको में लगभग तीन साल से कार्यरत हिमांशी गुप्ता ने बताया कि महिला दिवस के अवसर पर मिला यह सम्मान उन अवसरों और अनुभवों का प्रतिबिंब है। ऐसे प्रेरक और सशक्त मंच का हिस्सा बनना मेरे लिए सम्मान की बात है। इस पुरस्कार को प्राप्त करने से मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है और मुझे उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने की प्रेरणा मिली है। यह मेहनत, समर्पण और मार्गदर्शन के महत्व को उजागर करता है। बालको के निरंतर समर्थन और विविधता के प्रति इसकी अटूट प्रतिबद्धता से इस क्षेत्र में महिलाओं को आगे बढ़ने का मौका मिला है।

बालको ने अपनी महिला कर्मचारियों को सशक्त बनाने तथा अधिक समावेशी कार्यस्थल बनाने के लिए आवश्यक कदम पर ध्यान केंद्रित किया है। महिला कर्मचारियों की उपलब्धियों खनन क्षेत्र में नारी शक्ति की बढ़ती उपस्थिति का प्रमाण हैं, जो भावी पीढ़ियों को आगे बढ़ने और नेतृत्व करने के लिए प्रेरित करती हैं। कंपनी का लक्ष्य 2030 तक महिला कर्मचारियों की संख्या 30 प्रतिशत करना है। साथ ही महिला कर्मचारियों के अनुकूल कार्य वातावरण प्रदान करने के लिए विभिन्न परियोजना संचालित किया है।

पट्टे देने की मांग

कोरबा। छुरीकला नगर पंचायत विवेकानंद वार्ड की पार्षद कांतिदेवी ने काफी लंबे समय से रह रहे लोगों को पट्टे देने की मांग की है। उन्होंने लिखे पत्र में कहा है कि विवेकानंद वार्ड व कोसगई क्षेत्र में काफी लंबे समय से लोग रह रहे हैं। उन्हें नगर पंचायत की ओर से सभी सुविधाएं मिल रही है। अब उनको पट्टे दिए जाने की जरूरत है। इसके लिए लगातार मोहल्ले में जाकर बैठक ली जा रही है। उनका कहना है कि जब सभी सुविधाएं दी जा रही है तो सरकार के द्वारा पट्टा भी दिया जाना जरूरी है। नगर पंचायत को पत्र लिखकर कहा गया है कि पत्र को आगे बढ़ाया जाए।

***कोरबा।** ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक सड़कों को सुधार की जरूरत है। लोगों ने प्रशासन का ध्यान इस तरफ आकर्षित कराया है।

जय श्रीराम
प्लाट व मकान उपलब्ध
गीतावेली रेलवे स्टेशन रोड में 50×60, 25×60 स्क्वायर फिट का प्लाट, अमरैयापारा टीपी नगर कोरबा के किसी भी एरिया में प्लाट मकान उपलब्ध है।
संपर्क करें
प्रापर्टी डीलर
62681-46606

स्वामी कौशल किशोर मिश्र की ओर से प्रकाशक, मुद्रक सुभाष अग्रवाल द्वारा आकाश आफसेट प्रिंटर्स से मुद्रित कर तिलक मार्ग, ट्रांसपोर्ट नगर, कोरबा से प्रकाशित, संपादक सुभाष अग्रवाल फोन: 221149, मो. : 9425224167 आर.एन.आई. पंजी. नं. 50254/89, ई-मेल tarunpresskrb@gmail.com